आगमोद्धारक

नमो नाणस्स नमो नमः

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन

उज्जैन का जैन हिन्दी मासिक

प्रधान सम्पादक

डॉ.सुभाष जैन, उज्जैन

सम्पादकीय कार्यालय

डॉ.सुभाष जैन

46, सखीपुरा, उज्जैन-456001 (म.प्र.)

मोबा. नं. 94250-91012, 8770884897

1-E-mail-Subash_3333@yahoo.co.in

2-E-mail-i.am.Subhashjain@gmail.com

इन्दौर कार्यालय

प्रफुल्लकुमार जैन ''पप्पू''

1073, सुदामानगर, फूटीकोठी रोड़

इन्दौर-452009 (म.प्र.)

5057087, 5057067

मोबा. नं.-98260-10089

सदस्यता

आगमोद्धारक के सदस्य बनने वाले श्रीमानों से निवेदन है कि सदस्य के लिये शुल्क राशि बैंक ड्राफ्ट/चैक/M.O. से श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, उज्जैन के नाम से सम्पादकीय पते पर भिजवाये। अन्य नाम से सदस्यता राशि स्वीकार नहीं की जायेगी। - **डॉ.सुभाष जैन**

क्षमा धर्म का मूल है

धर्मस्य दया मूलं न चाक्षमावान् दयां समादत्ते।
तस्माद्यः क्षान्तिपरः स साधयत्युत्तमं धर्मम्॥

अर्थात्- धर्म का मूल है और क्षमाशील है वही दया का पालन कर सकता है, अतः जो क्षमाशील है वहीं धर्म का श्रेष्ठ साधक है।

दिव्य आर्शीवाददाता

प.पू.मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

मार्गदर्शक एवं प्रेरक

परम पूज्य आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन

अध्यक्ष- भाई श्री प्रफुल्लजी जवेरी, मुंबई (महा.)

शाश्वत संदेश

संति एगेहिं भिक्खुहिं, गारत्था संजमुत्तरा।
गारत्थेहिं य सव्वेहिं, साहवोसंजमुत्तरा॥

यद्यपि शुद्धचारी साधुवृंद सभी गृहस्थों से संयम में श्रेष्ठ होते हैं, तथापि कुछ (प्रमुत्त) भिक्षुओं की अपेक्षा गृहस्थ संयम में श्रेष्ठ होते है। **- उत्तरा. सूत्र, 5.20**

पाथेय

हे प्रभु मेरी प्रार्थना सुनो। आप मुझमें सर्वशक्तिमान बनकर विद्यमान हो। आप मेरी नियति के एक छत्र स्वामी हो, मेरे जीवन के पथ प्रदर्शक हो। आप समस्त बाधाओं के विजेता हो, एवं मानसिक पूर्वग्रिहों एवं प्राथमिकताओं के ध्वंस कर्त्ता हो। इस बाहर के जगत में सर्व समर्थ सिद्ध होने के लिए संभवतः तुम्हें आवश्यकता है, मेरे मन रुपी इस यंत्र की जो समस्त कार्यो एवं उनकी पद्धतियों को संगठित करने एवं उन्हें यथार्थ स्वरुप देने वाला एक माध्यम है। जिसे तुम्हें बनाना होगा अपने अनुरुप एक कुशल एवं निपुण यंत्र। फिर कार्य सिद्धि में नहीं रह जाएगी और शंका कोई त्रुटि और फिर सभी दुर्भावनाएं एवं अशुभ छायाएं जो लाती है विरोधी सुझाव धरा जीवन के धरातल से धकेल दी जाएगी बहुत दूर। प्रभु तुम्हारी महान करुणा में मेरा विश्वास अचल है।

शुल्क सोपान

स्तम्भ	11,511/- रुपये
आजीवन	1000/- रुपये
पांच वर्षीय सदस्य	301/- रुपये
एक वर्षीय सदस्य	80/- रुपये
एक प्रति	10/- रुपये

नोट- आगमोद्धारक में प्रकाशित रचनाओं से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वर्ष-29 भादवा-आसोज सितंबर 2024 अंक-9

विषय सूची

1- शाश्वत संदेश, पाथेय 3

2- विषय सूची 4

3- आत्म कल्याणकारी महापर्व पर्युषण -(संपादकीय)-डॉ.सुभाष जैन 5

4- क्या आप जानते है ?, संगठित जनमानस को जीतना संभव नहीं 6

5- भरहेसर सज्झाय, प्रतिक्रमण के आठ पर्याय ? 7-8

6- युवतियां कैसे करें पर्युषण पर्व की तैयारी ?- रुचि अनंकांत जैन, यह है हमारे आणगार साध्वी श्री कैवल्यरसा श्रीजी म.सा. 9-10

7- सौभाग्य का सूर्योदय नवकारसी- डॉ. दिलीप धींग, ... और भूत पकड़ा गया ! 11-12

8- पर्युषण महापर्व- सुधीर पटवा, एडवोकेट 13

9- ऐसा क्षमा व्रत अब धार लो...!, पर्युषणा महापर्व पांच कार्यो से आराधना 14

10-पर्व पर्युषण क्षमापना पर्व- जैन राजू राठौड़ 15

11-पर्युषण अष्टान्हिका पर्व : आराधक के लिये ग्यारह कर्त्तव्य-पं.श्री गुणसुंदरविजयजी गणी 16

12-पर्युषण पर्व का महत्व.... पं.श्री गुणसुंदरविजयजी गणी 17-19

13-जीवन में हर दिन क्षमा व पर्युषण पर्व रहे, गुण प्राप्त करने के लिये इतना करो 20

14-अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी काल, आकाशगामी विद्या से पुष्प लाकर पर्युषण महोत्सव किया- शांतिलाल सगरावत, ईमानदारी का पालन 21-22

15-क्षमा और पश्चाताप- सुनील काला 23

16-आध्यात्मिक पर्युषण पर्व एवं क्षमापना-श्रीमती प्रभा जैन 24

17-जीवदया फण्ड (विज्ञापन) 25

18-वर्ग पहेली- 352 - जयंतीलाल जैन,रतलाम 26

19-ज्ञान गंगोत्री- 352-आ.प्रवर श्री मृदुरत्नसागरसूरीजी म.सा.नीति-उपार्जित धान्य 27

20-शासन-समाचार 28-41

21-हमारे तीज त्यौहार,सादर आमंत्रण,सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है 42

संपादकीय

आत्म कल्याणकारी महापर्व पर्युषण

भारतीय *सांस्कृतिक इतिहास में चार्तुमास की परम्परा लगभग उन सभी धर्मों में विद्यमान है जो जिनवाणी श्रेणी में सनातन की परम्परा में आते है, जीवन को उत्कर्ष पर ले जाने में वर्षायोग का विशेष महत्व है, धार्मिक आस्था के चार माह के मेले में अनेक पर्व और तिथियां ऐसी भी आती है जो जीवन में धार्मिकता के साथ आनंद का रस घोलती है । धर्म के साथ पर्व का आनंद लेने के साथ आत्मोत्थान का लक्ष्य रखना हमारी सांस्कृतिक परम्परा है । धर्म के साथ पर्व मनाने की परम्परा भारत में ही है। चातुमार्सिक आराधना के मध्य में आनेवाले महापर्व पर्युषण के आठ दिन वर्षभर के 365 दिन जैनों के लिये सबसे महत्वपूर्ण है, क्योंकि वह लौकिक नहीं अलौकिक पर्व है। जीवन में परिवर्तन कर उसे एक नई दिशा और दशा होने का काम महापर्व करते हैं, क्योंकि यह आध्यात्मिक पर्व है, पर्व के आठ दिनों में प्रेमपूर्वक व्यवहार क्षमा और मैत्री का ही संदेश दिया जाता है और जीवन को तप, जप, प्रवचन के माध्यम से आचरण और व्यवहार के द्वारा बदलाव लाने का काम पर्व में होता है।*

महापर्व पूर्ण रुप से आध्यात्मिक पर्व है। सामाजिकता सें इसका कोई सरोकार नहीं है। इस पर्व पर हम आत्मा पर पड़ी हुई मैली चादर को खेंचते है और यह देखने का प्रयास करते हैं कि हमारा मन कैसा है ? पर यह हो नहीं पाता है, यह मूल प्रश्न है कि यह कैसे हो सामाजिक क्रांति और आधुनिकता से जगत में बहुत परिवर्तन हुए है किन्तु आत्म कांति में हम बहुत पिछड़ गये है, हम बबुल हो गये है। बबूल के पैदा होते ही उसमें कांटे उत्पन्न हो जाते है जो बिना देरी किये चुभने को परिपक्व हो जाते हैं, हमें बनना था आम्र पुरुष और हम बन गये बबूल और नागफनी के बैर। आज जिसे स्पर्श करो वह चुभने लगता है, हम दूसरों को चुभते है, दूसरे हमें पीड़ा पहुंचाते है, विडंबना यह है कि मन में कलुष्य, ईर्ष्या, बैर पैदा होने में देर नहीं लगती है लेकिन भ्रातत्व, प्रेम, सौहार्ध, मुश्किल से ही जन्म लेते हैं। मानवीय रिश्तों में पारस्पारिक सद्‌भाव, स्नेह, करुणा मैत्री के बजाय दूसरे को पराभूत कर उसका शोषण करने की प्रवृत्ति ने मानवीयता को खत्म कर डालने का जैसे गहरा षड़्यंत्र रच दिया है। आत्मीय विकृतियों को कैसे दूर करना, यह विचार महापर्व पर्युषण देते हैं। अंहकार और ममकार के विसर्जन का काम महापर्व पर्युषण करते हैं।

मनुष्य जन्म को हीरा माना गया है, हीरे में विकृति आ जाती है तो उसकी कीमत कोयले के बराबर हो जाती है। हमारा जीवन पथ गलत नहीं हो जाये अंह और स्वार्थ के लालच में इसकी कीर्ति में दाग नहीं लग जाये, भौतिक सुख समृद्धि में हम हीरे जैसे जीवन को बर्बाद नहीं कर दे इसके लिये सावधानी का संकेत देने के लिये महापर्व आते है। मार्ग से विमुक्त हुए मानव के बचाव का मार्ग महापर्व है। हमारी दृष्टि का दोष ही जीवन में सुख-दुःख का निर्माण करता है। महिला और पुरुषों में दो बातें विशेष रुप से होती है, महिलाएं जिद पर अड़ जाती है तो पुरुष क्रोध में बना बनाया काम बिगाड़ देते हैं, अगर इसमें संयम, समझदारी और क्रोध के संयम सहन शक्ति का सामंजस्य हो तो हम वातावरण को खुशनुमा बना सकते हैं। जीवन में पैदा होनेवाले दाग, द्वेष पर अगर हमारी निगाहें रहेगी तो कार्य को रोका जा सकता है, इसके लिये पर्व में क्षमापना के महत्व को प्रतिपादित किया गया है। महापर्व का अर्थ है आत्म निरीक्षण, आत्मा लोचना महापर्व एक दर्पण है जिसमें हम हमारा प्रतिबिम्ब देख सकते हैं और समझ सकते हैं कि मैं क्या हूं और मुझे क्या होना चाहिये ? महापर्व हमें यह मौका देते हैं कि मैं महावीर के प्रतिकूल तो नहीं जी रहा हूं ?

तोप, तलवार और ताकत से पराजित हुआ इंसान एक दिन पुनः अपनी शक्ति समेट का सामना करने के लिये खड़ा हो सकता है किंतु अहिंसक, अमन, अभय और क्षमा से जीत गया इंसान हमेशा के लिये मैत्री और प्रेम के बंधन में बंधकर हमेशा के लिये सबके लिये आत्मीय हो जाता है। मनसा, काया, कर्मण प्रतिपालन करने का श्री वीर प्रभु का यही अहिंसा सिद्धांत है। सोचिए महापर्व पर्युषण हमारे लिये कितने महत्वपूर्ण है। महापर्व पर्युषण की आराधना का आधार परमात्मा श्री महावीर के वे धर्म सिद्धांत है जिसमें अन्य जीवों के प्रति करुणा, वात्सल्य, मैत्री और क्षमा का भाव प्रमुखता से विदित है। इन धर्म सिद्धांतों का प्रभाव अक्षुण्य और शाश्वत है, क्योंकि सभी जीवों में एक ही आत्मा का निवास रहता है। कोई छोटा-बड़ा नहीं होता है, प्रभु की सब बातों को हम सत्य मानते हैं पर इन को अमल में लाने को और उस पर चलने पर हम से कहां चूक हो जाती है ? यही बात प्रतिवर्ष महापर्व आकर हमें बतलाते है प्रभुवीर चाहते थे कि हम सब में परिवर्तन आये और हम भी महावीर बन सके।

जीवन की मूल प्रेरणा है, परमार्थ और लोक कल्याण के लिये भावभरा आत्म समर्पण। ठीक इसी बात को ध्यान में रखकर आगमोद्धारक का प्रकाशन आपके लिये किया जा रहा है, अनेक कांटों की चुभन के बाद भी हम सतत सक्रिय है, हाँ ! मन में यह न आये कि इस पाठक का काम मैं नहीं करुं या छोड़े फोन तो आते ही रहते है, इन सब बातों बचते हुए हम अपने कर्त्तव्य पथ पर चलने का पूर्ण प्रयास करते है, यह पुण्य पुरुषार्थ हम आगे भी लगातार करते रहेंगे फिर भी कुछ कमियां, खामियां रह जाने का मलाल रहता है। कृपया महापर्व के पावन प्रसंग पर हमें क्षमा प्रदान करें इस पुण्य परम्परा के निर्वाह में हम सतत लगे रहेंगे ताकि आगमोद्धारक आप सबके जीवन की श्रीवृद्धि में अपना कर्त्तव्य निभाती रहे। यही शुभेच्छा !

-डॉ. सुभाष जैन

क्या आप जानते है ?

✻ ओसवाल वंश संस्थापक आ.रत्नप्रभ सूरीश्वरजी म.सा. ने विद्याबल से दो रुप बनाकर ओसियां और कौरटा दोनों नगर में महावीर प्रभु के मंदिरों की एक ही मुर्हूत में प्रतिष्ठा करवाई थी। इस घटना को 2350 वर्ष हुए हैं।

✻ 2200 वर्ष पूर्व, राजा सम्प्रति ने सवा लाख जैन मंदिर व भगवान की सवा करोड़ मूर्तियां बनवाई थी।

✻ भडोंच में समली विहार नामक मुनिसुव्रत भगवान का भव्य जैन मंदिर लंका की राजकुमारी सुदर्शना ने बनवाया था जिसे आज 11 लाख वर्ष हुए हैं।

✻ बारह करोड़ तिरेपन लाख की लागत से वस्तुपाल-तेजपाल ने आबू पर एक अद्‌भूत जैन मंदिर बनवाया है।

✻ राणकपुर का विश्व विख्यात जैन मंदिर 99 करोड़ की लागत से बना है।

✻ आबू (देलवाड़ा) पर 18 करोड़की लागत से विश्व विख्यात जैन मंदिर बनवाने वाले विमल मंत्री ने 2 हजार जिन प्रतिमाएं भी बनवाई थी इसे 1046 वर्ष हुए हैं।

✻ आबू (देलवाड़ा) पर 12 करोड़ तिरेपन लाख की लागत से नेमिनाथ भगवान मंदिर बनवाने वाले वस्तुपाल तेजपाल ने 5 हजार जैन मंदिर व 11 हजार जिनेश्वर भगवान की मूर्तियां बनवाई थी इसे 844 वर्ष हुए हैं।

✻ राजा कुमारपाल ने तारंगा (जिला-महेसाणा) में अजितनाथ भगवान व भव्य मंदिर व 7 हजार जिन प्रतिमाएं बनवाई थी इसे 850 वर्ष हुए हैं।

✻ देलवाड़ा (जिला-उदयपुर) के जैन मंदिर 800 वर्ष पहले बने थे।

✻ गुजरात में श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ की मूर्ति असंख्य वर्ष पुरानी है।

✻ पालीताना के सैकड़ों जैन मंदिर व गिरनार, सम्मेत शिखर, पावापुरी आदि तीर्थ जैन धर्म में मूर्तिपूजा की मान्यता व प्राचीनता के बोलते इतिहास हैं।

✻ केशरियाजी (धुलेवा) की मूर्ति 11 लाख वर्ष पुरानी है।

✻ दीयाणाजी व ब्राह्मणवाडजी (जिला-सिरोही) तीर्थ में विराजमान श्रीमहावीर भगवान की मूर्ति को श्रीमहावीर स्वामी के बड़े भाई नंदिवर्धन राजा ने बनवाई थी। इसे आज 2550 वर्ष हुए हैं।

✻ अष्टापद पर्वत पर एक विशाल जैन मंदिर श्री आदि नाथजी के पुत्र भरत चक्रवर्ती ने बनवाया था उसे असंख्य वर्ष हुए हैं।

✻ राजनगर के पास सुन्दर पहाड़ी पर करोड़ों की लागत से दयालशाह ने नौ मंजिला चौमुख ऋषभदेवजी का मंदिर बनवाया था।

✻ चित्तौड़ (मेवाड़) निवासी करमाशाह दोशी ने पालीताना के जैन मंदिरों का जीर्णोद्धार करवाया था। इसे 500 वर्ष हुए हैं।

✻ जैन धर्म में मंदिर-मूर्ति की मान्यता-पूजा सदियों से रही है।

✻ अष्टापद तीर्थ पर ऋषभदेवजी के पुत्र भरत चक्रवर्ती ने 24 तीर्थंकरों का मंदिर बनाया है। वहां जिन प्रतिमा के आगे रावण ने वीणा बजाकर भक्ति करके तीर्थंकर गोत्र बांधा है।

- धर्म मित्र

संगठित जनमानस को जीतना संभव नहीं

दैत्यराज बलि के सेनापतियों ने स्वर्ग पर आक्रमण करके विश्वकर्मा को पकड़ बुलाया और इंद्रपुरी के स्तर का राज्य भवन बनाकर खड़ा करने का आदेश दिया।

सामान जुटता गया और विश्वकर्मा का प्रयास चलता रहा। कुछ समय में ही दैत्यपुरी तैयार हो गई। अब बलि ने विश्व-विजय की तैयारी की और सेनापतियों को विश्व-विजय के लिए साज-सामान समेत भेजा।

सफलता कुछ ही दिन मिली। फिर आगे बढ़ सकना दैत्य सेना के लिए कठिन हो गया। कारण यह था कि अब सीमित सैनिकों से लड़ना नहीं हो पा रहा था। असीम जनता आक्रमणकारियों से जूझने के लिये कटिबद्ध हो गई थी बलि ने इरादा छोड़ दिया और सेनाएँ यह कहकर वापस बुला ली कि सैनिकों को जीता जा सकता है, किंतु जनचेतना को, संगठित जनमानस को परास्त कर सकना संभव नहीं।

गतांक से आगे:-

5- श्रीयक:- ये शकडाल मंत्री के पुत्र और स्थूलभद्र के छोटे भाई थे। पिताश्री की मृत्यु के अनन्तर नन्दराजा का मंत्रीपद इनको प्राप्त हुआ था। धर्म पर अतीव अनुराग होने से लगभग सौ जिनमंदिर और करीब तीन सौ धर्मशालाएं वनवायी थी तथा अन्य भी धर्म के अनेक कार्य किये थे। अन्त में इन्होंने दीक्षा ग्रहण की और पर्युषण-पर्व में उपवास का आराधन करते हुए कालधर्म को प्राप्त हुए।

6- अर्णिका-पुत्र आचार्य:- उत्तर मथुरा में देवदत्त नामक एक वैश्य रहता था। वह धन कमाने के लिये दक्षिण-मथुरा में आया और वहां अर्णिका ने मार्ग में पुत्र को जन्म दिया और उसका नाम संधीरण रखा, परन्तु जनता में वे अर्णिका पुत्र के नाम से प्रसिद्ध हुए। योग्य आयु में जयसिंह आचार्य से दीक्षा ग्रहण कर क्रमानुसार वे आचार्य हुए। कुछ समय पश्चात पुष्पचूल राजा की रानी-पुष्पचूलाने इनसे प्रतिबोध प्राप्त कर दीक्षा ली। एक समय दुष्काल पड़ने से अन्य मुनिगण तो देशान्तर चले गये, किन्तु अर्णिका-पुत्र आचार्य वृद्ध होने के कारण पुष्पचूल राजा के आग्रह से वहीं रहे। पुष्पचूला उनका वैयावच्च करती थी, ऐसा करते-करते उसको केवलज्ञान हुआ। इस बात का आचार्यश्री को समाचार मिला, तब उन्होंने केवली पुष्पचूला से क्षमा मांगी और अपना मोक्ष कब होगा, यह प्रश्न पूछा ? इसका उत्तर मिला कि- गंगा नदी पार उतरते समय तुम्हारा मोक्ष होगा, यह प्रश्न पूछा ? इसका उत्तर मिला कि- ''गंगा नदी पार उतरते समय तुम्हारा मोक्ष होगा।'' थोड़े समय के बाद जब वे अन्य मनुष्यों के साथ नौका में बैठकर गंगा नदी पार करते थे तब जिस ओर आचार्य थे, उसी ओर से नौका भारी होने लगी। इससे लोगों ने उठाकर नदी में फैंक दिया, परन्तु समभाव में स्थिर रहने से उसी समय उनको केवलज्ञान प्राप्त हुआ। इन आचार्य का शरीर तिरता हुआ नदी के किनारे आ गया। उस स्थान पर कुछ समय से अनन्तर पाटल नामक पौधा लग गया कि जहां कालान्तर में पाटलीपुत्र नाम का सुन्दर शहर बसा।

7- अतिमुक्त मुनि:- पेढालपुर नगर में विजय नाम का राजा राज्य करता था। उसकी श्रीमती नाम की रानी थी। उसको एक पुत्र हुआ। उसका नाम अतिमुक्त रखा। इस कुमार ने आठ वर्ष की अवस्था में माता-पिता की अनुमति लेकर श्री गौतमस्वामी से दीक्षा ली थी। ये एक समय प्रातःकाल में कुछ समय से पूर्व गोचरी करने के लिये निकले और एक सेठ के यहां गये, तब सेठ की पुत्र वधु ने कहा कि- ''अभी कैसे ? क्या विलम्ब हो गया क्या ?'' शब्द द्वल थे। गोचरी और दीक्षा दोनों को लागू पड़ते थे। मुनि उनका मर्म समझकर बोले कि- ''मैं जानता हूं, वह नहीं जानता।'' यह सुनकर चतुर पुत्रवधु विचार में पड़ गयी। अन्त में मुनि ने उसका मर्म समझाया कि मरण निश्चित है, यह बात मैं जानता हूं, किन्तु कब होगा, यह मैं नहीं जानता। एक समय वर्षा होने के पश्चात अन्य बालकों के साथ ये बालमुनि भी पत्तों की नाव बनाकर पानी में तिराने लगे। उस समय श्री गौतमस्वामी उधर से निकले, उन्हें उनके मुनिधर्म का ध्यान आया और सहसा ये लज्जित हो गये। फिर श्री महावीर प्रभु के पास जाकर ''ईरियावहिया आलोचन करते हुए ''दगमट्टी-दगमट्टी'' ऐसा शब्दोच्चार करने लगे तब पृथ्वीकाय तथा अप्काय के जीवों से क्षमा मांगते हुए पाप का अत्यन्त पश्चाताप होने से भावना की परम विशुद्धि हुई और केवलज्ञानी हुए।

8- नागदत्त (1):- वाराणसी नगरी में यज्ञदत्त नाम का एक सेठ रहता था, उसकी धनश्री नाम की स्त्री थी। उसको एक पुत्र हुआ, जिसका नाम नागदत्त रखा गया। उसका विवाह नागवसु नाम की कन्या के साथ हुआ। एक समय नगर का राजा अपना घोड़ा दौड़ाता हुआ जा रहा था, तब उसके कान में एक कुण्डल नीचे गिर गया। उसी मार्ग से होकर नागदत्त निकला, परन्तु उसको दूसरे की वस्तु नहीं लेने की प्रतिज्ञा थी, इससे वह कुण्डल पर दृष्टि डाले बिना चला गया और उपाश्रय में जाकर कार्योत्सर्ग में स्थिर रहा। इसी समय नगर का कोटवाल (कोतवाल) जो इसकी पत्नी को चाहता था, वह वहां से निकला और उसने वह कुण्डल नागदत्त के पास जाकर रख दिया।

राजा ने देखा तो कुण्डल मिला नहीं। फिर कोतवाल ने ढूंढने का बहाना करके कहा कि ''महाराज ! आपका कुण्डल नागदत्त के पास से मिल गया है।'' इसलिये उसको शूली पर चढ़ाया गया है। किन्तु सत्य के प्रभाव से शूलीका सिंहासन हो

गया और शासनदेवी प्रकट होकर कहा कि- ''यह नागदत्त उत्तम पुरुष है, यह प्राण जाने पर भी दूसरे की वस्तु का स्पर्श नहीं कर सकता। पहले धनदत्त सेठ ने इसकी एक सौ सोने की मोहरें रख ली थी और अभी कोतवाल ने इस पर झूठा आरोप किया है।'' यह सुनकर राजा ने उन दोनों को दण्ड दिया।

अन्त में नागदत्त ने दीक्षा अंगीकृत की और सर्व कर्मो का क्षय करके केवलज्ञान प्राप्त किया तथा मोक्षलक्ष्मी का स्वामी हुआ।

नागदत्त (2):- लक्ष्मीपुर नगर में दत्त नाम का एक सेठ था। उसकी स्त्री का नाम देवदत्ता था। उसको एक पुत्र हुआ जिसका नाम नागदत्त रखा। यह नाग की क्रीड़ा में अत्यन्त निपुण था। एक समय उसको प्रतिबोध कराने के लिये उसका देवमित्र गाउड़ी का रुप लेकर उसके निकट आया और वे परस्पर एक दूसरे के सर्पो को खिलाने लगे। तब गाउड़ी को तो कुछ भी नहीं हुआ, परन्तु नागदत्त गाउड़ी के सर्पो के दंश से मूर्च्छित हो गया तब गाउड़िक ने उसको जिलाया और अपना पूर्वभव सुनाया कि हम दोनों पूर्व भव में मित्र देव थे। इससे नागदेवता को जाति-स्मरण हुआ और उसने दीक्षा ग्रहण की। तदनन्तर क्रोध-मान-माया-लोभरुपी अंतरंग शत्रुओं को वश में करके मुक्ति को प्राप्त हुए।

9- मेतार्यमुनि:- ये चाण्डाल के वहां उत्पन्न हुए थे, किन्तु इनका लालन-पालन राजगृही के एक श्रीमन्त के घर हुआ था। पूर्वजन्म के मित्रदेव की सहायता से अद्भूत कार्य सिद्ध करने से महाराजा श्रेणिक के जामाता बने थे। बारह वर्ष तक गृहस्थ जीवन व्यतीत कर अट्ठाईस वर्ष की आयु में दीक्षा ग्रहण की। एक समय किसी सुनार के यहां ये गोचरी लेने को गये वह सुनार सोने के अलंकार-जव बना रहा था, उन्हें छोड़कर घर के अंदर आहार लेने गया। इतने में क्रोंच पक्षी आकर वे जव चुग गया। सोनी बाहर आया और जव न देखकर मुनि के प्रति शंकित हो पूछने लगा कि-''महाराज! सुवर्ण के जव कहां गये?'' महात्मा मेतार्य मुनि ने सोचा कि ''यदि मैं पक्षी का नाम लूंगा तो यह सुनार उसको अवश्य मार डालेगा।'' इसलिये मौन रहे। उन्हें मौन देखकर सुनार की शंका पक्की हो गई और उनको स्वीकृत कराने के विचार से मस्तक पर गीले चमड़े की पट्टी खूभ कसकर बांधी तथा धूप में खड़े रखे। उस पट्टी के संकुचित होने से तथा मस्तक पर रक्त का दबाव बढ़जाने से असाह्य पीड़ा होने लगी, परन्तु उसको कर्म-क्षय का उत्तम मार्ग मानकर वे कुछ भी नहीं बोले। अन्त में उनके दोनों नेत्र बाहर निकल पड़े। इस असाह्य-वेदनाओं को समभाव से सहन करने के कारण उन्हें केवलज्ञान उत्पन्न हुआ।

10-**स्थूलभद्र:-** ये नन्दराजा के मंत्री शकडाल के ज्येष्ठ पुत्र थे और यौवनावस्था में कोशा नाम की गणिका के मोह में फंस गये थे। कालान्तर में वैराग्य प्राप्त कर आचार्य सम्भूति विजय से दीक्षा ग्रहण की। श्री भद्रबाहुस्वामी से इन्होंने दशपूर्व का ज्ञान प्राप्त किया था। एक समय इनकी चिर-परिचिता कोशा वेश्या के यहां गुरु की आज्ञा से चार्तुमास किया और सब प्रकार के प्रलोभनों का सामना करके अपने संयम-नियमों में संपूर्ण सफलता प्राप्त करने के साथ ही इन्होंने कोशा को भी संयम में स्थिर रखा। गुरु ने इनके कार्य को ''दुष्कर, दुष्कर-दुष्कर'' कहा था।

11-वज्रस्वामी:- तुम्बवन में इनका जन्म हुआ था। पिता का नाम धनगिरि और माता का नाम सुनन्दा था। इनके जन्म लेने से पूर्व ही पिता धनगिरि ने दीक्षा ग्रहण की। एक बार वे भिक्षा के लिये अपने पहलेवाले घर पर आये, तब बालक के बहुत रोने से परेशान होकर माता ने वह बालक मुनि (पिता) को बोहरा दिया। बालक का नाम गुरु ने वज्र रखा। कुछ वर्षो के अनन्तर माता ने बालक को वापस लेने के हेतु राजद्वार में आवेदन किया किन्तु राजा ने बालक की इच्छानुसार न्याय दिया और वज्रस्वामी साधुओं के समुदाय में विद्यमान रहे। बाल्यवय में ही उन्होंने पठन-पाठन करती हुई आर्याओं के मुख से श्रवण कर पदानुसारी लब्धि से ग्यारह अंग याद कर लिये थे। उन्होंने अपने संयम से प्रसन्न बने हुए मित्र देवों से आकाशगामिनी विद्या और वैक्रियलब्धि प्राप्ति की थी।

इनके समय में बारह वर्षी भंयकर दुष्काल पड़ा, जिसमें इनके पांच सौ शिष्य गोचरी नहीं मिलने के कारण अनशन कर कालधर्म को प्राप्त हुए थे। ये आर्यसिंहगिरि के शिष्य और प्रभु महावीर के तेरहवें पट्टधर थे। दसवें पूर्वधर के रुप में ये अंतिम माने जाते हैं। शासन-सेवा के अनेक कार्य कर अनशनपूर्वक कालधर्म को प्राप्त हुए। **(आगे और भी है...!)**

प्रतिक्रमण के आठ पर्याय?

1- प्रतिक्रमण, 2- प्रतिचरणा, 3- प्रतिहरणा, 4- वारणा, 5- निवृत्ति, 6- निंद्रा, 7- गर्हा, 8- शुद्धि।

युवतियां कैसे करें पर्युषण पर्व की तैयारी ?

※ रुचि अनेकांत जैन, नईदिल्ली

जैन परम्परा में पर्युषण पर्व आत्म विशुद्धि योग के सबसे बड़ा साधन है। पहले और आज की पर्युषण पर्व की आराधना, साधन और साधना में बहुत अंतर आ गया है। पहले संयुक्त परिवारों में बड़े बुजुर्गों के सानिध्य में पर्युषण के दिन कब आते थे और धर्माराधना करते हुए कब दिन निकल जाते थे पता ही नहीं चलता था। परन्तु आज इस कंप्यूटर युग में जहां काम आदि ने सभी को इतना उलझा रखा है कि बड़े शहरों में एकल परिवारों की युवतियां पर्युषण के दिनों में धर्म लाभ तो लेना चाहती है, परन्तु छोटी-बड़ी समस्याएं उनके सामने अक्सर उपस्थित रहती है जिनके कारण कभी-कभी जैन युवती चाहकर भी धर्म साधना नहीं कर पाती है। इन्हीं सब परिस्थितियों में सामंजस्य बिठाते हुए किस प्रकार पर्युषण के दिनों में धर्माराधना की जा सकती है, आइये कुछ प्रमुख बिन्दुओं पर विचार करते हैं-

अपने घर के समीप के उस धार्मिक स्थल या जिन मंदिर का चुनाव करें, जिनमें आप आसानी से अपने बच्चों के साथ जाकर पूजा, प्रवचन व सांस्कृतिक प्रोग्रामों का लाभ ले सकती है। यदि दूरी हो तो वाहन स्वयं न चलाकर ओला, ऊबर आदि कैब नियमित बुक करके धर्म साधना के स्थान पर जरुर जाएं।

बच्चों को स्कूल जाने से पहले रोज मंदिरजी में में देव दर्शन के लिये अवश्य जाएं। जिस दिन छुट्टी हो उस दिन धर्मस्थल के सभी कार्यक्रमों में ले जाएं।

धर्मस्थलों में गरिमा पूर्ण, सादगी युक्त वस्त्र पहन कर खुद भी जाएं और बच्चों को भी ले जाएं। कौशिश करें कि साड़ी अवश्य पहनें, यदि सूट पहने तो सादगी वाला। सर पर पल्लु अथवा चुन्नी अवश्य रखें। कम से कम पर्युषण पर्व में धर्म स्थानों में जींस और टी-शर्ट, शोर्ट ड्रेस से अवश्य बचें। हमारे वस्त्रों में गरिमा अवश्य दिखनी चाहिये।

यदि साधु साध्वीजी विराजमान हो तो उनके दर्शन अवश्य करें और इस बात की मर्यादा रखें कि चाहे कितना भी जरुरी काम हो साधु भगवंतों के पास अकेले न बैठे, साथ में किसी को अवश्य रखें। रात्रि में उनके ठहरने के स्थान पर कतई न जाएं, अपनी सीमा में रहें। किसी भी कक्षा, कार्यक्रम में साधु महाराज आदि से पर्याप्त दूरी बनाकर विनय पूर्वक रहें, जुलूस आदि में भी एकदम सट कर न चलें।

बच्चों के टिफिन बॉक्स में जमीकंद व बाजार से निर्मित कोई भी भोज्य पदार्थ न दें, साथ ही घर में कुछ शुद्ध मीठे और नमकीन अवश्य बनाकर रखें। सूखे मेवे बाजार से लाकर शोधकर पूर्व से ही रखें। बच्चों को कैंटीन से लेकर खाने को पैसे बिलकुल न दें।

स्कूल से आने के बाद बच्चों का होमवर्क समय पर करवाकर उन्हें शाम को ही भोजन करवायें। यदि आपके पति ऑफिस, फैक्ट्री या दुकान से रात्रि में लौटते हैं तो उन्हें शाम का सात्विक भोजन टिफिन में पहले से सुबह ही दे दें। जिससे वे इन दिनों में रात्रि भोजन से बच सकें।

इन दिनों बरसात का मौसम होने से अनेक प्रकार के जीव-जंतु उत्पन्न हो जाते हैं अतः अपने घर तथा रसोई की इतनी साफ-सफाई पूर्व से ही रखें ताकि जीव उत्पन्न न हो सकें।

प्रयास करें कि रसोई में सूर्य की रोशनी अवश्य आये तथा सभी कार्य सूर्योदय से सूर्यास्त के बीच सम्पन्न हो जायें।

अपने बच्चों में दान की प्रवृत्ति विकसित करने के लिये उनके माध्यम से प्रतिदिन 1-2 रुपये मंदिरजी की गुल्लक में अवश्य डालें। साथ ही पर्व के दिनों में घर से अपनी द्रव्य मंदिरजी ले जायें।

रात्रि में होने वाले प्रवचन व सांस्कृतिक प्रोग्रामों में बच्चों व पति के साथ अवश्य जाएं तथा खूब उत्साहपूर्वक भागलें। घर आकर धर्म का महत्व अपने पति व बच्चों को अवश्य बताएं। कोई एक ग्रंथ लेकर उसका स्वाध्याय जरुर करें और सभी को विनम्रता पूर्वक सुनने को कहें।

युवतियां स्वयं भी प्रश्न मंच आदि प्रतियोगिताओं तथा छोटी-छोटी नाटिकाओं में भाग लें और पति भी एवं बच्चों को प्रेरित करें।

पर्व के दिनों में दिन में रोज मंदिरजी जाएं। अपनी कार में ऑडियों लगाकर ऑफिस जाते समय भी प्रवचन सुन सकते हैं। मैट्रो ट्रेन, बस या लोकल ट्रेन से जाना हो तो इयर फोन

लगाकर मोबाईल पर अच्छी ज्ञानवर्धक बातें सीखी जा सकती है तथा पाठ सुने जा सकते हैं।

तत्वार्थ सूत्र का एक बार पाठ करने या सुनने से एक उपवास का फल मिलता है अतः चाहे साक्षात या मोबाईल आदि पर एकाग्रतापूर्वक दिन में एकबार यह पाठ अवश्य सुनें तथा जिनवाणी लेकर पाठ करें।

आजकल मंदिरों, स्थानकों तथा स्वाध्याय भवनों में बहुत ही रौचक शैली में आधुनिक तरीकों से जैन दर्शन के सिद्धांतों को समझाया जाता है अतः किसी भी उपाय से बच्चों तथा घर के अन्य सदस्यों को प्रवचन सुनाने अवश्य ले जाएं। इससे सबसे बड़ा फायदा यह होता है कि जो बात आप घर पर हजारों बार में नहीं समझा सकते है वह बात वहां के माहौल, प्रभाव और आकर्षक शैली से एक बार में ही दिमाग में बैठ जाती है।

अपने घर पर भी शाम के समय सभी लोग एक साथ भजन, स्तुति, आरती या स्तोत्र अवश्य पढ़ें तथा बच्चों को सिखाएं।

प्रतिदिन सामायिक तथा प्रतिक्रमण करके शयन करें तथा शयन से पूर्व अगले दिन के धर्म का स्वरुप पढ़लें और अगले दिन सुबह से उस धर्म पर चिंतन करते हुए जीवन में उतारने का प्रयास करें।

वर्षभर में पर्युषण पर्व ही एक ऐसा अवसर होता है जब हम खुद को रीचार्ज कर सकते हैं नहीं तो वर्षभर हम उसी मतलबी दुनिया में जीते हैं जिसमें हमें खुद के आत्मकल्याण आत्मविशुद्धि का अवसर लगभग ना के बराबर मिलता है। घर पर धर्म महिलाओं से ही चलता है। हमारे बच्चे भले ही अभी उतना अभ्यास न कर पायें, लेकिन हमें देख कर सीखते जरुर है। आज बच्चे आपके हाथ में है, थोड़ा बड़े होने के बाद वे होस्टल आदि में भी चले जाते है या हमारे पहुंच के बाहर हो जाते है अतः अभी समय रहते यदि आपने उनमें अध्यात्म के बीज बो दिए तो बाद में उसकी फसल भी लहलहाती है। वे जब आत्मनिर्भर हो जाते हैं तब उन्हें जीवन में संतुलन के लिये अध्यात्म निर्भर भी होना होता है, यदि बचपन के संस्कार रहते हैं तो वे विपरीत परिस्थितियों में भी अपना संतुलन नहीं खोते। एक नारी घर की धुरी होती है वह चाहे तो सभी को धर्म कार्य में प्रेरित करके सभी का भला भी कर सकती है और धर्म अध्यात्म के प्रति उपेक्षा करके घर के सदस्यों को अधोगति में भी धकेल सकती है। खुद धर्म करने से तो पुण्य होता ही है अन्य को धर्म ध्यान में लगाने से भी अतिशय पुण्य होता है।

हम युवतियां इन पर्युषण के दिनों में जितने सहज और सरल रहेंगे, धर्म के प्रति हमारा रुझान जैसा रहेगा पूरा परिवार भी वैसा ही अनुकरण करेगा। जिस प्रकार एक अच्छी और पक्की नींव पूरे घर की आधारशिला होती है उसी प्रकार हमारे धार्मिक संस्कार भी हम पर ही टिके हुए है, आगे की पीढ़ियों में इसे जागरुक बनाये रखने का उत्तरदायित्व भी हम युवतियों पर ही है, ऐसे में हमें चाहिये कि पर्युषण पर्व श्रद्धापूर्वक धूमधाम से व्रतों नियमों का पालन करते हुए इस प्रकार मनाए जिससे हमारे पारिवारिक सुख और शांति में वृद्धि हो और सभी आत्म आराधना के इस शाश्वत मार्ग पर चलकर स्व-पर कल्याण कर सकें।

यह है हमारे आणगार
साध्वी श्री
कैवल्यरसा श्रीजी म.सा.

27 अट्ठम करके सिद्धाचल गिरिराज की 378 यात्रा ऐसी गिरिराज की 2000 यात्रा करने वाले साध्वीजी भगवंत कैवल्यरसा श्रीजी म.सा. की अनुमोदना...50 साल की उम्र में एक ऐसा अद्भूत तप जिनकी महैमा की क्या बात करें.... भक्तिसूरि म.सा.के संप्रदाय के साध्वीजी सुरेन्द्र श्रीजी म.सा. की शिष्या कैवल्यरसा श्रीजी ने पिछले दो साल में 27 अट्ठम तप में पहले अट्ठम तप वो भी बिना पानी के तीन दिन में 27 यात्रा, ऐसे दूसरे 26 वें अट्ठम में तीन दिन में 26 यात्रा, 25 वें अट्ठम के तीन दिन में 25 यात्रा ऐसी उल्टी गिनती से 27 अट्ठम में 378 यात्रा करके कुल 2000 यात्रा की है.... श्रमणी भगवंत ने 51 मौन उपवास, 108 संलग्न अट्ठम और 13 बार गिरिराज की नव्वाणु यात्रा की है.... इस चार्तुमास में पालीताना में 1300 साधु साध्वीजी बिराजमान है इसमें महान तपस्वी श्रमणी भगवंत भी है जिनके गुनगान गाये उतने कम है.... जय गिरिराज....

सौभाग्य का सूर्योदय नवकारसी

❊ डॉ. दिलीप धींग, चैन्नई

जैनाचार्य ने तपस्या पर बहुत जोर दिया गया है। साधना के क्रम और साधक की पात्रता व भावना के अनुसार तप को अनेक वर्गों और उपवर्गो में वर्गीकृत किया गया है। संक्षेप में तप के मुख्य वर्ग दो है- बाहरी तप और आंतरिक तप। दोनों ही वर्गों में छह-छह प्रकार के तप बताए गए है। बाहरी तप है:-

1- अनशन (उपवास)- आहार के प्रति अनासक्ति रखना। संकल्पपूर्वक आहार-त्याग करना।

2- ऊनोदरी थोड़ आहार करना। भूख से कम खाना।

3- वृत्ति-संक्षेप सांसारिक वृत्तियों को सीमित करना। मुनियों के लिये इसे भिक्षाचर्या तप कहा गया है।

4- रस परित्यागः- सरस आहार कम करना। आहार में रस नहीं लेना। स्वाद विजय। आयंबिल तप इसी का रुप है।

5- प्रतिसंलीनताः- मौज-शौक से दूर रहना। इन्द्रिय-संयम रखना। इसका एक नाम विविक्त शय्यासन भी है।

6- कायाक्लेश आत्महित के लिये समभाव से शारीरिक कष्ट सहन करना। शरीर के प्रति ममता घटाना।

आंतरिक तपः-

1- प्रायश्चितः भूल-चूक, पाप-दोष और गलतियों का प्रायश्चित करना।

2- विनयः- सहज, सरल, अहंकार रहित और अनुशासित जीवन जीना।

3- वैयावच्च सेवा करना। परस्पर सहयोग और उपकार की वृत्ति को बनाए रखना।

4- स्वाध्याय ज्ञान की आराधना। सद्ग्रंथों का अध्ययन।

5- ध्यान साधना में एकाग्रता बढ़ाना। ज्ञाता द्रष्टा भाव में जीना।

6- कायोत्सर्ग आत्मभाव में इतना लीन हो जाना कि शरीर का भान ही नहीं रहे।

बारह प्रकार के तप का यह सरल परिचय है। इससे स्पष्टहोता है कि बाहरी तप करने से आंतरिक तप करने की भूमिका तैयार हो जाती है और आंतरिक तप से बाहरी तप प्रभावी बन जाता है। दोनों ही प्रकार के तप एक दूसरे के पूरक है, सहायक है।

छोटा तपः-

जहां तक नवकारसी की बात है इसे जैन धर्म का सबसे छोटा तप कहा जाता है। किसी भी प्रकार का तप का नियम का भी स्पर्श करता है। यह बात नवकारसी के साथ भी लागू होती है। नवकारसी तप का संबंध अनशन यानी उपवास के साथ जुड़ता है। उपवास में एक दिन के लिये आहार का त्याग किया जाता है। नवकारसी में कुछ समय के लिये आहार-पानी का त्याग किया जाता है।

रात्रि भोजन त्याग व नवकारसीः-

उपवास का ही एक प्रकार है- रात्रिभोजन त्याग। रात्रि भोजन त्याग से नवकारसी का अभिन्न संबंध है। यू नवकारसी तप सूर्योदय के उपरांत सिर्फ 48 मिनट का होता है, परन्तु रात्रिभोजन त्याग रखनेवालों के लिए इसकी शुरुआत पूर्व दिन के सूर्यास्त से हो जाती है। नवकारसी रात्रिभोजन त्याग का थोड़ा-सा विस्तार है, जो सूर्योदय हो जाने के बाद भी 48 मिनिट तक बना रहता है। सूर्योदय से जितने समय पूर्व नवकारसी का प्रत्याख्यान किया जाता है, उतना ही नवकारसी का लाभ बढ़ जाता है। इसमें त्याग की दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा है।

नवकार व नवकारसीः-

नवकारसी का पच्चक्खाण नवकार बोलकर पारा जाता है यानि पूरा किया जाता है इसलिये इसे नवकारसी कहते है। यानि नवकारसी पूरी होने पर तीन बार नवकार मंत्र बोलकर कुछ खाया-पीया जाता है। नवकारसी हमेशा चौविहार ही होती है। यानि नवकारसी में पानी का भी त्याग रहता है। इन सारे संदर्भो में नवकारसी के संबंध में कुछ महत्वपूर्ण तथ्य उजागर होते हैं।

लोकप्रियताः-

जैन समाज में नवकारसी की इतनी महिमा और लोकप्रियता है कि किसी धार्मिक आयोजन के निमित्त से होने

वाले सुबह के प्रथम सामूहिक अल्पाहार को ही नवकारसी बोले जाना लगा है। ऐसे अवसरों पर चाहे सभी जनों ने नवकारसी की हो या नहीं, किंतु सबके लिये नवकारसी का समय होने पर यनि सूर्योदय के 48 मिनिट बाद ही जलपान उपलब्ध होता है। बोलचाल के इस अद्‌भूत शब्द प्रयोग में नवकारसी करने की एवं नवकार मंत्र बोलकर आहार करने की प्रेरणा भी है।

स्वर्णिम समयः-

नवकारसी में सूर्योदय के बाद 48 मिनट पूरे होने पर ही कुछ खाया-पीया जाता है और नवकार का सुमिरण करके खाया-पीया जाता है। सूर्योदय का समय आनंद, ऊर्जा, उजास, स्फूर्ति और एकाग्रता का समय होता है। सूर्योदय के वक्त में पूर्व दिशा का क्षितिज स्वर्णिम हो जाता है। पूरा वातावरण स्वर्णिम उजाले में नहा उठता है। पंछी चहचहाते हैं। सभी जाग जाते हैं। जागने के समय में सोना नहीं चाहिये। ऐसे स्वर्णिम समय का सर्वोत्तम उपयोग किया जाना चाहिये।

वैज्ञानिक पक्षः-

साधक सूर्योदय होते ही स्वर्णिम समय में कुछ खाने-पीने के बजाय यदि एक सामायिक कर ले, या स्वाध्याय अथवा ध्यान कर ले तो वह 48 मिनट की साधना उसके लिए अपेक्षाकृत अधिक फलदायी बन जाती है। उसके जीवन में सौभाग्य का सूर्योदय हो सकता है। यह नवकारसी का वैज्ञानिक पक्ष है। सामायिक साधना में भी एक अंतमुर्हूत या दो घड़ी अथवा 48 मिनट का बहुत महत्व बताया गया है।

ध्यान व नवकारसीः-

ध्यान के पाठ (तस्स उत्तरी करणेण....) में आता है कि जाय अरिहंताण भगवंताण नमोक्कारेणं न पारेमि यानी जब तक अरिहंत भगवान को नमस्कार करके यानी नमो अरिहंताण बोलकर नहीं पालू अथवा नमस्कार मंत्र बोलकर नहीं पालूं तब तक मन, वचन,काया से स्थिर रहने की प्रतिज्ञा है। इस प्रतिज्ञा को नवकारसी के साथ जोड़ा जा सकता है। नवकारसी में सूर्योदय के बाद 48 मिनट तक आहार-पानी के त्याग के साथ ही समय साधना में लगाए जाने की प्रेरणा भी है। हालांकि दो घड़ी तक सिर्फ आहार-पानी के त्याग का भी अपना महत्व है।

नई उमंगः-

इस प्रकार नवकारसी तप, उपवास तप का सजग आंशिक पालन है। यह सजगता साधक को स्वाध्याय, ध्यान और कायोत्सर्ग की ओर ले जाती है। उसे तनावमुक्त, विचारशील व परिपक्क बनाती है। उसे नवऊर्जा, नवस्फूर्ति और नवीन उमंग से भर देती है। साधक को आध्यात्मिक विकास यात्रा में आगे बढ़ती है।

छोटा तप, बड़ा लाभः-

जैन धर्म में त्याग तप को क्रमशः बढ़ाने की बात कही गई है। नवकारसी से आगे पौरसी, डेढ़ पौरसी, दो पौरसी आदि पच्चक्खाण भी बताये गये है। व्यक्ति अपनी क्षमता, भावना जिम्मेदारी और रुचि के आधार पर तप आराधना में आगे बढ़ सकता है। लम्बी लम्बी तपस्या करने, तपस्या के रिकार्ड बनाने या तपस्या में होड़होड़ी करने की बजाय छोटे-छोटे तप करके भी बड़ा लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

आचार्यो ने नवकारसी के अनेक लाभ बताए है। कहते हैं कि नरक में रही हुई आत्मा भयंकर दुःखों को सहन करके 100 वर्ष में जितने कर्मो का क्षय करती है, उतने ही कर्मो का क्षय मात्र नवकारसी का तप करने वाला व्यक्ति कर सकता है। सार यह है कि ज्ञान और समझ पूर्वक नवकारसी, पौरसी या किसी भी तप या नियम की आराधना की जाए तो जीवन के अनेक रंज, दुःख व तनाव खत्म हो सकते हैं।

....और भूत पकड़ा गया !

हठीसिंह पटेल प्रातःकाल में पश्चिम की ओर जा रहे थे। अपनी लम्बी परछाई को भूत समझ कर उसे पकड़ने के लिए दौड़ने लगे परन्तु ''भूत'' तो आगे ही आगे था। पकड़ा ही न गया। पटेल बड़बड़ा उठा- यह भूत जोरदार है।

दूर से यह दृश्य देखकर पटेल की मूर्खता पर हंसनेवाले सहजानंद स्वामी ने कहा- पटेल ! यह भूत आपके हाथ में इस तरह नहीं आयेगा। आप ऐसा करो, पूर्व दिशा की ओर चलने लगो, फिर देखो कि यह भूत आपका दास बनकर आपके पीछे-पीछे फिरता है कि नहीं ? ऐसा करने पर ''भूत'' पीछे-पीछे चलने लगा। पटेल प्रसन्न हो गये।

सही बात है। जो आदमी तृष्णा को पीठ देकर चलता है, उसके पीछे-पीछे परछाई की तरह लक्ष्मी चली आती है।

पर्युषण महापर्व

❋ सुधीर पटवा, एडवोकेट, कुकड़ेश्वर

जैन समाज में पर्युषण को आत्मसुधार का महापर्व माना जाता है। इसे जैनी बहुत उत्साह उल्लास से मनाते है, इन दिनों में विभिन्न धार्मिक गतिविधियाँ-पूजा पाठ और तपाराधना को विशेष महत्व दिया जाता है। चार्तुमास में साधु-संत भी हो तो पर्युषण पर्व मनाने में आनन्द बरसने लगता है। मूर्ति पूजक श्वेतांबर आम्नाय में कल्पसूत्र वांचन को प्राथमिकता दी जाती है। भगवान श्रीमहावीर स्वामी के बाद और अब से करीब 1500 वर्ष पूर्व से यह परम्परा चली आ रही है। कल्पसूत्र एक पावन पवित्र ग्रंथ माना जाता है जो श्री भद्रबाहु स्वामी के द्वारा आलेखित किया गया था। इस ग्रंथ का महत्व इसी से जगजाहिर है कि इसकी कई प्रतिमा हस्तलिपि में स्वर्णाक्षरों में लिखवाई गई थी- जिसका मूल्य आज एक करोड़ से भी अधिक है।

पर्युषण पर्व आराधना के समय सभी जैन परिवारों में महिला, पुरुष, बालक-बालिकाएं नये कीमती वस्त्र आभूषण आदि पहन कर आते हैं, उसका आशय यह है कि हमें श्रेष्ठ का वरण करना है किन्तु यह दुर्भाग्य ही कहा जावेगा कि हम अपने शरीर व सम्पन्नता को दिखाने के लिये यह सब करते है और हमारी आत्मा काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, राग और द्वेष जैसे अष्ट रिपुओं रुपी गंदगी से सनी अनछुई अनदेखी ज्यों कि त्यों रह जाती है और हमारा पर्युषण पर्व मनाना केवल एक औपचारिकता बनकर रह जाती है और जीवन यथावत रह जाता है।

क्या इस बार भी हमारा पर्युषण पर्व मनाना केवल एक परिपाटी का निर्वाह बनकर रह जावेगा या इस पर्व को हम अपने आचरण में सुधार करके सार्थकता प्रदान कर पावेंगे ?

जैन मान्यता के अनुसार तप करने से कर्म की निर्जरा होती है और आत्मा की शुद्धि होती है किन्तु देखने में इसके इसके विपरीत आता है कि जो जितना बड़ा तप करता है उसके अहंकार का ग्राफ भी इतना ही ऊंचा उठ जाता है। उनमें सहजता-सरलता और विनम्रता की जगह अहम व अखण्डता का भाव जड़े जमा लेता है। ऐसे तपस्वी क्रोध भी ज्यादा करते देखे जाते है जबकि तपस्या का मकसद आत्मशोधन का होता है जिससे मनके मैल धुलकर मन सहज, सरल, शांत तथा खिले फूल की तरह प्रसन्नता से परिपूर्ण हो जाना चाहिये। शुद्ध व स्वस्थ शरीर में ही सरल, सहज आत्मा का वास होता है इसलिये पर्युषण के पावन अवसर पर हमारे सारे प्रयास चाहे वे तप के सहित हो या तप से रहित आत्मा को शुद्ध, सरल, सात्विक बनाने के होना चाहिये तभी हम सर उठाकर यह कहने के अधिकारी हो सकेंगे कि हमने सही में पर्युषण की पर्वाराधना की है और जीवन को सार्थक करने एक कदम आगे बढ़ाया है।

इस अवसर पर सबसे आवश्यक है अपने वैरों को भुलाकर दूसरे को क्षमा कर देना और अपनी त्रुटियों के लिये क्षमा मांग लेना। यह बड़ा ही कठिन है, इसमें हमारा अंहकार याने अहम आड़े आता है। मैं और मेरा को छोड़े बिना क्षमा मांगना संभव ही नहीं है। इस मामले में जैन इतिहास का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण हमारे सामने समता शिरोमणि श्री कुरुगुडु मुनि का है जो पूर्वोपार्जित अन्तराय कर्म के कारण आहार संज्ञाधीन थे याने जरा भी भूखे नहीं रह सकते थे, इस कारण वे संवत्सरी जैसे पर्व दिवस पर भी उपवास नहीं कर पाये जबकि अन्य सभी संतों के उपवास और बड़ी-बड़ी तपस्याएं थी। उस दिन श्रावक-श्राविका भी उपवास करते होने से श्री कुरुगुडु मुनि के केवल लूखे चांवल भिक्षा में मिले जिन्हें लेकर वे उपाश्रय में आये और साधुचर्या के पालन में लाई गई भिक्षा का पात्र अपने वरिष्ठों को बताने की प्रक्रिया पूरी कर रहे थे कि सभी वरिष्ठ संतों ने उनका उपहास उड़ाते हुए कहा धिक्कार है तुम्हें मुनि आज तो बच्चे भी उपवास करते है किन्तु एक तुम हो कि एक दिन भी खाना नहीं त्याग सकते और यह कहते हुए सभी ने उनके चांवल के पात्र में घृणावश थूंक दिया। इस पर भी सरल स्वभावी श्री कुरुगुडु मुनि के मन में रंच मात्र भी रोष उत्पन्न नहीं हुआ और वे बड़ी सहजता और विनम्रता से बोले -धिक्कार है, मुझ जैसे भूख्खड़ को जो एक दिन भी भोजन छोड़ नहीं सकता धन्य है, आप सभी तपस्वी जो तप करने में सक्षम है मैं आप सभी के तप की अनुमोदना करता हूं, अपने अन्तराय कर्म का प्रायश्चित करता हूं और आप सभी गुरु भगवंतों की कृपा का आभारी हूं जिनने मेरे लूखे सूखे चावलों को अपने थूंक के घी से चूपड़ दिया है और उन्हें बिना हिले हवाले के बिना द्वेष भाव से थूके हुए चांवल का आहार प्रेम पूर्वक कर लिया। सरल भाव से श्री कुरुगुडु मुनि का वैर भाव रहित और स्नेह भाव सहित चिन्तन उन्हें उसी समय ऊंचा और ऊंचा बहुत ऊंचा ले चला गया और केवल ज्ञान के झूलों में चढ़कर सभी के वन्दनीय पूजनीय होकर भवभ्रमणा के चक्र से मुक्त होकर सिद्धाकाश के राही बन गये। धन्य है श्री कुरुगुडु मुनि और धन्य है उनकी समता की साधना। अरिहंत परमात्मा से प्रार्थना है कि उनकी कृपा से हम भी अपना जीवन सार्थक करके पर्युषण की आराधना के द्वारा अपनी आत्मा को भव भ्रमण से मुक्त कर सके। जय जिनेन्द्र, शुभम भवते।

ऐसा क्षमा व्रत अब धार लो...!

पर्युषण पर्व हमें सिखाता
क्षमा कवच अंगीकार करो,
तज कर कटुता वैर भाव को
जीवन का श्रृंगार करो...!

क्षमा जिसका मूलमंत्र है
उसकी महिमा अपरम्पार है,
क्षमा की शक्ति जिसमें ज्यादा
वो रहता सदा बहार है...!

क्षमा धर्म है, क्षमा कर्म है
क्षमा मन का संदेश है,
क्षमा सुभावन, क्षमा सुपावन
क्षमा शांति परिवेश है...!

क्षमा मार्ग पर कदम है पहला
शत्रु दर पर रखिए,
कदम दूसरा परिजन रिश्तों
और मित्रों पर परखिए...!

जहां नहीं कोई काम आ सके
धन स्वजन या यंत्र ही,
वहां अकेला सदा कारगार
अद्भूत क्षमा का मंत्र ही...!

बिना मूल्य हर सुख मिल जाता
यह अक्षय भंडार है,
नहीं रहे जहां गीला शिकवा
वो कहलाता क्षमा दरबार है...!

मनमंदिर में क्षमा का झरना
लगता न्यारा प्यारा है,
''क्षमा वीरस्य भूषणम्''
यह जिन शासन का नारा है...!

क्षमा साधना सत्य धर्म है
जिनवाणी का सार है,
सबके लिए सहज सरल है
यह स्वयंचलित हथियार है...!

अगर मगर सब छोड़छाड़ कर
क्षमा नगर में आईए,
प्रेम, स्नेह क्षमा की सरिता
अंतर्मन से बहाईये...!

मार मार मत करो और को
अपने मन को मार लो,
नियमित क्षमा से जुड़े रहेंगे
ऐसा व्रत अब धार लो...!

पर्युषणा महापर्व पांच कार्यों से आराधना

1 – सर्वत्र अमारि प्रवर्तनः – परमार्हत महाराज कुमार पाल-सम्प्रति राजा आदि के समान अमारि उद्घोषणापूर्वक अमारि प्रवर्तन कराना चाहिये।

2 – साधर्मिक वात्सल्यः – प्रायः अपने जीव ने सर्व जीवों के साथ परस्पर सर्व संबंध बांधे है लेकिन साधमिकादि संबंध तो कदाचित ही स्वल्प तथा बांधा है। इनका समागम भी बहु पुण्य के लिए होता है तो फिर इनकी औचित्यपूर्ण सेवा के फल का क्या पूछना ? एक बाजू के पलड़ेमें अपनी सर्व धर्मसाधना और दूसरे पलड़े में समान धर्मवालों का वात्सल्य रखने में आया और बुद्धि के तराजू से तोला जाय तो दोनों पलड़े समान होते हैं। बोलो कितना अमाप लाभ है, इस साधर्मिक भक्ति में ?

3 – परस्पर क्षमापनाः – जो क्षमा करता है, क्षमा मांगता है, क्षमाप्रधान बनता है अर्थात् जो शांत-प्रशांत-अप्रशांत बनते है, उन भव्य जीवों को जिनशासन की आराधना का लाभ मिलता है। क्षमा मांगना और क्षमा करना प्रवचन का सार है जो इस तरह उपशांत बनता नहीं वह आराधक नहीं बन सकते।

4 – अट्ठम तपः – भगवान श्री जिनेश्वर देव ने पाक्षिक पर्व का उपवास,चौमासी पर्व का छट्ठऔर संवत्सरी पर्व का अट्ठम करने का कहा है। अट्ठम की शक्ति के अभाव में छट्ठ, तीन उपवास, छः आयंबिल आदि से अथवा अंत में 6000 नवकार मंत्र गिनकर भी प्रभु की इस आज्ञा का पालन करना चाहिये। ऐसा न करनेवाला जिनाज्ञा उल्लंघनकारी होता है।

5 – चैत्य परिवाड़ीः – अर्थात् शहर के सभी जिनमंदिर, मूर्ति आदि द्वारा शासनोन्नति करनी चाहिये।

पर्व पर्युषण क्षमापना पर्व

⁂ जैन राजू राठौड़,
हुबली

जैन धर्म की सांस्कृतिक विरासत में यह पर्व क्षमापना पर्व के रुप में भी मनाया जाता है। श्रमण संस्कृति के अग्रदूत भगवान श्री महावीरस्वामी क्षमा के परम उपासक थे। दिनांक 31 अगस्त से 7 सितंबर 2024 पर्व पर्युषण के ये आठ दिन है। इस पर्व में तप, जप, साधना, आराधना के साथ साथ क्षमापना की भी मुख्य्र भूमिका अदा होती है। मैं इस पर्व के संदर्भ में क्षमापना पर अपने विचार रखते हुए कहना चाहूंगा कि हजारों किलोमीटर की लंबी तीर्थयात्रा करने से भी ज्यादा लाभदायक है 100 कदम चलकर अपने विरोधी, जिनके साथ मन मुटाव है, चाहे वो परिजन हो, रिश्तेदार हो या फिर मित्र आदि उनसे क्षमा मांगना और वैर विरोधी आदि भुलाकर उन्हें गले लगाना।

हो सके वहां तक जब कभी भी बोलचाल,अनबन अथवा कोई गलत फहमी हो जाए तो तुरन्त ही क्षमा मांगकर उसे वहीं खत्म कर देना, उसकी गांठ तो कभी बांधना ही नहीं। ध्यान रहे कि लंबे समय तक की वैर विरोध की गाँठ को खोलना मुश्किल हो सकता है।

क्षमा मांगने वाला न कभी कमजोर व कायर होता है बल्कि वो तो सच्चा वीर व शूरवीर होता है, इसलिए ही तो कहा गया है कि ''क्षमा वीरस्य भूषणम्।''

ध्यान रहे कि जैसे एक चिंगारी दावानल का रुप धारण कर सकती है वैसे ही एक बार का क्रोध और कटू वचन जन्मों-जन्मों के रिश्तों में वैर पैदा कर सकता है। वैर साँप के दंश की तरह होता है, साँप काटता एक जगह है परन्तु उसका विष पूरे शरीर में फैलता है, उसी तरह वैर तो किसी एक के साथ होता है पर उसका असर परिवार, रिश्तों और मित्रों तक फैल जाता है।

इसी संदर्भ में, मैं कहना चाहूंगा कि **''क्रोध आवे तो रुक जाना.... गलती हो तो झुक जाना''** और इसी मंत्र को अपनाते हुए जगत के सभी जीवों से क्षमा याचना करते हुए अपनी भूल का प्रायश्चित भी कर लेना।

सबको क्षमा करना और सब क्षमा करें यह इस पर्व का मूल संदेश है और किसी के प्रति वैर भाव न रखना यह इस पर्व की सार्थकता है। तो आओ इस पावन पर्युषण पर्व पर हम सब मिलकर एक साथ कहते है कि....

नहीं किसी से वैर हमारा
सब प्राणी है मित्र हमारे,
हमने क्षमा किया है सबको
हमें क्षमा करें मिलकर सारे,
क्षमाशील विशाल हृदय हमारा
हम है प्रभु वीर के चाँद सितारे,
अरस परस ''मिच्छामि दुक्कडम''
जोड़ हाथ हम कहते सारे...!
''जय महावीर ! जय जिनेन्द्र !''

⁂ अमेरिका के उपराष्ट्रपति जैफरसन बहुत सादगी से रहते थे। वे कहीं बाहर गए तो अपना बिस्तर कंधे पर लादे एक होटल में ठहरने पहुंचे।

होटल मालिक ने ऐसे साधारण आदमी को अपने यहां ठहराने में हेठी समझी और स्थान खाली न होने के बहाने इंकार कर दिया। जैफरसन चले गये और किसी अन्य होटल में ठहरे। बाद में होटल मालिक को पता चला तो वह हड़बड़ा गया। इतने बड़े अधिकारी को अवज्ञा पर उसे डर लग रहा था। गाड़ी लेकर मैनेजर को भेजा और लौटा लाने का आदेश दिया।

जैफ रसन ने नम्रता से कहा- जिस होटल में साधारण व्यक्ति के ठहरने तक का स्थान नहीं, उसमें उपराष्ट्रपति को ठहराने जितना स्थान कहां खाली होगा। वे नहीं गए।

हम शेर या श्वान ?

पत्थरेणाहओ कीवो, पत्थरं ड्क्कुमिच्छई।
मिगारिओ सरं पप्प सरुप्पत्तिं विमग्गई ॥

-श्री उपदेशमाला प्रकरण

अर्थात्- कुत्ता पत्थर मारनेवालों को नहीं, पत्थर को काटने दौड़ता है, जबकि शेर बाण के ऊपर नहीं, बाण मारनेवाले पर छलांग लगाता है। सत्वशाली साधक निमित्तों से नहीं, कर्मो से लड़ता है।

पर्युषण अष्टान्हिका पर्व : आराधक के लिये ग्यारह कर्त्तव्य

✻ पं.श्री गुणसुंदरविजयजी गणी

1- जघन्य से एक बार चतुर्विध श्री संघ की पूजा:- साधु-साध्वी को आहार, वस्त्र, पात्र, पुस्तकादि द्वारा और श्रावक-श्राविका शक्ति अनुसार पहेरामणी द्वारा करनी चाहिये। निर्धन भी गुरुओं को मुहपत्ति आदि वहोराकर और दो तीन श्रावक-श्राविकाओं को सोपारिका प्रदान आदि द्वारा ये पूजा कर सकते हैं। कारण दरिद्र अवस्था में किया हुआ अल्पदान महालाभकारी होता है।

2- समान धर्मवालों की वात्सल्य भक्ति करनी चाहिए:- जो व्यक्ति साधर्मिक भक्ति करता नहीं उसका जन्म व्यर्थ जाता है। बकरी के गले में रहनेवाले आंचल की तरह निकम्मा होता है।

3- जघन्य से साल में एकाद बार यात्रात्रिक:- अर्थात् 1- अष्टान्हिका यात्रा, 2- रथयात्रा, 3- तीर्थयात्रा करनी चाहिये।

4- जिनेश्वरदेव ने मंदिर में सर्व पर्वो के समय विस्तार से स्नात्र महोत्सव करना चाहिये। ऐसी शक्ति नहीं है तो साल में एक बार करना चाहिये।

5- शुभविधि से देवद्रव्य की वृद्धि करनी चाहिये:- देवद्रव्य की अनुकूलता से श्री जिनेश्वरदेवों की सेवा-पूजा आदि अच्छी होती है, वहां जैनाचार्यो पधारते है और धर्म देशना आदि द्वारा भव्य जीवों को सम्यग् दर्शनादि की प्राप्ति कराते है और जैनेतरों में जिनशासन की प्रभावना करते हैं।

6- महापूजा:- जिनमंदिर में भव्य अंगरचना, समग्र देहरासरजी को सजाने के स्वरुप में महापूजा करनी चाहिये।

7- रात्रिजागरण:- रात को धर्म जागरिका करनी चाहिये। इस बारे में विवेक सद्गुरु से खास जान लेना चाहिये।

8- श्रुतज्ञान भक्ति:- इस भक्ति से ज्ञानावरणीय कर्म का विशिष्ट क्षयोपशम होता है और इससे दुर्गति-जड़ता-मूंगापन-अंधापा-मूर्खता इत्यादि अटकते है और सद्गति और परंपरा से अनंत ज्ञान शक्ति प्राप्त होती है।

9- उद्यापन-उजमणुं:- तपस्वी चैत्य के शिखर उपर उद्यापन स्वरुप कलश स्थापना करना चाहिये। उद्यापन से तप का फल बढ़ता है। जिनशासन की प्रभावना होती है। अनेकानेक भव्य जीवों को धर्म पाने का और धर्म मार्ग में आगे बढ़ने का निमित्त मिलता है।

10- तीर्थ प्रभावना:- जैनत लोगों में जैन शासन की जाहो-जलाली सच्चे अर्थ में वाहवाह हो जाये ऐसे शुभ कार्य करने चाहिये।

11- शुद्धि-आलोचना:- वर्ष दरम्यान लगे पाप-दोष अति चारों की सुविहित गीतार्थ गुरु के पास खुल्ले दिल से इकरार करके उसका प्रायश्चित लेना और ये प्रायश्चित पूर्ण करना चाहिये। याद रखे ''जंबूद्वीप में जितने पर्वत है वे सभी अगर सुवर्ण के हो और यह सभी सुवर्ण जो 1- जिनमूर्ति 2- जिनमंदिर, 3- जिनागम, 4- साधु, 5- साध्वी, 6- श्रावक, 7- श्राविका स्वरुप सात क्षेत्रों में दान में दिया जाय तो एक दिवस के पाप से छुटकारा होता नहीं। जंबूद्वीप में जितनी रेती है-वह अगर रत्न बन जाय और उनका सात क्षेत्रों में दान दिया जाय तो भी एक दिन के पाप से मुक्ति मिल सकती नहीं।'' आलोचना बिना खूब दिवसों में उपार्जित किये पाप का नाश किस तरह होगा ? विधिपूर्वक आलोचना करके गुरु का दिया प्रायश्चित वहन करनेवाली व्यक्ति इस भव के और भवोभव के पाप का नाश कर सकती है।

पर्व दिवस के दिन पौषध नहीं छोड़ना चाहिये। पर्व दिवस के दिन जो प्राणी पौषध और उपवास पूर्वक रहते है वे गृहस्थ होने पर भी धन्य है। धर्म धन के योग्य है।

भव्य जीवों को शक्य हो तो धर्म का आचरण सदैव करना चाहिये। लेकिन वे शक्य न हो तो पर्व के दिन तो अवश्य करना चाहिये। जैन धर्म के पर्वो में तप-त्याग-तितिक्षा आए की प्रधानता होती है। श्रावक सर्व जीवों को अभयदान मिले ऐसी अभिलाषावाला होता है। पर्व दिवस में इसकी ये अभिलाषा ज्यादा चमकीली और कार्यान्वित बनती है।

इस प्रकार पर्युषणा पर्व के कर्त्तव्यों की बात यही सामान्य से पूर्ण हुई। याद रखो कर्त्तव्य में चूकना गुनाह है। इसलिए शक्ति को छिपाये बिना-वीर्यपूर्वक ये कर्त्तव्यों बजाने में उद्यमशील बनना चाहिये।

पर्युषण पर्व का महत्व....

*पं.श्री गुणसुंदरविजयजी गणी

प्रश्न– पर्युषण पर्व का महत्व बताओ–उसका अर्थ क्या है ?

जवाब– पर्युषण में दो शब्द है। परि–चारों ओर से, उषणा–रहना। अर्थात् चारो ओर से मर्यादा पूर्वक आत्मा की आराधना में रहना। द्रव्य से पर्युषणा याने आत्मा के उपकारी सम्यग् दर्शन–ज्ञान–चारित्र के उपकरणों सहित रहना। क्षेत्र से विजातिया स्त्री–पुरुष आदि रहित स्थान में रहना। काल से श्रावण वद बरसा से भादरवा सुदि चतुर्थी तक के आठ दिवस तक रहना। भाव से समभावपूर्वक क्षमा, नम्रतादि गुणों सहित रहना।

साधु को यह पर्युषणा आषाढ़ चतुर्दशी से शुरु करके कार्तिक सुदि चर्तुदशी तक के चार मास की सामान्यतः गिना जाता है। पर्युषणा से संवत्सरी स्वरुप वार्षिक पर्व भी गिना जाता है।

चौमासी का सीजन याने पांच इन्द्रियों को बेलगाम बनानेवाला विकारों का और जीवों की अधिक उत्पत्ति का और उनकी विराधना का सीजन। इन दिनों में साधु विहार करके एक गांव से दूसरे गांव जाते नहीं, अर्थात् विहार नहीं करते। लेकिन जीवहिंसा न हो और जीवरक्ष के हेतु से एक ही स्थान में रहते हैं।

गृहस्थ भी इन दिनों में जितना हो सके उतना आरंभ–समारंभ के अर्थात् हिंसा हो जाय ऐसे कामों को छोड़कर बने उतना धर्माराधना में ही रहते हैं। संवत्सरी का दिन वार्षिक पर्व तरीके माना जाता है। उसकी आराधना की पूर्व तैयारी रुप पहले सात दिवस है। यह पर्व जीवन में क्षमापना–सहिष्णुता–अहिंसा रखना सिखाता है और इसके द्वारा शांति समाधि देता है। समाज में शांति क्षमापना होने पर संघ में–गांव में–राज्य में–देश में और विश्व में शांति के लिए यह पर्व गुण विकास के लिए प्रेरणा करते हैं।

प्रश्न– पर्युषणा पर्व में श्रावक–श्राविकाओं के क्या कर्त्तव्य होते हैं ?

जवाब– सामान्य से पर्युषणा के आठ दिनों में कूटना, पीसना, कपड़े धोना, हरे फल और हरी वनस्पति खाना, अब हम सेवन आदि पाप कर्म नहीं करने चाहिये। विशेषकर इन दिनों में 1- जीवों को अभयदान देने के स्वरुप में अमारि प्रवर्तन। 2- समान धर्मवाले अर्थात् जैन धर्म के आराधक प्रत्येक गाय को अपने बछड़े पर होता है वैसा वात्सल्य भाव रखना। 3- परस्पर क्षमापना अर्थात् क्षमा की याचना, क्षमा का दान करना और क्षमाप्रधान बनना। 4- सतत तीन दिवस उपवास स्वरुप अट्ठम का तप करना। 5- शहर के तमाम जिनमंदिरों में जिन शासन प्रभावना हो ऐसी रीति से दर्शन–पूजा के लिए समूह में जाना। इसके उपरांत संवत्सरी का अर्थात् अंतिम दिन समस्त साधु महाराज को वंदना करना और संवत्सरी का प्रतिक्रमण करना। इस प्रतिक्रमण में 1008 श्वासोच्छवास प्रमाण काउस्सग्ग करना होता है। सविशेष इन दिनों में कल्पसूत्र शास्त्र का सुविहित गुरुमुख से श्रवण करना चाहिये।

प्रश्न- कल्पसूत्र शास्त्र क्या कहता है ? इसका क्या महत्व है ?

जवाब– कल्पसूत्र शास्त्र में साधु के आचार, तीर्थंकर देवों के चारित्र, गणधर वाद, गणधर भगवंत आदि साधु की पाट परंपरा, उनकी समाचारी आदि का सविस्तर वर्णन है। इसकी टीका उपाध्याय श्री विनय विजयजी महाराज ने लिखी है। इसमें ज्योतिष शास्त्र,क्षमापना, अहिंसा,वाणी कैसी बोलनी चाहिये, विनय कैसा करना चाहिये ? माता-पिता की भक्ति, श्री जिनेश्वरों के पांच कल्याणकों की विशेषता-भव्यता,अरिहंत देवों के उपकार, आत्मा, पुण्य-पाप-परभव-कर्म-पंचभूत आदि की सिद्धि आदि अनेकानेक विषयों की चर्चा की गयी है। इसके श्रद्धापूर्वक श्रवण से जीवन में आमूलचूल परिवर्तन ला सकता है।

इस महान कल्पसूत्र के सर्वाक्षरों के श्रवण से आठ भव के अंदर मोक्ष प्राप्ति हो सकती है। श्री जिनशासन में एकाग्र चित्तवाले, पूजा-प्रभावना में तत्पर, क्षमाप्रधान जीव के रक्षक बनकर जो भव्य जीवों इक्कीस बार कल्पसूत्र का श्रवण करते हैं, वे सचमुच ही सर्व कर्मो से मुक्त बनते हैं। इस कल्पसूत्र का श्रवण सिर्फ अधिकृत पंचमहाव्रतधारी साधु के पास ही करना चाहिये।

तप और आराधना का महत्व समझाइएः-

आरोग्य शास्त्र भी होजिरी को आराम देने को और उपवासादि करने को,भूख से कम खाने को,जीभ-रसना को नहीं लेकिन पेट को पूछकर भोजन करने को फरमाता है। जैन शास्त्र हर पंद्रह दिवस को एक उपवास फरजियाद करने को-हर चार महिने में संलग्न दो उपवास और हर साल तीन उपवास संलग्न (अट्ठम) करने को फरमाता है। उदर का तीन भाग मन से सोचकर एक भाग ही आहार से पूर्ण करना होता है, पहला भोजन पचना नहीं होता (हजम नहीं होता) तब तक खाना नहीं चाहिए।

जैन शासन ने तप से पूर्वभव के अशुभ फलप्रद कर्मो का जल्दी नाश करने का, नया अशुभ कर्म आत्मा में प्रवेश करता हो तो उसे अटकाने का और साथ ही साथ समता प्राप्ति का एक अमोघ साधन बताया है। जो व्यक्ति तप करता नहीं, तप द्वारा इच्छा पर नियंत्रण रहता नहीं, उस व्यक्ति को समय-समय पर समत्व भाव लाना बहुत कठिन होता है। ''**मोहक्षयाथ देहे दुःख महाफलम्**'' समझ कर आत्मा को कष्टों की आदत पाड़ना खूब जरुरी है।

आज का शरीर विज्ञान भी डायेटिंग द्वारा-उपवास आदि द्वारा शरीर शुद्धि और स्वास्थ्य प्राप्ति अर्थात् रोग मिटाने के अनेक प्रयोग बताता है। आयुर्वेद शास्त्र भी आंव (पेचिस) प्रधान रोगों में जैसे कि बुखार-झाड़ा, उल्टी, अजीर्ण, चमड़ी के रोग, सर्दी, आँखों के रोग, पेट के रोग, शरीर की स्थुलताइ, रोगों में उपवास करने का आदेश देता है।

प्रश्न– महावीर जन्म वाचन क्या है ?, प्रभु का पालना घर ले जाने का क्या महत्व है ?

जवाब– अरिहन्त प्रभु सन्मार्ग दर्शक है। छोड़ने जैसी चीजें और प्राप्त करने के पदार्थो का सच्चा परिचय कराके जीवों को सुख प्राप्ति और दुःख मुक्ति के सच्चे और कायम स्वरुप मार्ग बताते हैं। भव्य जीवों को कल्पसूत्र सुनने में आनंद होता ही है। इसमें भी जगत के तमाम जीवों को जिनके पांच कल्याणक आनंद देते है, उनमें से जन्म कल्याणक सुनने का सौभाग्य कहां मिलता है ? च्यवन कल्याणक जन्म, उस समय का अद्भूत कुदरती माहौल, सुन्दर शुभ ग्रहों का योग सुनने में कितना आनंद ! जो ऐसा कल्याणक देखाते है, सुनते है वे सचमुच धन्य है, धर्मधन के योग्य है।

ऐसे प्रभु जब पालना-छोटा झूला सह भव्य जीव के घर पधारते है, तब उनको कितना आनंद होता है ? इस विश्व के जीवों को पुत्र जन्म की बधाई विदेश से आती है तो भी खुशी-खुशी छा जाती है। यह तो तीन जगत के तारणहार का छोटा झुला। पालना घर आवे तो कितना आनंद होता है ! जिस घर में तीन लोक का नाथ पधारे है, उनके घर में अब अशांति-असमाधि-अप्रसन्नता-क्रोध आदि दोषों को रहने का स्थान मिल सकेगा क्या ? नहीं। प्रकाश आने के बाद अंधःकार स्वयं दूर होता है,उसी तरह प्रभु के छोटे झूले-पालने साथ घर आने पर आत्माघर पावन होता है। ऐसे घरवालों को अपना दोष और पाप दूर हो जाए इसकी सविशेष खबरदारी लेनी चाहिए।

प्रभु श्रीमहावीर के लोरी-हालरडुं (जन्म गीत) गानेवाले को-उनका पालना घर ले जाकर उचित कीर्तन-भजन-भक्ति करनेवाले को भगवान को जो अनंत सुख का साम्राज्य मिला है- वैसा ही साम्राज्य प्राप्त होता है। कविरत्न श्री दीपविजयजी महाराज भगवान श्री महावीर के ''हालरडुं'' में ललकारते है ''**ऐणी पेरे गायुं माता त्रिशला सुतनुं पारणुं रे, जे कोइ गाशे लेशे पुत्र तणा साम्राज्य।'' (मोक्ष)**

सांवत्सरिक प्रतिक्रमण का महत्वः-

मोटर अयोग्य रास्ते को गयी हो तो उसे वहां से पीछे लेकर (रिव्हर्स में लेकर) सच्चे रास्ते पर लायी जाती है। फिर उसे आगे चलायी जाती है। डॉक्टर शरीर को ताकतवर बनाने से पहले शरीर में कुछ खराबी घुस गयी हो तो उसे प्रथम दूर करते है। रन के लिये थोड़ा दौड़ने पर जब बॅटस्मेन लगता है कि उसको ''रन-आउट'' होने की शक्यता है तो वह थोड़ा दौड़ने के बाद भी अपनी जगह पर पीछे आ जाता है।

बस ! भगवान की आज्ञा विरुद्ध आचरण करनेवाले, करने योग्य धर्म के कार्य न करनेवाले, सर्व सत्यवादी भगवान के वचन से विपरीत बोलनेवाले और भगवान् के वचन पर अश्रद्धा करनेवाले को इन भूलों से पीछे मूड़ाकर भूल के फल में से बचा लेनेवाला है यह प्रतिक्रमण।

शास्त्रकारों ने प्रतिक्रमण को आवश्यक अर्थात् अवश्य करने योग्य करणीय के स्थान में रखा है। ऐसा प्रतिक्रमण श्रावक को रात-दिवस दोनों समय अवश्य करना चाहिये। (अर्थात् सुबह-शाम)। वार्षिक प्रतिक्रमण तो बारह मास के पाप दोषों की माफी मांगने का-पापों से पीछे हटने का जबरदस्त साधन है। हर रोज घर साफसूफ करनेवाला गृहस्थ जैसे दिवाली आदि पर्व को घर को अधिक व्यवस्थित रीत से साफ करता है, सांवत्सरिक प्रतिक्रमण भी ऐसा ही होता है। यह क्षमापना का भव्य दिन है। सांवत्सरिक प्रतिक्रमण याने क्षमापना का पर्व। पर्व आराधन से तीनों काल के पाप-दोष को तो हिलना है ही, बैरभाव का भी विसर्जन करना है।

प्रश्न– क्षमापना क्या है ? उसका महत्व क्या है ?

जवाब– हम सब तो भूल के चक्कर में फंसे है। भूल-अपराध-दोष होना हमारे लिये अत्यंत सहज है। इन भूलों का संग्रह करना-उनका संमार्जन (परिमार्जन) न करना बहुत बुरा है-नुकसान प्रद है। वैर विरोध का भाव अगर संग्रह में रखा जाए तो वह चार मास बीत जाने पर श्रावक गुणों का नाश करता है। यह वैरभाव की गाँठ बार मास बीत जाने पर भी रहे तो वह कषाय अनंतानुबंधि बनकर जैनत्व गुण का भी नाश करती है। मन में चार मास से अधिक रहा हुआ कषाय देशविरति श्रावक धर्म को जला देता है। इसलिए ही जैन शासन कहता है, तुम्हारे भूल की दूसरों के पास क्षमा मांगो, क्षमा मांगनेवाले को क्षमा प्रदान करो- क्षमाप्रधान बनो। शांत बनो-उपशांत बनो-प्रशांत बनो। जो उपशम भाव रखता है अर्थात् क्षमा शांति रखता है उसे ही जैन धर्म की आराधना

होती है। जो क्षमा रखता नहीं उसे आराधना कैसी ? तिरस्कार, क्रोध, वैर आदि भाववालों को शरीर-मन-आरोग्य पर भी विपरीत असर होता है। (**''भूल्या त्यांथी फ री गणो। जाग्या त्यांथी सवार।''**) भूल हो जाय तो फिर से गिनो। जब उठे तभी सुबह समझकर शांति और क्षमा में जाना निहायत जरुरी है। वैर भाव-क्रोध भाव को रखनेवाला खुद का आरोग्य को भी नुकसान पहुंचाता है।

क्षमाप्रधान बने हुए साध्वीजी मृगावतीजी-चंदनबाला जी-चंडरुद्राचार्य के शिष्य मुनि आदि केवळज्ञान पा गये। अरे भयंकर पापों करनेवाला-चंडकौशिक दृष्टिविष नाग भी क्षमा और शांति का भाव पाकर तिर्यंच गति की सर्वश्रेष्ठ गति याने आठवां देवलोक पा गया। झूंकना जिंदा व्यक्ति का गौरव है। अक्कड़ता मुर्दे की निशानी है। जहां क्षमा है, वहां भाई-भाई का, देरानी-जेठाणी का, सास-बहू का झगड़ा रोककर घर में शांति होगी। वैसे आगे बढ़कर समाज-संघ-गाँव-नगर-राज्य-राष्ट्र और विश्व में शांति होगी। घर की शांति से लेकर विश्व की शांति के लिये क्षमापना यह अमोघ मंत्र है। लड़ती-झगड़ती बात-बात में बॉम्ब स्फोट तक की धमकी देनेवाली दुनिया को शांति-स्वस्था-प्रसन्नता देनेवाला यह क्षमापना-सहिष्णुता धर्म है। यह क्षमापना धर्म बजाना सामनेवाले का दृष्टिकोण समझने से हो सकता है। ये सभी बातें जैन धर्म ने जगह-जगह पर बतायी है। सर्वज्ञ का यह धर्म ने जीवन जीने के लिये बहुत अच्छे उपाय बताये है।

जिस घर में क्षमा नहीं- सहिष्णुता नहीं वह घर झगड़ा-कलह की आग में जलता है। यह आग बढ़ते-बढ़ते समाज, गांव, नगर, राज्य, देश और विश्व को अशांत बना सकती है। क्षमापना-सहिष्णुता के अभाव में क्रोध वैरभाव आग बबूल बनकर शरीर में घुसाने का काम करता है। शांति-प्रसन्नता को चाहनेवालों को पर्युषण पर्व से क्षमापना धर्म को जीवन में उतारना ही चाहिये।

प्रश्न- रथयात्रा आदि वरघोड़ा किसलिए ?

जवाब- पर्युषणादि पर्वो में जैन गृहास्थ ने तो सुंदर गुण प्रद आराधना-देवदर्शन आदि किया। अन्य लोगों को भी ''जैन धर्मी लोग अच्छे हैं।'' ऐसा लगे इस शुभ भावना से दया दानपूर्वक वरघोड़ा निकला जावे तो वह भी शासन प्रभावना ही है। उन लोगों को श्री जिनेश्वर देव का तथा जैन साधु साध्वी का दर्शन होगा। अन्य लोगों का मिठाई, पशुओं को घास, गरीबों को वस्त्र दान-भोजन दान देते देते वरघोड़ा निकाला जाय तो शासन की शान-शोभा कितनी बढ़ेगी ? तपस्वी के दर्शन से लोग जैन धर्म के तप त्याग की ओर आकृर्षित होंगे और उनमें भी धर्मबीज बोया जाएगा। वरघोड़े में अरिहंत देव के जीवन को और उपदेश को सादर पेश करना चाहिए और इसके द्वारा इन महापुरुषों ने बताया हुआ-बड़ों का विनय, सर्वम-उचित आचरण, दूसरों के दृष्टिकोण को समझने का प्रयत्न, छोटे-बड़े की मर्यादा, बोलने में सत्य प्रिय मधुर भाषा, अहिंसा, अचौर्य, ब्रह्मचर्य आदि का प्रचार करना चाहिये। इससे लोग उपदेश स्वीकार करके सुखी और शांत बन सके-समाधिस्थ बन सके-प्रसन्न बन सके। संक्षेप में वरघोड़ा द्वारा भी जगत के जीवों को भला हो- कल्याण हो यही हेतु अंतर्भूत है। याद रखना ! जैनों के धार्मिक अनुष्ठान में, अरे ! उनकी हर रोज की मंगल भावना में भी - सकल विश्व का जय हो मंगल हो, - सकल जीव परोपकार करने में अत्यंत जागृत बने, - सबके पाप-दोषों का नाश हो, - जगत के तमाम छोड़ने जैसे और प्राप्त करने योग्य पदार्थो का विज्ञान प्राप्त करके और उसके अनुकूल आचरण करके जगत के जीव सुखी बने-सुखी बने-सुखी बने।'' ऐसा जयघोष होता ही रहता है। भूतकाल में और आज भी जैनी लोग पिंजरापाल, दुष्काल राहत-राष्ट्रीय आफत जैसे कि धरतीकंप आदि में मानव और पशु को सहायक हुए है- होते है ही।

प्रश्न- स्वामी वात्सल्य किसलिए ?

जवाब- जिनेश्वर देव का बताया धर्म-जैसे कि सामायिक-पौषधा-प्रतिक्रमण-जिनपूजा-जिनदर्शन-नमस्कार महामंत्र जाप-जिन वचन श्रवण-समकित सह श्रावक के बारह अणुव्रतों का पालन जैन श्रावकों को प्रिय होता ही है। ये व्रत नियम अगर प्रिय है तो व्रत जिन व्यक्तियों में है वे प्रिय लगनी चाहिये। धर्म हमेशा धर्मशील व्यक्तियों में होते है। धर्मी बिना धर्म होता नहीं। इसलिए उन धर्मी व्यक्तियों का-वात्सल्य-भक्ति में उनमें रहे हुए तमाम धर्मों की भक्ति खुद को भी हो जाती है। साधार्मिक भक्ति वात्सल्य यह बहुत बड़ा सुंदर गुण है। यह करने से बहुत ही आत्मिक लाभ होता है। आज के जमाने में अनेकानेक ऐसे धर्मी है जिन्हें इतिहासकारों ने भरपेट स्तुति की है। वैभववाले जिन लोग साधर्मिक भक्ति में अपना वैभव लगाते नहीं इनका जन्म व्यर्थ है।

जगत में कहा जाता है कि- ''**जिसका अन्न जुदा (अलग) उसका मन जुदा।''** साथ बैठकर खाने से एक दूसरों का परस्पर प्रेम बढ़ता है, वात्सल्य बढ़ता है और प्रेम-वात्सलय फैलाव होकर विश्वशांति तक पहुंच सकता है। साथ बैठकर खाना खाने से कम से कम लोग का मन क्लेश युक्त वातावरण से मुक्त बनता है। यदि लोगों के साथ बैठकर खाना भी नहीं खा सकते तो प्रेमवात्सल्य किस तरह बढ़ा सकेंगे ? जहां पासवाले के साथ भी शांति नहीं वहां आगे शांति कैसे बढ़ेगी ? अपने से नजदिकवाले के साथ जो शांति-समाधि नहीं रख सकता वह दूर वाले से कैसे शांत-प्रशांत- उपशांत बन सकेगा ?

जीवन में हर दिन क्षमा व पर्युषण पर्व रहे

हर साल क्षमा मांगने का अर्थ है तुम्हारे पास क्षमा नहीं है। ऐसा जीवन बनाओ कि हर पल क्षमावाणी का त्यौहार व हर दिन महापर्व हो। क्षमा मांगने की नहीं धारणा करने की चीज होती है। मांगने पर क्षमा करना क्षमा है और बिन मांगे क्षमा करना उत्तम क्षमा होती है। मांगने वाली क्षमा सीमित होती है, क्योंकि मांगने में दो ही व्यक्ति होते है, एक क्षमा मांगने वाला और एक क्षमा करने वाला। सबकी क्षमा धारण करोगे तो प्राणी मात्र पर क्षमा हो जायेगी।

भगवान श्रीमहावीर ने बनाए चार तीर्थः-

लोग उसे तीर्थ मानते हैं जहां महापुरुषों का जन्म, कल्याणक, अद्‌भूत घटना हो जाया करती है लेकिन भगवान श्रीमहावीर ऐसों को तीर्थ मानते हैं जहां हृदय में क्षमा भाव, प्रेम भाव,आपसी सौहार्द का भाव होता है। भगवान श्रीमहावीर ने चार चेतन तीर्थ माने है जिनमें **साधु, साध्वीजी, श्रावक और श्राविका यह तीर्थ नहीं होंगे तो** पाषाण के तीर्थ भी पूज्य नहीं होंगे। आपसी प्रेम व सौहार्द से सभी के दिलों को जीता जा सकता है।

हर बार क्षमावाणी मनाने की जरुरत न पड़े, ऐसा प्रयास सभी को करना चाहिए। क्षमा धर्म वही है जो समाज के पिछड़े लोगों को लगे लगाए। हाथ जोड़ने से समाज का उत्थान नहीं होगा। जैन संस्कारों की स्थापना से स्वतः ही क्षमा आ जायेगी। जिस भक्त को भगवान श्रीमहावीर की जरुरत हो तो वह स्वयं उनके पास पहुंचे।

किसने कहां क्षमा मांगीः-

साध्वीजी में त्याग के साथ-साथ ममता के दर्शन होते हैं जब जीव के अन्दर प्रेम आता है तो दूरिया कम होती है और बोलने के लिये शब्द भी नहीं जुट पाते है, प्रेम की इस अनूठी अनुभूति को प्रकट करने के लिये आंसू निकल आते हैं। क्षमा का स्वरुप देखना है तो तीर्थकरों की प्रतिमा देखिए जिन्होंने क्षमा मांगने के लिये हाथ नहीं जोड़े बल्कि हाथ पर हाथ धरे रखकर क्षमा धारण कर ली जो क्षमा धारण कर लेता है उसे क्षमा मांगनी नहीं पड़ती।

इतने सालों में हमने बटने व टूटने के अलावा क्या किया है। दिगम्बर, श्वेताम्बर, तेरहपंथी बीसपंथी, मूर्तिपूजक आदि भेदों में बंटकर बिखर गये। 2600 सालों से बटा समाज 26 साल एक होकर देख ले तो पता लग जायेगा कि हमने कितने साल बिखरने के अस्तित्व को भी खतरा रहता है। एकता के सूत्र में बंधने पर ही मजबूती आती है। जड़ के लिये जब चेतन लड़ते है तो भगवान श्रीमहावीर का धर्म जार-जार हो जाता है। कैंची काटने का और सूई जोड़ने का काम करती है। तिनका-तिनका जब एक सूत्र में बंधता है तो मजबूत रस्सी बन जाती है और जब वही तिनका अलग-अलग रहता है तो तिनके का अस्तित्व मिट जाता है। इसलिये समाज को एक जुट होना चाहिये।

क्षमा दो प्रकार की होती है- वास्तविकता क्षमा और मजबूरी की क्षमा। क्षमा मित्रों व रिश्तेदारों से नहीं बल्कि एक से पंचइन्द्री तक के जीवों से क्षमा मांगनी चाहिए। क्षमा आने पर हमारे हृदय में परिवर्तन आयेगा।

जो हृदय में क्षमा धारण कर लेगा वहीं उत्तीर्ण होगा। क्रोध धर्म को जला देता है। आत्मा को क्षमारुपी जल से धोया जा सकता है। अपेक्षा की उपेक्षा होती है तो क्रोध भड़कता है, इसलिये अपेक्षाएं नहीं रखनी चाहिये।

गुण प्राप्त करने के लिए इतना करो

पन्द्रह-बीस दिनों के लिए क्षमा का प्रयोग करो। चाहे कितने भी हो जाये, क्रोध करना ही नहीं। बीस दिनों तक क्षमा का प्रयोग करो। क्षमा आत्मसात् होने के पश्चात नम्रता सरलता, संतोष आदि एक-एक गुण लेते जाओ और पूर्ण शक्ति से उन गुणों को जीवन में उतारने का प्रयत्न करो। बीस दिनों तक प्रयोग करके देखो।

वैराग्य के पर्यायवाची

माध्यस्थ्यं वैराग्यं विरागता शांतिरुपशमः प्रथमः।
दोषक्षयः कषायविजयश्च वैराग्यपर्यायाः ॥

- श्री प्रशमरति प्रकरण

अर्थात्- मध्यस्थता, वैराग्य, विरागपन, शांति, उपशम, प्रशम, दोष का क्षय और कषाय का विजय-मूलभूत रुप से देखें तो यह सभी वैराग्य के ही पर्यायवाची है।

अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी काल

इस तीन लोक के मध्य क्षेत्र में स्थित अढ़ाई द्वीप के भारत-ऐरावत के 10 क्षेत्रों की धुरी पर ही इस संसार का काल-चक्र हमेशा घूमता रहता है। जब काल-चक्र उत्सव से निम्न काल की तरफ जाता है तो अवसर्पिणी काल कहलाता है। लेकिन जब यह नीचे से ऊपर की तरफ जाता है तो उत्सर्पिणी काल कहलाता है साथ ही 5 भरत, 5 ऐरावत 5 महाविदेह के 15 कर्मभूमि क्षेत्रों में ही तीर्थंकर प्रभु जन्म लेते हैं।

एक-एक अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी में 24-24 तीर्थकर एक-एक भरत ऐरावत क्षेत्र में होते हैं। 10 ही भारत-ऐरावत क्षेत्रों में 24-24 तीर्थकर ऐसे कुल 240 तीर्थकर समकालीन होते हैं। महाविदेह क्षेत्र में समय का चक्र चलता अवश्य है। वहां रात के बाद दिन और फिर रात होती है।

परन्तु अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी का काल-चक्र एक सा ही रहता हुआ स्थिर रहता है। अतः वहां पर अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी जैसा कुछ भी नहीं होता है।

महाविदेह क्षेत्र का समय सदाकाल एक सा ही रहता है और वहां सदैव चतुर्थ आरे के प्रारंभकाल के समान समय रहता है।

अवसर्पिणी के छः काल का समय इस तरह का होता है-

1- पहला काल चार कोड़ा-कोड़ी सागर का होता है।

2- दूसरा काल तीन कोड़ा-कोड़ी सागर का होता है।

3- तीसरा काल दो कोड़ा-कोड़ी सागर का होता है।

4- चौथा काल 42 हजार वर्ष कम एक कोड़ा-कोड़ी सागर का होता है।

5- अभी वर्तमान में चल रहा पंचमकाल 21 हजार वर्ष का होता है।

6- छठा काल 21 हजार वर्ष का होता है। इसके बाद उत्सर्पिणी के छः काल का समय इस तरह का होता हैः-

1- पहला काल 21 हजार वर्ष का होता है।

2- दूसरा काल 21 हजार वर्ष का होता है।

3- तीसरा काल 42 हजार वर्ष कम एक कोड़ा-कोड़ी सागर का होता है।

4- चौथा काल 42 हजार वर्ष कम एक कोड़ा-कोड़ी सागर का होता है।

5- अभी वर्तमान में चला रहा पंचम काल 21 हजार वर्ष का होता है।

6- छठा काल 21 हजार वर्ष का होता है। इसके बाद उत्सर्पिणी के छःकाल का समय इस तरह का होता है।

1- पहला काल 21 हजार वर्ष का होता है।

2- दूसरा काल 21 हजार वर्ष का होता है।

3- तीसरा काल 42 हजार वर्ष कम एक कोड़ा-कोड़ा सागर का होता है।

4- चौथा काल 42 हजार वर्ष कम एक कोड़ा-कोड़ी सागर का होता है।

5- अभी वर्तमान में चल रहा पंचम काल 21 हजार वर्ष का होता है।

6- छठा काल 21 हजार वर्ष का होता है। इसके बाद उत्सर्पिणा के छह काल का समय इस तरह का होता है-

1- पहला काल 21 हजार वर्ष का होता है।

2- दूसरा काल 21 हजार वर्ष का होता है।

3- तीसरा काल 42 हजार वर्ष कम एक कोड़ा-कोड़ी सागर का होता है।

4- चौथा काल दो कोड़ा-कोड़ी सागर का होता है।

5- पंचम काल तीन कोड़ा-कोड़ी सागर का होता है।

6- छठा काल चार कोड़ा-कोड़ी सागर का होता है।

इस तरह अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी के कुल काल का योग 20 कोड़ा-कोड़ी सागर का होता है। इसे एक कल्पकाल कहते हैं।

जब अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी के असंख्य कल्पकाल बीत जाते हैं, तब एक हुंडावसर्पिणी काल आता है, यह एक विशेष काल होता है और इसमें कई तरह के विरोधाभास देखने में आते है।

हम सभी शायद एक तरह से बहुत भाग्यवान है, जो अनंत-अनंत सागर बीतने पर होने वाले इस हुंडावसर्पिणी काल के साक्षी हो रहे हैं।

यहां समय की इकाई सागर का कथन बार-बार आया है, सागर समय की बहुत बड़ी इकाई होती है जिसकी कल्पना भी आज के वैज्ञानिक नहीं कर सकते है, जैन शास्त्रों में भी हर जगह इस इकाई का वर्णन अक्सर आता रहता है। इसका प्रमाण या विवरण इस तरह से हैः-

✻ अगर हम दो हजार कोस गहरे तथा इतने ही व्यास की चौड़ाई वाले गोलाकार गड्डे में कैंची से जिसके दो टुकड़े न हो सके ऐसे एक से सात दिन की उम्र के उत्तम भोगभूमि के मेंढ़े के बालों से भर दे और फिर उसमें से सौ-सौ वर्ष के अंतर से एक-एक बाल निकालें, तो जितने काल में उन सब बालों को निकाल दिया जायेगा, उसे एक व्यवहारपल्य कहते है; व्यवहारपल्य से असंख्यातगुने समय को उद्धारपल्य और उद्धारपल्य से असंख्यातगुने काल को अद्धापल्य कहते हैं। इस तरह के दस कोड़ाकोड़ी (10 करोड़ गुणा 10 करोड़) अद्धापल्यों का एक सागर होता है। इसको अगर आप सरल तरीके से समझना चाहे, तो इस तरह से समझ सकते है- किसी भी समुद्र के किनारे पर जाकर बैठ जाइए, फिर एक सुई को हाथ में लेकर उस सुई की नोक को पानी में डालकर उसे सूखी रेत पर छिड़के फिर दुबारा सुई की नोक को पानी में डालकर उसे सूखी रेत पर छिड़के, इस तरह अनवरत रुप से करते रहे। जब वह सागर पूरी तरह से खत्म हो जाएगा, तो समझना कि एक सागर बराबर समय बीत गया है।

आकाशगामी विद्या से पुष्प लाकर पर्युषण महोत्सव किया

✻ शांतिलाल सगरावत, मंदसौर

एक समय बारह वर्षीय दुष्काल पड़ने से सकल संघ अत्यन्त व्याकुल हो गया। यह देखकर वज्रस्वामी जिन्होंने

य: पालनस्थ: श्रुतमध्यगीष्ठ,
षाणमासको यश्चरिताभिलाषी।
त्रिवार्षिक संघममानयद्य:
श्री वज्रनेता न कशं नमस्य: ।।

झुले में सोते सोते श्रुत का अभ्यास किया। जो छह महिने की आयु में ही चारित्र ग्रहण करने का अभिलाषी रहे और तीन वर्ष की आयु में ही संघ को मान दिया। उस वज्रस्वामी ने सर्व संघ को एक कपड़े पर बिठाकर आकाशगामिनी विद्या के बल के साथ सुभिक्षापुरी ले गये। वहां रहते हुए दिवस निर्गमन होने पर पर्युषण पर्व आया।

उस समय उस नगरी के राजा ने बोद्ध धर्मी होने से वहां जिनालय के लिये पुष्प देने का निषेध कर दिया। यह बात संघ ने वज्रस्वामी से निवेदन की। एतदर्थ सूरिवज्रस्वामी आकाशगामी विद्या द्वारा माहेश्वरीपुरी गये। वहां पर उनके पिता का मित्र एक माली रहता था, जिससे पर्युषण महापर्व की बात कहकर पुष्प प्रदान करने को कहा। उसने इक्कीस करोड़ पुष्प एकत्रित कर भेंट किये जिनको लेकर वज्रस्वामी हिमवान पर्वत पर पहुंचे। वहां लक्ष्मीदेवी ने बड़ा कमल प्रदान किया जिसको लेकर वहां से हुताशन यक्ष के वन में आते हुए उससे अनेकों पुष्प भेंट किये। उन सब पुष्पों को लेकर पूर्व भव के मित्र जृंभक देव द्वारा रचित विमाने में बैठकर सूरिवज्र स्वामी आकाशमार्ग से वापस सुभिक्षापुरी में आ गये और उन पुष्पों से पर्युषण महोत्सव किया। इससे जिनधर्म की प्रभावना हुई, जिनको देखकर आश्चर्यचकित हो राजा बोद्ध धर्म छोड़कर जैन श्रावक बन गया।

ईमानदारी का पालन

अठारहवीं सदी में गुजरात में भीषण अकाल पड़ा। चारों ओर हाहाकार मच गया। मनुष्य, पशु-पक्षी सभी भूख से तड़प-तड़पकर मरने लगे।

गुजरात के राजा ने साधु-संतों से यज्ञानुष्ठान करने की प्रार्थना की। स्वयं भी बड़े-बड़े ज्ञानी पंडितों को लेकर अनेक यज्ञ किये, फिर भी वर्षा नहीं हुई। प्रजा के दुःख को देखकर राजा व्याकुल हो उठा। आँखों में आँसू भरकर स्वयं भगवान से प्रार्थना करने लगा। एक दिन प्रार्थनारत राजा के सामने एक संन्यासी प्रकट हुआ और सांत्वना के स्वर में बोला- राजन् ! चिंता मत करो। आपके राज्य में अमुक व्यापारी रहता है, यदि वह चाहे तो वर्षा हो सकती है।

राजा स्वयं चलकर व्यापारी के घर पहुंचे और उससे वर्षा कराने के लिये निवेदन करने लगे। पहले तो व्यापारी ने कुछ करने से आना-कानी की परन्तु राजा की विनय और मनुष्यों के दुःख को देखकर उसका हृदय द्रवित हो उठा। उसने राजा से कहा- राजन् ! आप धैर्य धारण करें। मैं जलवृष्टि के लिये अवश्य उपाय करूंगा।

व्यापारी ने अपनी तराजू उठा ली और बाहर निकलकर बोल उठा, हे इंद्रदेव ! यदि इस तराजू से मैंने कभी कम या अधिक न तोला हो, सदा ईमानदारी का पालन किया हो तो देवराज इंद्र आप अवश्य जलवृष्टि करें। व्यापारी का इतना कहना था कि आकाश में बादल आ गए और घनघोर वर्षा होने लगी। चारों ओर जल-ही-जल भर गया। लोग हर्ष से नाच उठे।

क्षमा और पश्चाताप

✻ सुनील काला, औरंगाबाद

हर धर्म में क्षमा को अनन्य साधारण महत्व है। सही धर्म वही जो हमेशा सुधार करने में विश्वास रखता हो। इसीलिए गुनाहगार को सजा देने के बजाय उसे सुधारने का मौका देने में धर्म या भगवान को ज्यादा रुची होती है। आदमी गलती करेगा,गलती करते-करते सिखेगा और सुधरते जायेगा इसी विचार पर क्षमा का तत्वज्ञान निर्भर है। अंग्रेजी में एक कहावत है,''**टू एरर इज ह्यूमन, टू फरगीव्य डिव्हाईन।**'' सच देखा जाये तो क्षमा करना ये मानव का गुणधर्म है। इस कहावत में जो अर्थ छुपा है वह ये निश्चित करता है कि गलती सुधारना यह इन्सान का कर्त्तव्य है। संत तुकाराम कहते है, दया,क्षमा, शांति,वहां भगवंत की निवास। दयावान क्षमाकर्ता ये शोभ दूर कर शांति निर्माण करनेवाला भगवान का अवतार होता है। क्षमायाचक ये क्षमा करता इतना ही उदार और दिलदार होना चाहिये। क्षमा का पावित्र्य संभालना ये दोनों की जिम्मेदारी होती है। क्षमा किये ये क्षमकर्ता ने तुरन्त भूलना चाहिये और क्षमा प्राप्त ने अपने आप को सुधारना प्रारंभ करना चाहिये। इसलिये कहा जाता है,''**फर्गिव्य अँड फर्गेट।**''

जैन धर्म की गयी क्षमा,प्राप्त की हुई क्षमा और स्वाभाविक क्षमा ऐसे तीन प्रकार होते है। महात्मा गांधीजी सत्य-अहिंसा-क्षमा इस तत्वज्ञान को बड़े नैतिक ऊंचाई पर ले गये। गलती करने वाले इन्सान को उन्होंने क्षमा की लेकिन उसी वक्त व्यवस्था के विरुद्ध सत्याग्रही संघर्ष भी किया। उन पर अन्याय करनेवाले पुलिस और अधिकारियों को उन्होंने क्षमा की। जिन्होंने गुनाह, गलतियां की उनके नाम भी आज नहीं लिये जाते लेकिन क्षमा करनेवाले महात्मा गांधी को इस दुनिया ने उच्चें स्थान पर बिठाया। जिन्होंने सुली पर चढ़ाया उनके बारे में मन में कोई भी कटु भाव ना रखते हुए येशू ने उन्हें क्षमा की और भगवान भी उन्हें क्षमा करें, ऐसी प्रार्थना मृत्यु का सामना करते हुए की।

इतनी देवालय और न्यायालय होने के बाद भी सभी तरफ गुनाहों की संख्या बढ़ते ही जा रही है। कई बार गुनाह गलती से होता है तो कई बार जानबुझकर किया जाता है। किसी को किये हुए गुनाहों पर पश्चाताप होता है तो किसी को कुछ भी नहीं लगता। पश्चाताप होता है तो किसी को कुछ भी नहीं लगता। पश्चाताप को कॅथर्सिक इफेक्ट होता है। इसीलिये पश्चाताप ये पापक्षालन की पहेली स्टेप होती है। किसी खूनी के दिल में क्रोध और बदले की भावना इतनी तीव्र होती है कि खून करते वक्त वह बिलकुल जानवर बन जाता है। लेकिन खून करने के बाद वो भागने लगता है,खुद को छुपाने की कोशिश करता है। किसी का खून उसने बहाया होता है और वो खून ही उसका पीछा नहीं छोड़ता। वह खून ही उसे गुनाह की स्वीकृति देने को मजबूर करता है। किसी भी वैद्यकीय या न्यायालयीन उपायों से जो साध्य नहीं हो सकता वो पश्चाताप से साध्य होता है।

बायबल में एक बोधकथा है,''एक आदमी होता है और उसके दो बच्चे होते है। उसके पास थोड़ी खेती भी होती है। खेत में कुछ काम होता है तो वो बड़े बच्चे को वो करने को कहता है, लेकिन वो पहले तो काम करने से मना करता है लेकिन बाद में उसे पश्चाताप होता है और वो काम कर देता है। दूसरे दिन वो अपने छोटे बच्चे को काम करने के लिये कहता है तो वो तुरन्त मान लेता है लेकिन काम नहीं करता। यहां पर पहले लड़के ने पहले काम से इंकार कर तो पिता की आज्ञा का भंग किया लेकिन बाद सकरात्मक कृती की। दूसरे ने शाब्दिक मान्यता दी लेकिन काम नहीं किया। इन दोनों लड़कों में सही कौन ये निश्चित करना मुश्किल था। इस पर येशू ख्रिस्त ने कहा कि पहला लड़का सही है क्योंकि पहले ने इन्कार करने के बाद पश्चाताप होने के कारण उसने सही कृती की। इंसान के नैतिक और मानसिक विकास में क्षमा और पश्चाताप को बहुत ही महत्व का स्थान है। क्षमा करना मतलब गलती या गुनाह पर परदा डालना तो पश्चाताप का मतलब होता है उस गुनाह पर से परदा उठाना।

अनहोनी को होनी कर दे-तप

उज्जुअं दुल्लहं पि तह सुलहं।
दुस्सज्झं पि सुसज्झं तवेण संपज्जए कज्जं ॥

- श्री तप कुलक

अर्थात्- तप साधना से अस्थिर कार्य भी स्थिर होते हैं, अटपटे कार्य सीधे होते हैं, दुर्लभ हो तो सुलभ और दु:साध्य कार्य भी सुसाध्य होते हैं।

आध्यात्मिक पर्युषण पर्व एवं क्षमापना

✲ श्रीमती प्रभा जैन, देवास

आज इस समय सावन का महिना चल रहा है, शीघ्र ही भाद्र माह का पर्दापण होने जा रहा है। बरसात से प्रकृति की शीतलता बढ़ गई है, चारों ओर प्रकृति से हरियाली ही हरियाली का वातावरण बनाया जो मन को उत्साहित, प्रफुलित कर रहा है, नदी, नाले , तालाब सभी के अपने मिजाज के प्रकृति का कण-कण मुस्करा रहा है।

ऐसे ही खूबसूरत वातावरण में आता है पर्युषण पर्व के पांचवें दिन हम मनाते है भगवान महावीर महोत्सव। जो वीर प्रभु विश्व वंदनीय है, हमारे सभी के मन मस्तिष्क में विराजमान है। पर्युषण पर्व के आठवें दिन मनाते है ''संवत्सरी पर्व''। पर्युषण पर्व'' कुछ नियम, उपनियम, ---, संयम तप अपरिग्रह की भावना लिये आता है।

पर्युषण पर्व में क्षमा-पर्व आध्यात्मक का मधुर संगीत लिए होता है, यह मिच्छामि दुक्कड़म् का दिन, क्षमापना के अवसर का दिन, रुटे हुए को मनाने का दिन, वर्ष भर में किये पापों को धोने का दिन, अपनी गलती को स्वीकारने का दिन, वार्षिक प्रतिक्रमण कर चौरियासी लाख जीव योनि से क्षमा मांगने का दिन।

परन्तु प्रश्न उठता है, क्षमा क्या है ?

मानव मात्र से भूल हो जाना स्वाभाविक है, छोटी-छोटी बातों में आवेश में आ जाना सामान्य बात है। किसी को बुरा भला कहा हो, किसी के मन को ठेस पहुंची हो तो ''क्षमा'' एक ऐसा अमृत है जिसके दो अक्षर बोल देने से हमारी आत्मा व सामने वाले की आत्मा हल्की हो जाती है। पर्युषण पर्व भौतिकता एवं आध्यात्मिक का शरीर और आत्मा का मिलन करता है। यह शिरोमणी पर्व हमें संदेश देता है कि हम अपने जीवन में अहंकार को न आने दे और स्वाभिमान को जीवन से न जाने दे। पर्युषण पर्व में क्षमा पर्व आत्मा को श्रृंगारित करने का पर्व है, मन की कटुता , वैमनस्य, राग-द्वेष-निंदा को मिटाने का पर्व है। इस संसार में हमारी आत्मा नित्य है, शेष सभी क्षण भंगुर है, इस जिंदगी का एक पल का भी भरोसा नहीं, कब सांस रुक जाए तो हम अपने विचारों को शुभ बनाये, शुभ मन, शुभ विचार, शुभ क्रियाएं मानव जीवन को सफल, सार्थकता की ओर अग्रसर करती है। अवनि का अमृत क्षमा है, क्षमा धर्म का प्राण है, आगम का सार है, जीव मैत्री का प्रथम सोपान है, आत्म शुद्धि का द्वार है, जैनत्व की पहचान है।

क्षमापना जीवन का सुंदर द्वार है।
क्षमापना जीवन की वसंत बहार है॥
क्षमापना हृदय की विशालता का नाम है।
क्षमापना ही जीवन का सार, उपकार है॥

दो पल की जिंदगी से बिखरे हम खुशबू की तरह किसी को क्षमा देना सबसे बड़ा -- क्षमा लेना व देना ही सम्मानि। आज के भौतिक युग में क्षमा पर्व औपचारिकता बनकर न रह जाए, क्षमा है बोलचाल बंद है, उनसे करना है, प्राणी मात्र से करना है। तभी हमारी सही क्षमा होगी। इसका हम चिंतन, मनन, अवलोकन करें।

अंत में यही कहूंगी-

पर्व बहुत, शिरोमणी पर्व पर्युषण श्रेष्ठ,
सभी पंथ व धर्म में मोहमार्ग श्रेष्ठ।
राग-द्वेष से रहित मानव जीवन श्रेष्ठ,
आत्मा की शुद्धि के लिये क्षमापना पर्व श्रेष्ठ॥

✲ पारिवारिक विग्रह से भरे वातावरण में पेरिस में जन्मे आंद्रे मालरो (1901) एक चोरी के आरोप में पकड़े गये और तीन वर्ष की कैद हो गई। जेल में बैठे-बैठे माता-पिता और पत्नी के स्नेह से वंचित रह गए इस व्यक्ति ने एक अन्य कैदी से प्रेरणा लेकर लिखाना शुरु किया।1925 में कैंटन में हुए विद्रोह की पृष्ठभूमि पर लिखे उपन्यास ''दि कॉकरा'' ने यह अंतरर्राष्ट्रीय ख्याति दे दी। सन् 1930 से 1931 तक उन्होंने यूरोप में फासीवाद के विरुद्ध एक विचार-क्रांति आंदोलन भी शुरु किया। फ्रेंच साहित्य में आंद्रे की लिखी 12 पुस्तकें अमूल्य निधि मानी जाती हैं। उनकी अधिकांश कृतियां पुरस्कृत हुई। फ्रांस के राष्ट्रपति चार्ल्स दगाल ने उन्हें संस्कृति मंत्री भी बनाया। 11 वर्ष तक वे उस पद पर रहकर 1976 में मृत्यु को प्राप्त हुए। मनुष्य चाहे तो प्रतिकूलताओं में जाकर भी शीर्ष पर पहुंच सकता है।

।। श्री परमात्माय नमः ।।

शेठ नगीनचंद कपुरचंद झवेरीना प्रयासथी

जीवदया फंड

श्री नगीनचंद कपुरचंद झवेरी

सुभाष चौक, गोपीपुरा, सुरत - 1
मो.: 09825414470 / 9820078772
स्थापना वि. सं. 1962
इ.स. 1906 रजि. नं.- 1744
PAN : AAATS8024L

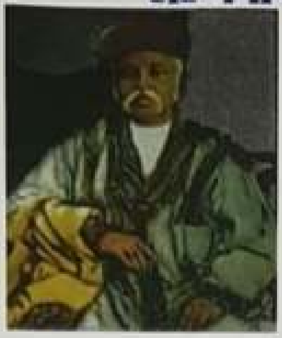

पैसा भेजने का पता :

प्रफुल अमीचंद झवेरी

26, खटाऊवाडी, गोरेगांवकर लेन,
सेन्ट्रल सिनेमानी पाछळ,
मुंबई - 400 004.
ऑफिस फोन : 2387 8476
मोबाईल : 98200 78772

धर्मप्रेमी सद्गृहस्थश्री, सादर प्रणाम !

जीवदया फंड संस्था सुरत के दानवीर शेठ श्री नगीनचंद कपुरचंद झवेरी के प्रयासो के द्वारा स्थापित एक रजीस्टर्ड ट्रस्ट है। यह जीवदया फंड संस्था के द्वारा कतल के लीये जानेवाले और बीन उपयोगी जीवो को छुडवाकर के सुरत की पांजरापोल में भेजा जाता है। यह कार्य पीछले ११४ सालो से यह संस्था कर रही है । ओर शेठश्री के उत्तम पुन्यबल की वजह से यह कार्य के अंदर लगातार प्रतिवर्ष प्रगति हो रही है । जैसे की पीछले पांच सालो के दौरान (एप्रील - २०१४ से मार्च - २०१९) १०७९८ जीवो को छुडाया / बचाया गया है ।

हमारे आंगन में आनेवाले बेझुबान जीवो को पांजरापोल के अंदर ट्रस्टीओ के द्वारा नीगरानी करके सोंपा जाता है । ओर पशु के संपूर्ण जीवनकाल तक उनको संभालकर रखा जाता है ।

अनंत दया के सागर भगवान श्री महावीर प्रभु के शासन के दो स्तंभ है । अहिंसा ओर जीव के उपर मैत्री । सर्वज्ञश्री के यह संदेश को सार्थक करने के लिये दीनो का भी बहुत बडा महत्व है । जैसे की

आपके परिवार के कोई भी सभ्य का जन्मदिन
पशु परिवार के एक सभ्य को जीवनदान देकर मना सकते है ।

आपके परिवार मे आये हुए शुभ लग्नोत्सव के दीन
एक पशु युगल को जीवनदान देकर उनका जीवन उत्सवमय बना सकते है ।

कर्मसंयोग के कारन आई हुई बीमारी का दुःख ओर अशाता को टालने के लीये
कोई पशु को अभयदान प्रदान करके महाशाता का सुख प्रदान करे ।

अपने स्वजन के मृत्यु के दुःखद समय में एक पशु को
मृत्यु के मुखमें से छुडवाने से आपश्री को सांत्वना भी प्राप्त होती है ओर आपके स्वजन की सदगति प्राप्ती की प्रार्थना भी कर सकते है ।

पवित्र पर्व के धर्मोत्सव के समय एक जीवको
जीवनदान देकर पर्व उपासना को दया ओर करुणामय बनाये ।

आपश्री हंमेशा के लीये तिथि का भी चयन कर सकते है। यह तिथि के दीन दान में दी गई रकम का जो ब्याज मीलता है उसमें से जीव को छुडवाया जायेगा ।

यह संस्था के द्वारा एप्रील २०२० से मार्च २०२१ के एक वर्ष के समय जो की लोकडाउन था, उस समय में कुल २५९१ जीवो को छुडवाया गया है ।

आपश्री चेक या ड्राफ्ट जीवदया फंड के नाम का बनाए। रोकड रकम में भी आप योगदान दे सकते है। (आपश्री का अनमोल योगदान सुरत ओर मुंबई में उपर दिये गये पते पर भीजवा सकते है।)

आपश्री आपका योगदान हमारे बेन्क खाते के अंदर भी जमा करवा सकते है । जीसकी जानकारी नीचे दी गई है। हमारी संस्था का 80-G नंबर AAATS 8024 LF 20210 है ।

Bank Name	: AXIS BANK LTD.	Bank Name	: BANK OF INDIA
A/c. Name	: JIVDAYA FUND	A/c. Name	: JIVDAYA FUND
IFSC	: UTIB0002274	IFSC	: BKID000001
A/c. No.	: 921010033621820	A/c. No.	: 00120100001219
Branch	: Charni Rd, Mumbai	Branch	: Mumbai Main Branch

जीवदया की शुभ भावना से कीये हुए कार्य से अक्षय सुख ओर मोक्षमार्ग की प्राप्ति होती है ओर नरकगति के कर्म का ओर अनेक भवो के पापो का क्षय भी जीवदया का कार्य करने से होता है। जीवदया का कार्य तीनो लोकमें श्रेष्ठ ओर सर्वोत्तम कार्य है ।

दान अेज सफल जीवन

लि. ट्रस्टीगण

प्रफुल अमीचंद झवेरी
पुष्पसेनभाई पानाचंद झवेरी
विरेन्द्र नेमचंद झवेरी

नलीनभाई फकीरचंद
शरदभाई गुलाबचंद कांटावाला
उषाकांत साकेरचंद झवेरी

वर्ग पहेली क्रमांक-352

✻ प्रस्तुति :- जयंतीलाल जैन, रतलाम (म.प्र.)

1	2		■	3	■	4	■	5
6		■	7		8		■	
	■	9		■	10		■	
11	12			13	■	14	15	
■		■	16		17	■		■
18	■	19	■	20		21		22
	■	23	24	■	25		■	
26				27		■	28	
	■		■		■	29		

बाएं से दाएं:-

1- श्री वीरचंद राघवजी गांधी का जन्म स्थल....(3)

6- पालिताना के निकट बोदानोनेस के पास की पहाड़ी जहां आदिश्वर भगवान की अति विशाल सुंदर प्रतिमा है : क.... गिरि (2)

7- जग मां तीरथ दोय बड़ा, शत्रुंजय.... एक गढ़ ऋषभ समोसर्या एक गढ़ नेम कुमार (4)

9- भ.अभिनंदन स्वामी का चिन्ह वा.... (2)

10- पार्श्व प्रभु पर कमठ के भयंकर उपसर्ग का निवारण .... राज धरणेन्द्र व माता पद्मावती ने किया था (2)

11- शत्रुंजय पर्वत का ही एक नाम.... (5)

14- धार जिले में सम्प्रति राजा द्वारा प्रतिष्ठित भ. आदिनाथ का मंदिर यहां है : ब.... र (3)

16- विभाजन का पर्यायवाची : बं.... (3)

20- फलौदी नगरी का प्राचीन नाम वि.... तन (4,1)

23- श्री नाकोड़ा तीर्थ के अधिष्ठा.... देव है श्री नाकोड़ा भैरव देव (2)

25- खेड़ा व नडियाद के निकट सांचा देव सुमतिनाथ का कलापूर्ण मंदिर यहां है : मा.... (2)

26- भ.अभिनंदन स्वामी का जीव तीसरे भव में इस लोक से च्यवकर राणीसिद्धार्था की कोख में आया था (3,3)

28- ज्योतिष की बारह राशियों में से प्रथम....(2)

29- नौ प्रतिवासुदेव में से एक (3)

वर्ग पहेली क्रमांक-351 का परिणाम

आ	दे	श्व	र	■	म	हा	भ	द्र
य	■	रा	ज	न	ग	■	ण्डा	■
इ	म	■	■	■	धा	न	र	थ
■	सु	द	र्श	ना	■	न्दी	■	म
य	■	र्प	■	भि	■	षे	■	ण
मु	■	ण	■	रा	व	ण	पा	■
ना	म	■	स्ना	■	र्ध	■	न	श्व
■	हि	■	त	कु	मा	र	■	र
अ	मा	व	स्या	■	न	व	र	त्न

ऊपर से नीचे:-

1- सुदर्शनपुर नरेश मणिरथ के भाई युगबाहु की पत्नी का नाम.... खा (4)

2- कर्नाटक के शिमोगा जिले में स्थित पार्श्व प्रभु व माता पद्मावती माता का तीर्थ....ज (2)

3- मत कर माया को अहंकार, मत कर काया को अभिमान, काया.... से काची (2)

4- मध्यप्रदेश का राजकीय वृक्ष.... (4)

5- एक ही रात में भ.महावीर पर बीस उपसर्ग करनेवाला सं....(4)

7- तेजी से रंग बदलने वाला सरीसृप श्रेणी का जीव (4)

8- केक राजा रिश्ते में भ.महावीर के.... होते थे (2)

9- बारह चक्रवर्ती में से एक स....कुमार (2)

12- नवपद में अरिहंत प्रभु का.... श्वेत होता है (2)

13- परम्परा का पर्यायवाची शब्द (3)

15- प्रसिद्ध मकराना मारबल इस जिले में होता है (3)

17- बिहार के नालंदा में प्रसिद्ध जैन संस्थान वी.... (4)

18- सीतामउ के नवीन जिनालय का नाम.... न्दिर (3,1)

19- सम्मेद शिखरजी की तलहटी में स्थापित होने जा रहा 14 गुण स्थानों को विवेचित करने वाले धर्मायतन का नाम गु.... (4)

21- भ.शांतिनाथ की जन्म स्थली हस्तिना.... (2)

22- जैन धर्म का महा पर्व.... (4)

24- कवि कालिदास चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के राज.... थे (2)

27- कहावत है दुविधा में दोनों गए.... मिली न राम (2)

28- त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्व....बंधुश्च सखा त्वमेव (2)

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-352

✻ आचार्य प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.

प्रश्न- सभी के उत्तर काना-मात्रा के बिना के 4 अक्षर में दो ?

1- संगीत की धून, 2- भुज परिसर्प एक प्राणी, 3- हिंसक में से अहिंसक बननेवाला राजा, 4- प्रभु के मुख्य शिष्य, 5- अंतिम राजर्षि 6- एक सम्यक्तव का भाग, 7- एक गच्छ का नाम, 8- मन किसके जैसा है, 9- चौवदा में से एक स्वप्न 10- श्रीपाल मयणा का प्रिय 11- चारों आहार का त्याग, 12- जीवों के प्रति प्रेम होना चाहिये....नहि।

✻ रामकृष्ण परमहंस से एक बार उनके एक परिचित ने पूछा– महाराज, आप अपनी पत्नी के साथ गृहस्थ जीवन क्यों नहीं बिताते ? प्रश्न सुनकर परमहंस कुछ पल चुप रहे, फिर मुस्कराते हुए बोले कि तुमने कार्तिकेय का किस्सा सुना है ? एक दिन बालक कार्तिकेय ने खेल–खेल में एक बिल्ली को नोंच–खरोंच दिया। घर आए, तो अपनी माँ का मुख देखकर हैरान रह गए। माँ के गालों पर नाखूनों की खरोच के वैसे ही निशान पड़े थे। कार्तिकेय ने आश्चर्य से खरोंच के निशानों का कारण पूछा, तो माँ बोली, बेटा यह तेरा ही कार्य है। तूने ही तो अपने नाखूनों से मुझे नोंचा है।मैंने नोंचा है ? बालक कार्तिकेय का आश्चर्य और बढ़ा। अविश्वास के स्वर में बोला– मैंने तुमको कब नोंचा ?

क्यों, भूल गया क्या ? आज तूने बिल्ली को नोंचा–खरोंचा नहीं था ? बिल्ली को तो जरुर नोंचा था.... कार्तिकेय ने उसी स्वर में कहा, लेकिन तुम्हारे गालों पर निशान कैसे पड़ गए ? अरे बेटा, माँ बोली, मेरे सिवा इस संसार में और है ही कौन ? सारा संसार मेरा ही स्वरूप है। यदि तू किसी को सताता है, तो मुझे ही तो सताता है।

कार्तिकेय से कुछ कहते न बना। निश्चय कर लिया उसने, मैं विवाह ही नहीं करुंगा। संसार की सब स्त्रियां जब मातृवत् हैं, तो विवाह करूँ भी तो किसके साथ ?

रामकृष्ण ने इतना कहकर कारण बताया, कार्तिकेय के समान मेरे लिए भी संसार की सारी स्त्रियाँ मेरी माँ के समान हैं। तुम्हीं बताओ, गृहस्थ जीवन किसके साथ बिताऊँ ?

वर्ग पहेली क्रमांक-351 के परिणाम

विजेताः-

1- श्रीमती प्रभा जैन, देवास (म.प्र.) - प्रथम
2- कृष्णकुमार जालोरी, विदिशा (म.प्र.) - द्वितीय
3- श्रीमती विद्या संघवी, बदनावर (म.प्र.)- तृतीय

इनके भी उत्तर सही थेः-

भारती जैन, देवास, श्रीमती चंदनबाला जैन, देवास, श्रीमती कुसुम गौतम जैन, आगर, अनाम।

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-351 के परिणाम

सही उत्तर-

1- विनय विजयजी, 2- धर्मदासगणिजी, 3- रत्नशेखरसूरि, 4- धनपाल कवि, 5- मल्ल मुनिजी 6- शय्यंभवसूरिजी, 7- यशोविजयजी, 8- सिध्दर्षि गणिजी, 9- उमास्वातिजी, 10- लक्ष्मी सूरिजी, 11-भद्रबाहुस्वामीजी, 12-शांतिसूरिजी म.

नोटः- इस बार ज्ञानगंगोत्री में एक भी विजेता के उत्तर सही नहीं थे।

नोट- पोस्टकार्ड पर अपने पते के साथ शहर के पिनकोड नंबर, मोबाईल नंबर अवश्य डालें।

प्रिय पाठकों! उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर हमें पोस्टकार्ड पर लिखकर हमें दिनांक 25-9-2024 तक भेज दीजिये। सही उत्तरों में से लक्की ड्रा निकालकर प्रथम तीन को क्रमशः51/-, 31/-, 21/- रूपये की राशि से सम्मानित किया जायेगा साथ ही उत्तीर्ण होने वालों के नाम ''आगमोद्धारक'' मासिक में प्रकाशित किये जायेंगे। भेंट राशि एम.ओ. द्वारा भेजी जायेगी। - सम्पादक

सूचना– अब पहेली के लिये ड्रा द्वारा प्रोत्साहन राशि पुरस्कार में दी जायेगी। इसके लिये ड्रा निकालकर क्रमशः तीन पुरस्कार तीन विजेताओं को रुपये 31/-, 21/-, 11/- एम.ओ.भेजे जावेंगे। सही उत्तरवाले नाम हम छापेंगे ही। आप सहयोग बनाये रखिये। धन्यवाद।

36 करोड़ नमो आयरियाणं भव्य जाप जैनाचार्यश्री महासेनसूरी की प्रेरणा से

बेंगलोर- पू. आचार्य श्री लब्धि सूरी जी म.सा. की दिव्य कृपा से बैंगलोर जयनगर संघ की विनंति को मान देकर पूज्य शंखेश्वर प्रेमी आचार्य श्री महासेन सूरीजी म.सा. साध्वी विरतिपूर्णा श्रीजी आदि शिष्यमंडल शिमोगा श्रीआदिनाथ प्रभु आदि अंजन-प्रतिष्ठा उत्सव, दावणगिरि संघ में दीक्षा-चैत्र ओली आराधना, आखातीज पारणा कर चित्र दुर्ग-टुमकुर आदि संघ को लाभ देकर बेंगलोर पधारे। जयनगर, राजाजी नगर आदि -10 संघों में पधारकर श्री पार्श्व सुशील धाम आ.श्री अमरसेनसूरी जी म. की वंदनार्थे तबीयत की शाता पूछाकर असाढ़ सुदि-9, तारीख 15 जुलाई को श्री राजस्थान जैन संघ में चौमासा हेतु धूमधाम से शुभ मुर्हूत में प्रवेश हुआ। ✻ अषाढ़ सुदि-11 को कर्णाटक केशरी आ.भद्रंकरसूरीजी महाराज दीक्षा तिथि गुणानुवाद एवं आ.श्री विज्ञानप्रभसूरी समुदायवर्ती 6 नूतन साध्वीजी की बड़ी दीक्षा पूज्यश्री के हस्ते हुई, कामली वहोराने का चढ़ावा हुआ, संघ पूजा हुआ।✻ अषाढ़सुदि-14-चौमासी चौदस आराधना, देववंदन-प्रतिक्रमण तथा 20 विहरमान तप प्रारंभ हुआ, 200 आराधक जुड़े, सूत्र के चढ़ावे हुए। ✻ अषाढ़ वदि-2 को ग्रंथपूजा व्होराना ग्रंथवाचन प्रारंभ हुआ। ग्रंथ व्होराने का चढ़ावा धर्मीबाई पुखराजजी बोहरा तथा ज्ञान पूजन-अष्टप्रकारी पूजा के लाभ भाविकों ने लिया। ✻ शनिवार को महिला शिविर तथा रविवार को बच्चों की संस्कार शिविर चालू है, 100 दिन में 68 बियासणा करने कई बच्चे जुड़े है, सम्मान होगा। ✻ श्री संघ में नवकार कलश अनुष्ठान प्रारंभ, दैनिक पांच माला गिनना, 200 आराधक जुड़े है, सवा करोड़नवकार जाप होगा। ✻ दादा गुरुदेव श्री लब्धिसूरि की सूरिपद शताब्दी निमित्त समस्त बेंगलोर में **''नमो आयरियणं'' पद का 36 करोड़ का जाप अनुष्ठान**, सन्मान होगा।

रेसकोर्स रोड़ पर विशिष्ट प्रवचन हुए

इन्दौर- दिनांक 18 अगस्त को रेसकोस रोज स्थित आगमोद्धारक आराधना भवन उपाश्रय में चातुमार्सिक आराधना के लिये विराजित पूज्य गणिवर्य श्री पद्मचंद्रसागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में विशिष्टप्रवचन का आयोजन किया गया। ''भरत चक्रवर्ती जैसी ऋद्धि हो जो बाहुबली जैसा बल होजो'' विषय पर हुए प्रवचन में बड़ी संख्या में धर्मिष्ठों की उपस्थिति रही।

बाबुलनाथ संघ में श्री मणिभद्र पूजन हुआ

मुंबई- श्री बाबुलनाथ संघ में चातुमार्सिक आराधना के लिये विराजमान आचार्य भगवंत श्री मतिचंद्र सागरसूरीजी महाराज एवं मुनिश्री श्रुतचंद्रसागरजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में दिनांक 15 अगस्त को तपागच्छ अधिष्ठायक देव मणिभद्रवीर के हवन तथा महापूजन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री मणिभद्र दादा की अष्ट प्रकार पूजन हुई तथा 108 लाल गुलाब वासक्षेप से पूजन की गई।

डूंगरपुर में सागरजी जन्म जयंति मनी

डूंगरपुर-मुनिराज श्री मुनिरत्न सागर म.सा. एवं पवित्ररत्न सागर महाराज म.सा.आदि ठाणा के सानिध्य मे अखाण्ड 2200 आयंबिल के आराधक अध्यात्मयोगी श्री मुनिराज श्री मुनिरत्नसागरमें श्री गंभीरा पार्श्वनाथ पार्श्वनाथ श्री संघ में आगमोद्धारक श्री सागरजी म.सा. की 150 वीं जन्म जयंति पर 45 आगम नाम कंठस्थ करने का आयोजन रखा गया। यह आयोजन 6 से 16 वर्ष के बच्चों के लिये रखा गया था।

बलसाड़ में सामूहिक अट्ठाई का आयोजन

बलसाड़- पूज्य मुनिराज श्री जयचन्द्रसागरजी म.सा.एवं साध्वी श्री नयगुणा श्रीजी म.सा.आदि ठाणा की पावन प्रेरणा से सामुहिक अट्ठाई का आयोजन होने जा रहा है। अट्ठाई का आरंभ 31 अगस्त को तथा पूर्णाहुति दिनांक 7 सितंबर को होने के बाद पारणा 8 सितंबर को होगा।

कोढ्वा में श्री नाकोड़ा भैरवजी महापूजन

पूना- यहां श्री राजगृही श्वेतांबर मूर्तिपूजक श्रीसंघ कोढ्वा में चार्तुमार्सिक आराधना के लिये विराजमान पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री हर्षसागर सूरीजी महाराजा के सुशिष्य आचार्यश्री विराग सागर सूरीजी महाराज आदि ठाणा की निश्रा में श्री नाकोड़ा भैरव महापूजन का भव्य आयोजन हुआ। 25 अगस्त को इस पूजन का आयोजन आगमोद्धारक नगरी में किया गया।

शासन समाचार

जैनं जयति शासनम्

युवा जैनाचार्यश्री विश्वरत्नसागरजी महाराजा की की प्रेरणा से पूज्यपाद आगमोद्धारकश्री के 150 वें जन्मदिन पर मालवा के श्रीसंघ में आगम रथ यात्रा के आयोजन से अद्भूत गुरु भक्ति का परिचय मिला

- ✻ श्री शांतिधारा तप के साथ मांत्रिक अनुष्ठान हुए।
- ✻ सामूहिक सिद्धि तप का आयोजन भी हुआ।
- ✻ साध्वीश्री सिद्धांतज्योतिश्रीजी ने 82 वीं वर्धमान तप की ओली पूर्ण की।
- ✻ पश्चाताप का झरना : 18 पाप स्थानक पर अतुलनीय प्रवचन हुए।
- ✻ युवा जैनाचार्य की प्रेरणा से 151000 सामायिक का रिकार्ड टूटा : इससे कहीं अधिक सामायिक हुई।
- ✻ मुनिराज श्री कीर्तिरत्नसागरजी को गणिपद अर्पण की चर्चा और तैयारी आरंभ हुई। ✻ मुनिराज श्री कीर्तिरत्नसागरजी म.सा. ने 17 जुलाई से भगवती सूत्र के योगोध्दहन की क्रिया आरंभ की।
- ✻ गणि पदवी मालवा में ही होगी। श्री नागेश्वर महातीर्थ की संभावना है।
- ✻ 250 से अधिक श्रावक-श्राविका 50 दिन का चार्तुमास कर रहे है।
- ✻ श्री नागेश्वर तीर्थ में पौष दशमी पर 1500 से अधिक अट्ठम तप के अमृत निश्रादाता युवा जैनाचार्य रहेंगे। ✻ मुंबई का पूनम मण्डल आयोजक रहेगा। ✻ उपधान तप आयोजन की रुपरेखा बन रही है।

जयपुर- वर्तमान तीर्थाधिपति अट्ठम तीर्थंकर परमात्मा भगवान श्री महावीर स्वामीजी का विशाल लाल मंदिर जवाहर नगर ही जयपुर की भी शान है। श्री वीरप्रभु की छत्रछाया में पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण जैनाचार्य श्री नवरत्न सागर सूरीश्वरजी महाराजा के अभूत पूर्व आर्शीवाद और पूज्यश्री नक्क्षे कदम पर चलते हुए नित्यप्रति शासन प्रभावना के नये इतिहास का सर्जन कर सागर समुदाय के प्रति अपने दायित्व का निर्वाह करते हुए सागर समुदाय की अभिवृद्धि कर युवा श्रमण को सम्मिलित करते हुए गुरुदेव के स्वप्न को साकार कर रहे युवा जैनाचार्य पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी महाराजा अमृत निश्रा में अब जयपुर में चार्तुमास का

नवीन इतिहास रच गया है। पूज्यश्री ने अपने प्रथम सुशिष्य मुनिश्री कीर्तिरत्न सागरजी म.सा. को 17 जुलाई से भगवती सूत्र के योगाध्दहन की आज्ञा पूज्यपाद गच्छाधिपति वचनसिद्ध आचार्य भगवंत श्री नरदेव सागर सूरीजी महाराजा के आदेश पर प्रदान की। मुनिश्री कीर्तिरत्नसागरजी म.सा. ने भी अपने गुरु के प्रति अहोभाव प्रदर्शित करते हुए कहा-पूर्ण समर्पित जीवन अर्पित गुरु संरक्षण हित आपके योग आरंभ हो गये है। अब चार्तुमास के बाद गणि पदवी का आयोजन होगा। गणि पदवी की संभावना मालवा में होने की है संभवतः श्री नागेश्वर महातीर्थ में हो सकती है। जयपुर जवाहरनगर में 250 आराधक चातुमार्सिक आराधना कर रहे है जो महापर्व पर्युषण तक चलेगी। स्मरण दो महापर्व 31 अगस्त से 7 सितंबर तक होंगे। यहां निरंतर तप की आराधना भी चल रही है। श्री सिद्धितप तथा शांति धारा तप का आयोजन किया गया। दिनांक 4 अगस्त को पूज्यपाद आगमोद्धारकश्री सागरजी महाराजा की 150 वीं जन्म जयंति पर यादगार गुणानुवाद सभा में पूज्यश्री की कीर्तिगाथा और गुणगान गाये गये इसके साथ ही मालवा, राजस्थान के श्रीसंघों में पूज्य आगमोद्धारकश्री की विशिष्ट परिचय करवाने के लिये आगम रथ यात्रा का आयोजन किया गया। सभी श्री संघों में पूज्यश्री का चित्र भेंट किया गया। परिचय के लिये एक पुस्तक का प्रकाशन भी हुआ था। पूज्य साध्वीवर्या श्री सिद्धांतज्योति श्रीजी म.सा. की 82 वीं वर्धमान तप की ओली पूर्णाहुति पर महिला मंडलों के द्वारा तप सम्मान में विशिष्ट आयोजन किया गया। साध्वीवर्या के तप की बहुत अनुमोदना हुई।

आगामी आयोजनों में महापर्व आराधना के बाद आसोज की नवपद ओली आराधना 9 अक्टूबर से आरंभ होकर 17 अक्टूबर को पूर्ण होगी। इसके बाद उपधान तप का आगाज होगा साथ ही दीपावली पर पूज्यश्री 10 दिवसीय एकांत आराधना में विराजित होंगे। आराधना की पूर्णाहुति के बाद नववर्ष की महामांगलिक होगी। श्री नागेश्वर महातीर्थ में पौष दशमी श्री पार्श्वनाथ जन्म-दीक्षा कल्याणक पर 1500 अट्ठम तप का आयोजन पूनम मंडल मुंबई के सहयोग से किया जायेगा। मालवा के श्रीसंघों में विचरण का कार्यक्रम भी बनाया जा रहा है। अपश्री का आगमन उज्जैन भी होने की संभावना है।

जिन शासन की अद्‌भूत भक्ति के साथ गुरुदेवश्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा की पाट परम्परा को उज्जवलता प्रदान करने का कार्य जो कार्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वर जी महाराजा के द्वारा संयम जीवन में किया जा रहा है उसकी तुलना में करना आसान नहीं और न ही शब्दों से उसे बंधा जा सकता है। पूज्य युवाचार्य श्री का पुण्यबल और पुण्य का उदय होने के साथ यह निश्चित है कि पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा देह त्याग करने के बाद आपका भरपूर आर्शीवाद युवा आचार्य भगवंत को प्राप्त हो रहा है। युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्न सागरसूरीजी महाराजा परमात्मा श्री वीर प्रभु के शासन की अभिवृद्धि के लिये अपने सम्पूर्ण पुण्यबल का सुनियोजित उपयोग कर स्वयं और आपश्री ने गुरुकुल के युवा मुनिपुंग न जिन शासन की भरपूर प्रभावना कर देश भर में जैनत्व का नया इतिहास रच दिया हैं। युवा श्रमण भगवंतों ने अद्‌भूत शासन भक्तिकर युवा और वरिष्ठ धार्मिष्ठों को आकृषित कर जैनत्व का सम्मान किया पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरसागर सूरीजी महाराजा के गुरुकुल ने श्री वीरप्रभु के शासन को उज्जवल बनाने के लिये वर्तमानकाल में जैनत्व का शंखनाद कर रहे है। जैन बेसिक कोर्स का 11 दिवसीय आयोजन पूज्यश्री की निश्रा में 18 अगस्त से आरंभ हुआ। जैन धार्म से जुड़ी ज्ञानवर्धक जानकारी के साथ व्यावहारिक जीवन और धर्म करने में सुविधा हो ऐसे विषयों से धार्मिष्ठों, बच्चों सबके महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई।

संयम उपकरण वंदनावली हुई

गांधीधाम- श्री जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक श्री संघ में पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री अनंतयश सूरीश्वरजी एवं पंन्यास प्रवर श्री अनंतज्ञानविजयजी म.सा.आदि साधु-साध्वी की निश्रा में दिनांक 11 अगस्त को संयम वंदनावली का आयोजन किया गया। साधु वेश की महिमा के साथ संयम के उपकरणों की अलग-अलग वंदनावली गाई गई और उपकरण की विशेषता से अवगत कराया गया। बच्चों के द्वारा संयम के बारे में नाटिका प्रस्तुत की गई।

आध्यात्मिक मौन साधना शिविर होगा

सूरत- श्री महावीर संस्कारधाम में आध्यात्मिक मौन ध्यान शिविर का आयोजन होने जा रहा है। दिनांक 27 से 29 सितंबर तक होनेवाला मौन शिविर पूज्य आचार्य श्री रश्मिरत्न सूरीश्वरजी महाराज की निश्रा में होगा।

सूरत के आठ संघों में श्री शत्रुंजय महातीर्थ तप में 400 आराधक जुड़े

सूरत- यहां के प्रसिद्ध आठ जैन श्वेतांबर श्री संघों में विराजित लब्धि प्रतिष्ठित जैनाचार्य श्री हेमचंद्रसागर सूरीजी, श्री राजहंससूरीजी, श्री निर्मल चंद्र सूरीजी, श्रीलब्धिचंद्रसागर सूरीजी , श्री प्रसन्नचंदसागर सूरीजी, उपाध्याय श्री पुंडरिकविजयजी, मुनिश्री कैलाशचंद्रसागरजी, मुनि श्री मनकचंद्रसागरजी म.सा.आदि शताधिक साधु-साध्वीवृंद की अमृत निश्रा में श्री सिद्धाचल सिद्धक्षेत्र के वासी दादा श्री आदिनाथ प्रभु की 500 वीं ध्वजा के निमित्त यहां 400 से अधिक आराधकों के द्वारा श्री शत्रुंजय महातीर्थ तप किया जा रहा है। तपस्वियों के सामुहिक बहुमान की बोली दिनांक 21 अगस्त को किया गया। श्री राम विहार जैन आराधना भवन वेसू में यह आयोजन हुआ।

एक अद्वितीय अनुष्ठान हुआ

मुंबई- ग्रांट रोड़ स्थित श्री नव जीवन श्वेतांबर जैन संघ में दिनांक 18 अगस्त को एक अद्वितीय अनुष्ठान का आयोजन हुआ। पूज्य पंन्यास प्रवर श्री लब्धिवल्लभ विजयजी म.सा. की निश्रा में अरिहंत प्रभु के आनंददाय 1008 नामों का संकीर्तन किया गया। कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्यश्री के द्वारा रचित अर्हन्नाम सह स्त्रास्तव पर इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

प्रभुवीर के हाला की जोरदार प्रस्तुति हुई

अहमदाबाद- यहां के नारायणपुरा स्थित श्री आदिश्वर श्वेतांबर मूर्तिपूजक श्री संघ में दिनांक 18 अगस्त को परमात्मा श्री वीरप्रभु के हाला की जोरदार प्रस्तुति हुई। हालो-हालो-हालो मारा नंद रे.... पर धार्मिष्ठ झूम उठे। पूज्य आचार्य भगवंत श्री कल्याण बोधि विजयजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में यह आयोजन त्रिशला माता के शाही दरबार में हुआ।

चार्तुमास प्रवेश : छःरिपालक संघ की जय बुलाई

सूरत- श्री वासुपूज्य जैन श्वे. मू. संघ में पू. 451 दीक्षा दानेश्वरी आचार्य श्री गुणरत्नसूरीजी म.सा. के शिष्य पू. सूरि मंत्र आराधक आचार्य देवश्री रवि रत्नसूरीजी म.सा., पू.आ.श्री जयेश रत्नसूरीजी म.सा. एवं पं.श्री वैराग्यरत्न वि.म.सा.आदि 7 ठाणा एवं साध्वीश्री-5 ठाणा का चार्तुमास प्रवेश पर प्रवचन व मांगलिक हुआ। इस प्रसंगे शिवगंज (राज.) से पधारे मानु भावों द्वारा सोनगढ़ से शत्रुंजय तीर्थ का छःरि पालक संघ की जय बुलाई गई। धर्म बिन्दु ग्रंथ, उत्तराध्ययन सूत्र व आउर पचक्खान ग्रंथ वहोराने व प्रवचन प्रारंभ हुआ श्री अयोध्यापुरम् से श्री शत्रुंजय महातीर्थ छःरिपालक संघ दिनांक 19-1-2025 से 24-1-2025 तक की जय बुलाई गई। संघ दशविध यतिधर्म तप की आराधना में 150 तपस्वी लाभ ले रहे हैं।

1008 जोड़ों के साथ हवन पूजन होगा

इन्दौर- पूज्यपाद आचार्यदेवश्री मुक्तिसागरसूरीजी, श्री अंचलमुक्तिसागर सूरीजी आदि ठाणा की निश्रा में 1008 जोड़ों के साथ श्री मणिभद्र वीर महाराजा का महापूजन हवन होगा। श्री मणिभद्र दादा के प्रकट उत्सव के दिन आसोज-5, दिनांक 8 अक्टूबर को यह आयोजन होने जा रहा है। पूजन सामग्री प्रदान की जाएगी। नकरा 1000 रुपये है।

आगमोद्धारक की सदस्यता एवं श्रुतभक्ति में दान देने के लिये ऑन लाईन बैंक की जानकारी

महोदय,

आगमोद्धारक की सदस्यता प्राप्त करने के लिये सदस्यता शुल्क एवं श्रुतभक्ति दान आप ऑन लाईन जमा कर सकते है। आपकी धनराशि भेजने के लिये:-

बैंक का नाम:- इण्डियन ओवरसीज बैंक, शाखा नईसड़क उज्जैन (म.प्र.)

खाता:- श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, 46, सखीपुरा, उज्जैन (म.प्र.)

खाता क्रं.:- 068002000001425 IFSC Code:- IOBA0000680

श्री जीरावला पार्श्वनाथ में पौष दशमी पर 108 अट्ठम तप का आयोजन सागर गच्छाधिपति की निश्रा में होगा

✻ 2025 में पालीताना चार्तुमास होने की संभावना।

मुंबई- सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति वचनसिद्ध जैनाचार्य पूज्यपाद श्री नरदेवसागर सूरीश्वरजी महाराजावर्धमान तपोनिष्ठ मुनिश्री पद्मकीर्ति सागरजी म.सा. आदि साधु-साध्वीजी की अमृत निश्रा में श्री पार्श्वनाथ प्रभु के जन्म-दीक्षा कल्याणक पौष दशमी पर विश्व विख्यात श्री जीरावला पार्श्वनाथ प्रभु के महातीर्थ जीरावला में 1008 अट्ठम तप का आयोजन किया जायेगा। वाव निवासी गुरुदेव के परम भक्त ने चार्तुमास प्रवेश पर यह घोषणा की। आयोजन की रुपरेखा लगभग तैयार हो गई है। वर्ष 2025 का चार्तुमास पूज्यश्री लगभग पालीताना श्री सिद्धक्षेत्र में ही करेंगे। इसकी भी तैयारी चल रही है।

अध्यात्मयोगी की निश्रा में उपधान तप के पूर्व नवकार आराधना हुई

अहमदाबाद-पूज्यपाद आचार्य देवेश मालव भूषण श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा के प्रशिष्य पूज्यपाद गणिवर्य श्री आदर्शरत्नसागरजी म.सा. आदि ठाणा श्रमण-श्रमणीवृंद की अमृत निश्रा में मेंचातुमार्सिक आराधना जोरदार चल रही है।चार्तुमासिक आराधना के अंतर्गत अनेक विविध तप, जप, अनुष्ठान महोत्सव के आयोजन की बड़ी श्रृंखला में हो रहे है पूज्यपाद आगमोद्धारकश्री की 150 वीं जन्म तिथि पर यादगार आयोजन हुआ। दिनांक 6 अगस्त से 14 अगस्त तक भव्य रुप से नवकार महामंत्र की भव्य आराधना एकासणा तथा आयंबिल के साथ हुई। गणिवर्यश्री आदर्शरत्न सागरजी म.सा. की निश्रा में पूज्य सागरजी महाराजा के 150 वें जन्म दिवस पर शिक्षकों का बहुमान सम्मान किया गया। साध्वी श्री उपशम यशाश्रीजी म.सा. का चार्तुमास भी यहीं पर हो रहा है। महापर्व पर्युषण दिनांक 31 अगस्त से आरंभ होंगे। उपधान तप का आयोजन भी होने जा रहा है उपधान तप का प्रथम मुर्हूत दिनांक 13 अक्टूबर तथा द्वितीय प्रवेश 15 अक्टूबर को होगा। तपस्वियों की शोभायात्रा के बाद माल परिधान 2 दिसबंर को होगा। आयोजक सरयु बहन हसमुखभाई न्यालचंद बोरा परिवार है।

महाविदेह धाम में उपधान तप

सूरत-महाविदेहधाम वरिष्ठ मार्ग दर्शक आ.श्री रश्मिरत्नसूरीश्वरजी म. सा. आदि–51 गुरु भगवंतों की निश्रा में 13 सितंबर से समूह वर्धमान तप पाया का प्रारंभ।✻ 12 अक्टू. से गुरु भक्त परिवार द्वारा उपधान का प्रारंभ होगा। पालीताना व गिरनार का संघ निकलेगा।

जैनाचार्य ने महाभारत के गुढ़ रहस्य बताये

कोढ़वा- श्री राजगृही श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ में विराजित पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री हर्षसागरसूरीजी महाराजा के सुशिष्य आचार्यश्री विरागसागर सूरीजी महाराज की निश्रा में चार्तुमास का रंग जम गया है। दिनांक 4 अगस्त को पूज्यपाद आगमोद्धारक श्री सागरजी महाराजा की 150 वीं जन्म जयंति का सफल आयोजन होने के बाद दिनांक 11 अगस्त को पूज्यश्री ने महाभारत क्यों हुई ? इस प्रसंग पर ऐतिहासिक तथ्यों के साथ महाभारत के अनेक प्रसंगों से अवगत कराते हुए कहाकि भ्रष्टाचार, अनाचार, हिंसाचार को रोकने के लिये एक और महाभारत की आवश्यकता है।

श्री शंखेश्वर तीर्थ में अट्ठम तथा अर्हद् पूजन

शंखेश्वर-श्री शंखेश्वर पार्श्व नाथ महातीर्थ में पूज्य आचार्य श्री हेम वल्लभसूरीजी महाराजा आदि ठाणा की निश्रा में अट्ठम तप के साथ अर्हद् पूजन का आयोजन होने जा रहा है। दिनांक 11 नवंबर को उत्तर पारणा के साथ 12-14 नवंबर तक अट्ठम तप तथा पारणा 15 नवंबर को होगा। आचार्यश्री हेमवल्लभसूरीजी महाराजा को 10,000 हजार आयंबिल पूर्णता की ओर है। यह आयोजन कलापूर्णसूरी स्मृति मंदिर में होने जा रहा है। वसंत बहन चम्पालाल शाह परिवार, मुंबई लाभार्थी है।

✻ कई ऐसे दुःख जो दिखने में बड़े ही भयंकर होते हैं परन्तु अंततो गत्वा सुखद ही सिद्ध होते हैं।

अमेरिका में अंतराष्ट्रीय जैन विधिकारक श्री मनोज कुमार बाबूमलजी ने जैनत्व का शंखनाद किया

गोवा- 1200 जिन मंदिरों के प्रतिष्ठाकर्ता अंतर्राष्ट्रीय जैन विधि-कारक शासनरत्न श्री मनोजकुमार बाबूमलजी हरण ने अमेरिका में जैनत्व का मंगल शंखनाद का अद्भूत शासन प्रभावना की है। आपने गोवा से 11 अगस्त को अमेरिका के लिये प्रस्थान किया उसके बाद अमेरिका पहुंचकर दिनांक 18 अगस्त को गृह मंदिर में 18 अभिषेक करवाये। 17 अगस्त को श्री सिद्धाचल तीर्थ में कुंभ स्थापना, पाटला पूजन करवाई। 18 अगस्त को श्री सिद्धाचल तीर्थ में भूमि पूजन खनन विधि करवाई। 19 अगस्त को भक्तामर विधान न्यूजर्सी फेनलवुड में करवाये। 22 अगस्त को न्यूयार्क से सियादल पहुंचे यहां 23 अगस्त को 18 अभिषेक करवाये। श्री शंखेश्वर मंदिर सियादल में 18 अभिषेक 24 अगस्त को करवाये। दिनांक 25 अगस्त को यह मंदिरजी की 6 टी प्रतिष्ठा पर ध्वजारोहण, सत्तर भेदी पूजन पढ़ाई गई। 27 अगस्त को न्यूजर्सी में महामंत्र नवकार के जाप करवाकर भारत के लिये प्रस्थान कर 29 अगस्त को गोवा पहुंचे।

मंदसौर के दो संघों में देव गुरु शासन भक्ति का जोरदार रंग जमा

✻ पू.साध्वीवर्या श्री हेमेन्द्रश्रीजी एवं विशुद्धप्रज्ञाश्रीजी की निश्रा रही।

मंदसौर- श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ मंदिर तलेरा विहार में विराजित पूज्य साध्वीवर्या श्री हेमेन्द्रश्रीजी म.सा. साध्वी श्री चारुदर्शा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा तथा रुपचंद्र आराधना भवन में विराजित साध्वीवर्या श्री विशुद्धप्रज्ञा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में चार्तुमास का जोरदार रंग जम गया है। चार्तुमास प्रवेश होते ही 21 जुलाई को लब्धिकलश की स्थापना हुई। पूज्यपाद आगमोद्धारकश्री की 150 वीं जन्म जयंति पर पंचान्हिका महोत्सव का आयोजन 31 जुलाई से 4 अगस्त तक किया गया। प्रथम दिन महिला मंडल की प्रस्तुतियां हुई तो दूसरे दिन शक्रस्तव का आयोजन किया गया। दिनांक 2 अगस्त को 45 आगम शास्त्र का वरघोड़ा आयोजित हुआ तथा चौथे दिन 45 आगम पूजन पढ़ाई गई। दिनांक 4 अगस्त को भव्य गुणानुवाद सभा में गुरु गुण कीर्तन हुए तथा 45 आगम के नाम स्मरण की प्रतियोगिता भी हुई। मंडोवरा परिवार, देपालपुर ने लड्डू की तथा संघ की ओर से श्रीफल की प्रभावना हुई। दिनांक 8 अगस्त को 18000 गुरु वंदनावली का आयोजन तथा 11 अगस्त को श्री मणिभद्रवीर की पूजन पढ़ाई गई।

श्री शंखेश्वर से गिरनार महातीर्थ का छःरि पालित संघ लगभग एक महिने का रहेगा।

जूनागढ़- श्री सिद्ध सावन कल्याणक भूमि तीर्थोद्धार समिति के द्वारा श्री शंखेश्वर से श्री गिरनार महा तीर्थ का छःरि पालित यात्रा संघ का आयोजन होने जा रहा है। पूज्य आचार्य भगवंत श्री धर्मरक्षितसूरीजी एवं श्री हेमवल्लभ सूरीजी आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी की निश्रा में श्री शंखेश्वर से श्री गिरनार महातीर्थ का छःरिपालित यात्रा संघ आयोजित होने जा रहा है। श्री शंखेश्वर से संघ का प्रयाण 21 नवंबर को होगा, यहां से 29 नवंबर को बढ़वाण आगमन होगा। दिनांक 30 नवंबर को बढ़वाण से आरंभ होगा। दिनांक 12 दिसंबर को जेतपुर से चलकर 17 दिसंबर को गिरनार पहुंचकर संघ माल होगी।

मेवाड़ में तीन तीर्थ में अंजन प्रतिष्ठा होगी

उदयपुर- श्री मेवाड़ जैन श्वेतांबर महासंघ के तत्वावधान में मेवाड़ के तीन तीर्थो में अंजन प्रतिष्ठा का आयोजन होगा। श्री आदेश्वर तीर्थ राजपुरा में 7 फरवरी को श्री करेड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ भोपाल-सागर में 23 फरवरी को तथा श्री दयालशाह किला तीर्थ राजसमंद में 3 मार्च 2025 को अंजन-प्रतिष्ठ होगी। विस्तृत समाचार की प्रतिष्ठा है।

बोलिया में उपधान तप होगा

बोलिया- यहां चार्तुमास हेतु विराजित पूज्य आचार्य भगवंत श्री पद्म भूषणरत्न सूरीजी महाराजा, पंन्यास श्री ऋषभरत्न विजयजी म.सा.आदि साधु-साध्वीवृंद की निश्रा में श्रावक से श्रमण बनने की आराधना उपधान तप का आयोजन होने जा रहा है। दिनांक 12 अक्टूबर से उपधान तप आरंभ होगा एवं उपधान माल 30 अक्टूबर को होगी।

तप चातुमार्सिक अलंकार है, उसे धारण करें, चार्तुमास आत्मा के पास जाने का अवसर

सूरत- श्री सूरत रांदेररोड़ जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ में आजीवन गुरु गुणचरणोपासक श्रमणी गणनायक आचार्यदेव श्रीमद् विजय रश्मिरत्न सूरीजी महाराज आदि 36 साधु भगवंत एवं प्रवर्तिनी साध्वी श्री पुण्यरेखा श्रीजी आदि-56 साध्वी भगवंतों का भव्याति भव्य चार्तुमास प्रवेश अडाजन पालिया चार रस्ते से शुरु हुआ। सामैया एस.एम.एल. हॉल में पहुंचा व सभा के रुप में तब्दिल हुआ। जैनाचार्यश्री रश्मिरत्न सूरीजी ने चातुमार्सिक संदेश देते हुए कहा कि जिनाज्ञा को केन्द्र में रखकर यह चार्तुमास वायब्रंट है, आध्यात्मिक है। चातुमार्सिक 8 अलंकारों में सामायिक, प्रतिक्रमण, पौषध, पूजा, विलेपण, ब्रह्मचर्य पालन सुपात्र दान व तप है। सूरत के तपस्वियों को सामूहिक मासक्षमण में जुड़कर 451 टारगेट को पूरा कर दीक्षा दानेश्वरी के गुरुचरणों में अर्पण करने का आव्हान है। ''हर घर मासक्षमण, घर-घर मासक्षमण का नाद गुंज रहा है। अब की बार 400 के पार 451।

पंन्यास श्री यशरत्नविजयजी ने बताया कि यह चार्तुमास आत्मा के नजदीक बसता है। आत्मा से जुड़ने के लिये तप जरुरी है। तीन हजार से अधिक भक्तों का जनसैलाब उमड़ा। संघ स्थापना के 42 वर्ष में यह पहला 36 साधु भगवंतों का बड़ा चार्तुमास है ।22 जुलाई से मासक्षमण का प्रथम राउण्ड शुरु हुआ। तीन राउण्ड होंगे। अन्य आयोजनों में पर्युषण बाद 13 सितंबर को समस्त सूरत में वर्धमान तप के पाये, 12 अक्टूबर से गुरु राम पावन भूमि में भव्य उपधान तप प्रारंभ होगा। चार्तुमास बाद समूह दीक्षा, पालीताना से गिरनार व गिरनार से पालीताना छःरिपालक संघ, तीन छोटे संघ व शंखेश्वर में चैत्र मास की ओली होगी।

500 परिवार के द्वारा शासन रक्षक श्री मणिभद्र वीर की महापूजन हवन का आयोजन सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति की निश्रा में

मुंबई- सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति वचनसिद्ध जैनाचार्य पूज्यपाद श्री नरदेवसागर सूरीश्वरजी महाराजा एवं उपाध्याय श्री विनीत सागरजी म.सा., मुनिराज श्री देवप्रभ सागरजी म.सा., वर्धमान तपोनिष्ठ मुनिश्री पद्मकीर्ति सागरजी म.सा. एवं मुनिश्री विनम्रसागर जी म.सा.आदि साधु-साध्वी मंडल का चातुमार्सिक प्रवेश प्रजेन्ट पैलेस श्रीसंघ चल रहा है। आसो सुद -5 8 अक्टुबंर को तपागच्छ नायक श्री मणिभद्र वीर की महापूजन और हवन यह भव्य आयोजन होने जा रहा है अहिंसा संघ मंबंई के द्वारा इसका आयोजन किया जा रहा है। महापूजन में सजोडे या परिवार का एक सदस्य बैठ सकता है महापूजन में भाग लेने वाले सभी धर्मिष्ठों के लाल पूजा के वस्त्र , श्री मणिभद्र वीर की प्रतिमा तथा महापूजन और हवन की सामग्री दी जायेगी।

डॉ. सुभाष जैन शाहपुर श्री संघ में पर्वाराधना करवायेंगे

शाहपुर- अंतराष्ट्रीय जैन विधिकारक शासनरत्न श्री मनोज कुमा र बाबूलालजी हरण की प्रेरणा और मार्गदर्शन के साथ शाहपुर कनार्टक के जैन तपागच्छ श्री संघ के अनंतनाथ जिनमंदिर परिसर में संघ के श्री मांगीलालजी आदि वरिष्ठों के आग्रह पर डॉ. सुभाष जैन एवं ध्वनि शाह सूरत महापर्व पर्युषण की आराधना दिनांक 31 अगस्त से 7 सितंबर तक करवाने के लिये शाहपुर पहुंचे। संघ में निर्विध्न रुप से उमंग उत्साह के साथ विभिन्न आयोजन के साथ आराधना हुई।

बलसाड़ जैन संघ में आगमोद्धारक जयंति मनी

बलसाड़ - बलसाड़ के कोठारी उपाश्रय में पंन्यास श्री सत्यसुन्दर विजयजी म.सा.,मुनिश्री जयचन्द्र सागरजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में सागरजी महाराज के 150 वें जन्म दिन पर पूज्यश्री के चित्रसंपूर द्वारा जीवन दर्शाया गया, गुणानुवाद सभा हुई। यह आयोजन 4 अगस्त को हुआ।

✼ सहज स्वरुप में जीव की स्थिति हो उसे श्री वीतराग ''मोक्ष'' कहते हैं।

एक संशोधन

एक लेख ''कलेक्टर मैडम , आप मेकअप क्यों नहीं करती ?'' हमने अगस्त 2024 में आगमोद्धारक के पृष्ठ-7-8 पर प्रकाशित किया था पर जानकारी गलत थी कि वे कलेक्टर थी उसके स्थान पर शिक्षक समझे। भ्रमित समाचार के लिये क्षमा करें - सम्पादक

श्री गिरनार महातीर्थ में नव्वाणु यात्रा का भव्य आयोजन होगा

गिरनार- पूज्यपाद आचार्य श्री कलापूर्णसूरी समुदाय के आचार्यदेव श्री पूर्णचंद्र सूरीजी महाराजा एवं पंन्यास प्रवर श्री पूर्णरक्षितविजयजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में नव्वाणु यात्रा का भव्य आयोजन होने जा रहा है। यात्रा में प्रवेश दिनांक 14 नवंबर तक ले सकते है। यात्रा दिनांक 15 नवंबर से आरंभ होगी। यात्रा की पूर्णाहुति दिनांक 25 दिसंबर को होगी। इसके पूर्व पूज्यश्री की निश्रा में वंथली से गिरनार का छःरि पालित यात्रा आयोजित होगी।

वीर शहीदों की यशोगाथा का कीर्तिनाद हुआ देवास में

✻ सागरजी जन्म जयंति यादगार बनी : तप की लड़ी लगी।

देवास- प.पू. साध्वीवर्या श्रीशील रेखाश्रीजी म.सा.व प.पू.विश्वविदा श्रीजी म. सा.आदि ठाणा-7 की निश्रा में चार्तुमास आराधना की श्रृंखला में अमीन कु. के 11 उपवास व मातुश्री अनिता बेन गोलेछा के 8 उपवास प्रसंग पर भव्यातिभव्य रथयात्रा व समस्त देवास श्रीसंघ का स्वामीवात्सल्य गोलेच्छा परिवार की ओर से हुआ।

प.पू.आगमोद्धारक आनंदसागरजी म.सा.के 150 वें जन्म दिन पर त्रि दिवसीय कार्यक्रम रखा। श्रावण वदी-14 को समूह सामायिक, गुणानुवाद एवं विशिष्ट प्रभावना रखी। श्रावण वदी-अमावस्या को जन्मदिन की बच्चों द्वारा शानदार प्रस्तुति-अद्‌भूत दी गई विशिष्ट वक्ताओं द्वारा गुणानुवाद एवं श्रीसंघ का स्वामी वात्सल्य था। श्रावण सुदि-1 गुणानुवाद एवं आदिश्वर महिला मंडल व बहुमान द्वारा प्रशंसनीय प्रस्तुति एवं चांदी के 11 लक्की ड्रा गुरु भक्ति की ओर से व 15 प्रश्न उनके उत्तर एवं ईनाम कमलकांता बेन लक्ष्मीचंदजी वागरेचा परिवार की तरफ से वितरित हुवे। संघ में प्रतिदिन चने के आयंबिल, गौतम कमल तप चल रहा है। पारण के लाभार्थी डॉ.मनिषा बेन प्रमोद कुमारजी बाफना परिवार थे। श्रावण सुदि-5 श्री नेमनाथ भगवान का जन्मोत्सव व श्रावण सुदि-6 को दीक्षा कल्याणक प्रसंग पर उपकरण वंदनावली का आयोजन रखा। श्रावण सुदि-7 को सुनिता बेन सुनिल कु. के गौतम कमल तप निमित्त मंदिरजी में श्रीआदिश्वर दादा का शक्र स्तव अभिषेक रखा, तत्पश्चात लाभार्थी परिवार श्री संतोषकुमारजी मिश्रीमलजी कंकरेचा परिवार द्वारा श्री संघ का स्वामी वात्सल्य रखा गया। 15 अगस्त को ''वीर शहीदों की यशोगाथा'' पर प्रवचन एवं बच्चों की शानदार प्रस्तुति रखी गई। शासन प्रभावना के अनेकविध कार्यक्रम हो रहे है। पर्युषण पर्वाधिराज की तैयारियां जोर-शोर से चल रही है।

बंधु त्रिपुटी मुनिश्री की निश्रा में धर्मचक्र तप का आयोजन

गदक- जैनाचार्य अपूर्व मंगल रत्न सागरसूरीजी महाराजा के गुरुकुल के बंधु त्रिपुटी मुनि प्रवर श्री आगम प्रश्म- व्रजरत्नसागरजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास हुबली के निकट गदक चल रहा है। आगमोद्धारकश्री की 150 वीं जन्म तिथि पर आगम प्रदर्शनी, जोरदार गुणानुवाद सभा, बच्चों की प्रस्तुति के साथ गुरुभक्ति के गीतों ने समा बांध दिया। श्री संघ में आपश्री के द्वारा श्री धर्मचक्र तप का शुभारंभ हुआ है। तपस्या में बड़ी संख्या में आराधक जुड़े हैं। चार्तुमासिक आराधना के अंतर्गत अनेक विविध तप, जप, अनुष्ठान महोत्सव के आयोजन की बड़ी श्रृंखला है। महापर्व पर्युषण दिनांक 31 अगस्त से आरंभ होंगे

दीक्षा मुर्हूत दिया जायेगा

नाकोड़ा- श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ महातीर्थ में चातुमार्सिक आराधना के लिये विराजमान सागर समुदाय के वरिष्ठ जैनाचार्य श्री चन्द्राननसागर सूरीजी महाराजा एवं साध्वीवर्या श्री कल्पिताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में बाल मुमुक्षु कुमारी जीया का दीक्षा मुर्हूत प्रदान किया जायेगा। श्री निलेशकुमार गणेशमलजी की सुपुत्री को दीक्षा मुर्हूत के लिये दिनांक 20 सितंबर को श्री नाकोड़ा तीर्थ में कार्यक्रम का आयोजन किया गया है।

✻ जो देह पूर्ण यौवनमय और संपूर्ण आरोग्यमय दिखने पर भी क्षणभंगुर है, उस देह में प्रीति करके क्या करें ?

वागड़ नरेश की निश्रा में आगमोद्धारकश्री के 150 जन्मदिवस निमित्त अष्टान्हिका महोत्सव मनाया गया

पालीताना- पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्न सागरसूरीजी महाराजा के तीसरे सुशिष्य पूज्य आचार्य देवेश श्री मृदुरत्न सागर सूरीजी महाराज मुनिश्रीमोक्षरत्न सागरजी, मुनिश्रीपद्म रत्नसागरजी आदि ठाणा के साथ साध्वीवर्याश्री अर्चपूर्णा श्रीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में पूज्यपाद श्री सागरजी महाराजा की 150 वीं जन्मतिथि निमित्त अष्टान्हिका महोत्सव का आयोजन साबरमती धर्मशाला में किया गया। दिनांक 16 से 22 अगस्त तक आयोजित अट्ठाई महोत्सव में श्री सिद्धचक्र, श्री शत्रुंजय, श्री भक्तामर महापूजन के साथ श्री शत्रुंजय 99 अभिषेक श्री 99 प्रकार की पूजन, सत्तर भेदी पूजन के साथ भव्य वरघोड़े का आयोजन किया गया। लगभग 250 आराधको का 2 महिने का चार्तुमास आपकी निश्रा में हरे रहा है

पूज्यपाद आगमोद्धारकश्री की 150 वी जन्म जयंति श्री सिद्धचक्राधन केशरियानाथजी महातीर्थ उज्जैन में जोरदार मनी

उज्जैन- श्री ऋषभदेव छगनी राम पेढ़ी पर सागर समुदाय की वरिष्ठ साध्वीवर्या श्री अमितगुणाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा के सानिध्य में पूज्यपाद आगमोद्धारक श्री आनंदसागर सूरीजी महाराजा (पूज्यश्री सागरजी महाराजा) की 150 वीं जन्म जयंति पर यादगार गुरु गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। प्रो. श्रीमती अल्पना दुभाषिये मुख्य अतिथि रही डॉ. सुभाष जैन आगमोद्धारक सम्पादक ने पूज्यश्री के धाराप्रवाह गुण कीर्तन किये एवं पूज्य श्री के जीवन से संबंधित अनेक प्रसंगों से श्री संघ अवगत कराया। पूज्य साध्वी जी के द्वारा अग्रेंजी संस्कृत मालवी भाषा में गुरु गुणानुवाद किया गया त्रि दिवसीय महोत्सव दिनांक 3,4,5 अगस्त 2024 तक मनाया गया महिला मंड्लों की प्रस्तुतियों तथा सामुहिक सामायिक के आयोजन में 400 सामायिक हुई बच्चों के द्वारा पूज्यश्री के जीवन पर नाटिका खेली गई। लड्डू की प्रभावना प्रभावना हुई। चातुमार्सिक आराधना अच्छी चल रही है।श्री संघ में उवसग्गहरम् तप की 27 दिवसीय आराधना में 45 आरधक जुड़े है साथ ही 6 से 14 अगस्त तक आयोजित नवकार महामंत्राराधना में 80 आराधकों ने भाग लिया। महामंत्र के जाप आरंभ करने का लाभ पूज्य साध्वीवर्या श्री अमितगुण श्रीजी के द्वारा डॉ. सुभाष जैन को दिया गया। आराधना के बाद भव्य रथयात्रा निकाली गई। श्रावक के 21 गुण तथा विक्रमादित्य चरित्र पर व्याख्यान हो रहे है पूज्य साध्वीवर्या आदि ठाणा की निश्रा में पर्युषणा महापर्व आराधना दिनांक 31-8-2024 से 7-9-2024 तक होगी। शाश्वती नवपद ओलीजी आसोज सुद 6से दिनांक 9 से 17 अक्टूबर 2024 तक होगी

श्री नाकोड़ा में उपधान तप

नाकोड़ा- जिनशासन के विश्व विख्यात तीर्थ श्री नाकोड़ा में आचार्य देवश्री नयचंद्रसागरसूरीजी महाराज के सुशिष्य मुनिश्री सुमतिचंदसागरजी एवं मुनिश्री शीतलचंद्रसागरजी म.सा.आदि ठाणा-2 की निश्रा में श्रावक से श्रमण बनने की क्रिया उपधान तप का आयोजन प्रथम मुर्हूत दिनांक 15 दिसंबर तथा द्वितीय मुर्हूत दिनांक 17 दिसंबर से आरंभ हो रहा है। उपधान तप की माल तथा रथयात्रा का आयोजन 2 फरवरी 2025 को होगा। आयोजक श्री उवसग्गंहरम आराधक परिवार है।

अमेरिका में जैन मंदिर में ध्वजारोहण, 18 अभिषेक हुए

रेडमोड- अमेरिका के सियाटल के समीप रेडमोंड में स्थित 2050 वर्ष प्राचीन श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिन मंदिर की छठी वर्षगांठ पर जिन मंदिर में ध्वजारोहण एवं 18 अभिषेक का आयोजन किया गया। अंतराष्ट्रीय जैन विधिकारक शासनरत्न श्री मनोजकुमार बाबूमलजी हरण के मार्गदर्शन एवं प्रेरणा से यह त्रिदिवसीय कार्यक्रम दिनांक 23 से 25 अगस्त तक आयोजित हुआ। श्री आदिनाथ एवं श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ मंदिरजी में 18 अभिषेक तथा दिनांक 25 अगस्त को ध्वजा का वरघोड़ा आयोजित कर ध्वजारोहण तथा सत्तरभेदी पूजन पढ़ाई गई। स्वामी वात्सल्य भी हुआ।

✻ क्रोध नरकगति का प्रथम द्वार है। क्षमा सद्गति का प्रथम द्वार है।

जैन जगत के करीब 250 से अधिक श्रीसंघों में आगमोद्धारकश्रीजी की 150 वी जन्म जयंति विविध आयोजनों के साथ मनी

आगमोद्धारकश्री के जन्म अर्धशताब्दी वर्ष में 150 दिन तक गुरु गौरव गान के साथ विविध आयोजन की श्रृंखला

मुंबई- भारत का जैन श्री संघों में पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री आगमोद्धारक श्री आनंदसागर सूरीजी महाराजा का 150 वां जन्मदिन बड़े उत्साह उमंग और विविध कार्यक्रमों के साथ मनाया गया। सागर समुदाय के श्रमण श्रमणी वृंद के 250 चार्तुमासवाले श्रीसंघों में लगभग 900 साधु-साध्वीश्री की अमृत निश्रा में यह आयोजन हुआ। पूज्यपाद सागर गच्छा धिपति की निश्रा मुंबई में मुख्य आयोजन हुआ इसके साथ ही 27 आचार्य भगवंत, 1 उपाध्याय, 7 पंन्यास,9 गणिवर्य की निश्रा में आयोजन हुए। पूना, पालीताना, मुंबई, नागेश्वर, जयपुर, उदयपुर, दिल्ली, अहमदाबाद, हुबली, मन्दसौर गदक सूरत, उज्जैन, चैन्नई, इन्दौर अयोध्या पुरम्, देपालपुर आदि स्थानों के साथ साध्वी भगवंत के चार्तुमास स्थलों पर भी भव्य जन्मोत्सव मना। ड्रॉ, नाटिका, गुणानुवाद सभा, आगम प्रदर्शनी आगम रथ यात्रा गुरु पूजन आरती आंगी पुस्तक प्रकाशन मंचीय कार्यक्रम, प्रश्न पत्र प्रतियोगिता जैसे अनेक आयोजनों के साथ पूज्य पादश्री का मंगल स्मरण किया गया ।जैन जगत को आगम का अभूतपूर्व वारसा देननेवाले आगमवेत्ता पूज्यपाद आचार्यदेव आगमोद्धारक श्री आनंदसागरसूरीजी महाराजा के जन्म अर्ध शताब्दी वर्ष में भारत भर के श्री संघों में 150 दिन तक पूज्यश्री के जीवन प्रसंगों आगम के संबंध से अनेकविध आयोजन होंगे। जन्म दिन 4 अगस्त, सांवन की अमावस्या के शुभ प्रसंग पर त्रिदिवसीय महोत्सव के आयोजन की प्रेरणा पूज्यपाद सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री नरदेवसागर सूरीश्वरजी महाराज की ओर से की गई है। प्राचीन और अर्वाचिन आगम वाचना की ऐतिहासिकता की जानकारी के साथ 45 आगम पूजन तथा आगम रथयात्रा का और पूज्यश्री गौरव कीर्तिगाथा के लिये भव्य गुणानुवाद सभा के आयोजन होंगे। श्राविकाओं, बच्चों के लिये नाटक, प्रश्न प्रतियोगिता, गहुंली, रंगोली आदि आयोजन श्री संघ में करने की प्रेरणा दी है। 150 दिवसीय आयोजन में जहां सागर समुदाय के गुरु भगवंतों, साध्वी भगवंत चार्तुमास में विराजमान है वहां विशिष्ट आयोजन करने की प्रेरणा दी गई है। 45 आगम पर आधारित वाचना तथा आगम महापूजन के आयोजन के साथ पूज्य आगमोद्धारकश्री के जीवन चारित्र से अवगत करानेवाले चित्रों की प्रदर्शनी भी लगाने की प्रेरणा दी गई है।

102 वर्ष की उम्र में आचार्य राजतिलक सूरीश्वरजी म.सा. का देवलोकगमन हुआ

✻ अंतिम संस्कार 6 अगस्त को हुआ।

उज्जैन- प.पू.नीतिसूरी समुदाय के पूज्य आचार्य भगवंत श्रीमद्विजय राजतिलक सूरीश्वरजी म.सा. का दिनांक 5 अगस्त को रात्रि 9.15 बजे नवकार मंत्र श्रवण करते हुए पूज्य आचार्य भगवंत को दिनांक 6 अगस्त की सुबह 9.30 बजे तक श्री सहस्त्र-फणा पार्श्वनाथ श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ रसूलपुर सिकंदराबाद के वर्षीतप भवन में ''दर्शन'' हेतु रखा गया। दर्शन का लाभ लेवे तत्पश्चात आचार्य भगवंत को अंतिम संस्कार हेतु श्री मनमोहन पार्श्वनाथ तीर्थधाम कुणसी लाया गया। शाम 5.00 बजे अंतिम संस्कार कुणसी तीर्थ पर हुआ। आचार्यश्री का जाना जैन समाज के लिये बहुत बड़ी क्षति है, आचार्यश्री 18 भाषाओं और आगम के ज्ञाता थे, हमेशा वो जाप करते रहते थे और जाप के वक्त उनके सिर से वासक्षेप निकलता था। ''आगमोद्धारक परिवार'' ने आचार्यश्री को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके चरणों में कोटि-कोटि वंदन किया। पूज्यश्री के उर्ध्वगमन निमित्त श्री मनमोहन पार्श्वनाथ श्री संघ में आचार्य श्री हर्षतिलक सूरीजी की निश्रा में नौ दिवसीय जिनभक्ति का आयोजन किया गया।

हुबली में आनंदभ्युदय चार्तुमास हेतु युगलबंधु जैनाचार्य का प्रवेश जोरदार रहा

हुबली -जैनाचार्य वाणी के जादूगर पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री जितरत्न सागरसूरीजी महाराज आयंबिल तप की 271 वीं ओलीजी आराधक जैनाचार्य श्री चन्द्ररत्नसागरसूरीजी म.सा. मुनिश्रीचैत्यरत्न सागर जी मुनिश्री ज्ञानेशरत्नसागरजी मुनिश्री पवित्ररत्न सागरजी म.सा. मुनि श्री गोयम सागरजी म.सा. के साथ साध्वीवर्या श्री भव्यपूर्णा श्रीआदि ठाणा की अमृत निश्रा में पूज्यपाद श्री आगमोद्धारक श्री सागरजी महाराज के सार्थ अर्धशताब्दी महोत्सव का आयोजन हुबली के श्री जैन मरुधर संघ के लिये स्मरणीय बन गया। दिनांक 30 जुलाई को आचार निष्ठा के सागर पर मुनिश्री चैत्यरत्न सागरजी के प्रवचन हुए। 31 जुलाई को ममतामयी मां पर महाराजा श्रीकृष्ण पर जाहिर प्रवचन हुए। दिनांक 1 अगस्त को संयम निष्ठा के धारक सागरजी पर मुनिश्री अर्हम् रत्नसागरजी के प्रवचन हुए। दिनांक 2 अगस्त को ज्ञाननिष्ठा के सागरजी पर मुनिश्री ज्ञानेशरत्न सागरजी ने भावभरा प्रवचन दिया। दिनांक 3 अगस्त को वैराग्यनिष्टा के सागरजी पर आयंबिल तपाराधक आचार्य श्री चन्द्र रत्नसागर सूरीजी के जोश भरे प्रवचन हुए। दिनांक 4 अगस्त को भव्य गुणानु वाद सभा में वाणी के जादूगर आचार्य श्री जितरत्नसागरजी के मार्मिक प्रवचन के साथ रंगोली का आयोजन,आगम प्रदर्शनी तथा 45 आगम महापूजन जो तीन दिन तक चला उसका अंतिम दिन था इसके बाद दिनांक 9 से 11 अगस्त तक श्री नेमीनाथ प्रभु के जन्म कल्याणक पर अट्ठम तप का आयोजन किया गया। वाणी के जादूगर श्री जितरत्नसागर सूरीजी ने ''**हम दो हमारे सौ**'' विषय पर जाहिर प्रवचन दिनांक 14 अगस्त को दिये। प्रवचन में बड़ी संख्या में धर्मिष्ठों की उपस्थिति रही।

विदेश में विराजमान होनेवाली जिनप्रतिमा की अंजनशलाका अभिषेक

मुंबई-अंतराष्ट्रीय जैन विधिकारक शासनरत्न श्री मनोजकुमार बाबुमलजी हरण के मार्गदर्शन एवं प्रेरणा से अमेरिका ब्रिटेन, पेरिस, फ्रांस, स्वीजीलैंड, आस्ट्रेलिया में प्रतिष्ठित होनेवाली जिन प्रतिमाओं की अंजनशलाका एवं अभिषेक का भव्य आयोजन श्री चंद्रप्रभ स्वामी जैन तपागच्छ श्वेतांबर श्री संघ अंधेरी (प.) में किया गया। दिनांक 5 अगस्त से आरंभ हुए महोत्सव में दिनांक 8 अगस्त को अंजनशलाका के साथ महोत्सव की पूर्णाहुति हुई। पूज्य आचार्य भगवंत श्री महेन्द्रसागरसूरीजी महाराजा आदि ठाणा की निश्रा में यह आयोजन सम्पन्न हुआ।

मुंबई में विशाल रथयात्रा का आयोजन होगा

मुंबई- मुंबई के समस्त तपागच्छीय संघों और समस्त संघ के आराधकों की उपस्थिति के साथ आगम धर्मशास्त्र का अनुगमन करती एक विशाल रथयात्रा का आयोजन मुंबई में होने जा रहा है। दिनांक 29 सिंतबर को इस रथयात्रा के आयोजन को अंतिम रुप दिया जा रहा है।

अहमदाबाद में भव्य रथयात्रा का आयोजन

अहमदाबाद-जिनाज्ञा युवा ट्रस्ट के द्वारा अहमदाबाद में 10 वीं भव्य रथयात्रा का आयोजन 25 अगस्त को सम्पन्न हुआ। अहमदाबाद के 55 जिन मंदिर एवं 6000 से अधिक प्रतिमा की प्रदक्षिणा रथयात्रा से हुई। पूज्य साध्वी वर्या श्री मैत्रीदर्शनाश्रीजी म.सा. की प्रेरणा से आयोजित भव्य रथयात्रा श्री जगवल्लभ पार्श्वनाथ जिनालय दीलिफ रोड़से आरंभ हुई। यात्रा की तैयारी के लिये चढ़ावे 11 अगस्त को हुए।

मंडार में गुरु मंदिर का निर्माण होगा

मंडार- पूज्य गच्छाधिपति आचार्यदेव श्री रामचंद्रसूरीजी महाराजा डेहलावाला की पुण्यस्मृति में गुरु मंदिर का निर्माण किया जायेगा। पूज्य गच्छाधिपति श्री अभयदेवसूरीजी महाराजा एवं आचार्यदेव श्री मोक्षरत्न सूरीजी महाराज आदि ठाणा की मंगलकारी निश्रा में दिनांक 14 अगस्त को गुरु मंदिर के लिये भूमिपूजन- खनन विधि एवं शिलान्यास का आयोजन सम्पन्न हुआ। स्मरणीय है पूज्यपाद गच्छाधिपति का चार्तुमास मंडार में हो रहा है।

सैलाना में 45 लाख महामंत्र का जाप

सैलाना- यहां चातुमार्सिक आराधना के लिये विराजमान साध्वीवर्या श्री शुद्धिप्रसन्नाश्रीजी म.सा. की निश्रा में 45 लाख महामंत्र का जाप दिनांक 15 अगस्त से आरंभ हुआ जिसकी पूर्णाहुति का लक्ष्य दिनांक 15 अक्टूबर रखा गया है।

आगमोद्धारकश्री की रजत प्रतिमा का निर्माण पूज्य जैनाचार्यश्री अशोकसागरसूरीजी महाराजा की प्रेरणा से हुआ

※ 99 यात्रा का आयोजन होगा।

पालीताना- 126 से अधिक शिष्य-प्रशिष्य संयमी आत्मन् की सम्पत्ति के मालिक108 फीट श्री आदिनाथ दादा की प्रतिमा के स्वप्न दृष्टा, जम्बुद्वीप के मार्गदर्शक सागर समुदाय के वरिष्ठ जैनाचार्य श्री अशोक सागर सूरीजी महाराज आदि विशाल संख्या में साधु साध्वीवृंद की अमृत निश्रा में पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्य भगवंत श्री आनंद सागर सूरीश्वरजी महाराजा के 150 वीं जन्म जयंति पर पालीताना आगम मंदिर में पालीताना में विराजित समस्त गुरु भगवंतों, साधु-साध्वी भगवंतों की अमृत निश्रा में आयोजित कार्यक्रम में गुरुदेव की रजत प्रतिमा का निर्माण किया गया। आगमोद्धारक उपनिर्षद् पर प्रवचन हुए। 54 गुरु प्रतिमा अवतरण विधान हुआ।150 वीं जन्म जयंति पर स्थापत्य खनन विधि हुई बाद में सभी गुरु भगवंतों की उपस्थिति में गुरु गुण कीर्तन का आयोजन किया गया। संध्या को तलेटी में महापूजन का आयोजन हुआ। पूज्य आचार्य भगवंत श्री सागरचंदसागरसूरीजी का चार्तुमास आगम मंदिर में चल रहा है। आयोजन में आपश्री की विशेष प्रेरणा रही। आपकी निश्रा में 99 यात्रा का आयोजन पालीताना में दिनांक 18 नवंबर से आरम्भ होगा। 99 यात्रा की पूर्णाहुति 6 जनवरी 2025 को होगी।साध्वीवर्या श्री विहितमाला श्रीजी म.सा. की मुख्य प्रेरणा है। आयोजन जंबुद्वीप से संचालित होगा। आयोजक संघवी शिल्पा बहन दिनेशचंद्र आदि वडेया परिवार है।

बंधु त्रिपुटी आचार्य भगवंत के भाई मुनिश्री सत्वचंद्रसागरजी म.सा. का देवलोक श्री सिद्धक्षेत्र पालीताना में हुआ

पालीताना- पूज्य बंधु त्रिपुरी आचार्य देव श्री अशोकसागरसूरीजी महाराज, श्री जिनचंद्रसूरीजी महाराज, आचार्य श्री हेमचंद्रसूरीजी महाराज के भाई एवं आचार्य श्री सागरचंद्रसागर सूरीजी महाराज के पिता मुनिश्री सत्य-चंद्रसागरजी म.सा. का देवलोक गमन दिनांक 1 अगस्त को पालीताना में हो गया। स्मरण रहे आपका चार्तुमास पुत्र आचार्यश्री सागरचंद्रसागरजी महाराज के साथ आगम मंदिर पालीताना से हो रहा था। पूज्य मुनिश्री की पालकी दिनांक 2 अगस्त को निकाली गई। शताधिक साधु-साध्वी भगवंतों की उपस्थिति रही। आगमोद्धारक परिवार की भावभरी आदरांजलि।

※ जगत के सब पदार्थों की अपेक्षा जिस पर सर्वोत्तम प्रीति है, ऐसी यह देह भी जब दुःख का हेतु है, तो फिर अन्य पदार्थ में मुख के हेतु की क्या कल्पना करना ?

श्री गिरनार में चार्तुमास एवं उपधान तप

गिरनार- श्री गिरनार महातीर्थ में पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री जिनेशरत्न सूरीश्वरजी महाराजा की निश्रा मे उपधान तप का प्रथम मुर्हूत दिनांक 13 अक्टूबर तथा द्वितीय प्रवेश 15 अक्टूबर को होगा। तपस्वियों की शोभायात्रा 29 नवंबर को तथा माल परिधान 30 नवंबर को होगा। आयोजक गांधी परिवार है।

केशरवाड़ी में उपधान तप

चैन्नई- शत्रुंजय अवतार स्वरुप श्री केशरवाड़ी तीर्थ में पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री विजय उदयप्रभ सूरीजी महाराज आदि ठाणा की निश्रा में भव्य उपधान तप का आयोजन होगा। उपधान तप की आराधना दिनांक 20 अक्टूबर से होगी तथा मोक्षमाल 8 दिसंबर को होगी।

सोमवारपेठ पूना में पंचान्हिका महोत्सव मना

पूना- श्री राजस्थानी जैन श्वेतांबर श्री संघ में पूज्य आचार्यदेव श्री वैराग्यरत्नसागर सूरीजी म.सा. एवं साध्वी श्री दिव्यदर्शनाश्री की निश्रा में पूज्य मुनिराजश्री ऋषभरत्नसागरजी म.सा. के 500 आयंबिल निमित्त पंचान्हिका महोत्सव मनाया गया। दिनांक 12 से 16 अगस्त तक हुए महोत्सव में गिरनार की भावयात्रा, शुक्रस्तव,अभिषेक,सामुहिक आयंबिल तप वंदनावली, शासन वंदना, झंडा वंदन एवं पूज्य मुनिश्री के पगलिये, पारणा, प्रवचन हुए। तप अनुमोदना का आयोजन भी हुआ।

※ यदि सफलता का मार्ग समझ में आ जाये तो इस मनुष्य देह का एक समय भी सर्वोत्कृष्ट चिंतामणि है, इसमें संशय नहीं।

वर्धमान तपाराधिक साध्वीवर्या श्रीपद्मलताश्रीजी का देवलोक गमन हुआ

इन्दौर- श्री मंत्रेश्वर जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ, अशोकनगर में चातुमार्सिक आराधना के लिये विराजमान सागर समुदाय की वरिष्ठ साध्वीवर्या श्री पद्मलता श्रीजी म.सा. का देवलोकगमन दिनांक 23 अगस्त को प्रातःकाल हो गया। आप पूज्य साध्वीवर्या श्री हेमप्रभाश्रीजी म.सा. की सुशिष्या थी। चार्तुमास पूर्व जब आपश्री सांवेर में विराजित थे तथा बाद में उज्जैन आगमन पर आपश्री के दर्शन वंदन का सौभाग्य आगमोद्धारक सम्पादक को मिला था, वैसे लम्बे समय से आपश्री का परिचय रहा है। स्मरण रहे आप उज्जैन के कोचर परिवार से थी। दिनांक 23 अगस्त को आपकी ढोल इन्दौर अशोकनगर से उठी उसके बाद अग्नि संस्कार हुआ। आगमोद्धारक परिवार की भावभरी वंदना।

श्री सिद्धाचल सजावट स्पर्द्धा

सूरत- श्री ॐकारसूरि आराधना भवन वेसू सरत में विराजित आचार्य भगवंत बंधु बेलड़ी श्री हेमचन्द्रसागर सूरीश्वरजी महाराज आदि ठाणा की निश्रा में श्री आदिनाथ परमात्मा की 500 वीं ध्वजा निमित्त श्री सजावट स्पर्द्धा रखी गई है। सम्पूर्ण सिद्धाचल तीर्थ अथवा तो 9 टूंकी अलग-अलग सजावट की गई। दिनांक 25 अगस्त को प्रातः 6.30 बजे यह स्पर्द्धा रखी गई थी।

कल्याण में गच्छाधिपति श्री जयानंदसूरीश्वरजीम.सा. की दीक्षा तिथि मनाई

कल्याण- राजस्थान जैन संघ के तत्वावधान में आयोजित चार्तुमार्सिक आराधना के अंतर्गत श्रावकशुक्ल चर्तुदशी 18 अगस्त को पूज्यपाद गच्छाधिपति भगवंत श्रीमद्‌विजय जयानंद सूरीजी म.सा. के संयम जीवन के 47 वर्ष की पुर्णाहुति एवं 48 वें वर्ष में प्रवेश अवसर पर अत्यंत अनुमोदनीय आयोजन सम्पन्न हुआ। अनुमोदना सभा के प्रारंभ में मुनिराज श्री अक्षय विजयजी, वाचक विजयजी, क्षमा विजयजी, उत्सवविजयजी, समर्पण विजयजी आदि ने गुरुदेव के सद्‌गुण मय-सदाचारमय-सच्चारित्रामय जीवन प्रसंगों द्वारा सकल संघ को गुरुदेव के वैशिष्ट्य व्यक्तित्व का दर्शन करवाया। लगभग 11.30 बजे पूज्य पाद गुरुदेवश्री का सभा में पदार्पण हुआ।गुरुदेव ने अपने सांसारिकअवस्था का एक क्रोध की पराकाष्ठा का प्रसंग फरमाया जिसे श्रवणकर श्रोताओं की आंखों से अश्रुधारा छलक आयी। संघ समक्ष अपने पूर्व जीवन के दोषों की बात बताने जैसा दुष्कर कार्य कोई पुण्य आत्मा ही कर सकती है। आयंबिल पौषध की आराधना उल्लास के साथ सम्पन्न हुई।

ऐसे भी चार्तुमास हो सकता है....

सूरत महानगर में इस वर्ष चल रहे अनेक चार्तुमासों में से 2 महात्माओं पूज्य पन्यास श्री जिनप्रेमविजयजी महाराज साहेब एवं पूज्य मुनिराज श्री जिनागम रत्न विजयजी महाराज साहेब के चार्तुमास समस्त जिनशासन के लिये वर्तमान की परिस्थिति में एक आदर्श है।

✻ इन दोनों चार्तुमास में मेहमानों के लिये चौका या रसोड़ा नहीं है।

✻ इन दोनों चार्तुमास में 10-10 से अधिक महात्मा है फिर भी साधु भगवंत द्वारा पीने के लिये उबला हुआ जल भी घर-घर से निर्दोष वोहरकर लाया जाता है, तो निर्दोष गोचरी के लिये तो फिर क्या कहना।

✻ इन दोनों साधु भगवंतों के चार्तुमास के लिये कोई फण्ड शेयरिंग नहीं है अर्थात ये दोनों ''जीरो कॉस्ट चार्तुमास'' है।

✻ इन दोनों साधु भगवंत के चार्तुमास में तपस्या करने वाले श्रावक-श्राविकाएं अपना बियासना/पारणा घर पर ही करते हैं।

✻ इन दोनों साधु भगवंत सहित इनके शिष्य भी निरंतर रोजाना 12 से 15 घंटे अपने स्वाध्याय में लगे रहते हैं।

✻ इन दोनों साधुओं द्वारा ''श्री उपमिति भव प्रपंच कथा'' जैसे महान ग्रंथ का जो वैराग्य वाही ज्ञान संघ को दिया जा रहा है, उससे सूरत की सूरत ही बदल रही है।

✻ अपने उपाश्रय में आनेवाले लोगों के लिये मोबाईल फोन के उपयोग का पूर्ण त्याग करवा दिया है, प्रवचन में मोबाईल की रिंग बजने पर अगले दिन आयंबिल के साथ मिच्छामि दुक्कड़म की 10 माला की आलोचना है।

✻ इन दोनों साधु भगवंतों की प्रेरणा से सूरत के हजारों युवा जिनशासन की सेवा की भावना से तैयार हो रहे हैं।

✻ ये दोनों साधु भगवंत प्रवचन में महिलाओं की तरफदेखते भी नहीं है और साध्वीजी भगवंत के परिचय से भी दूर रहते हैं। प्रवचन के अतिरिक्त उपाश्रय के गेट में भी साध्वीजी और श्राविकाओं का प्रवेश वर्जित है चाहे वो साधु भगवंतों के परिजन ही क्यों न हो।

✻ ये दोनों साधु भगवंत अपने शिष्यों को स्वयं वाचना देते है, शिष्य भी अनुशासन में रहते हैं।

✻ ये दोनों साधु भगवंत जुग-जुग अमर रहे क्योंकि इन्हें दिन-रात पूज्य युगप्रधान चन्द्रशेखार विजयजी महाराज साहब की तरह केवल शासन की ही चिंता रहती है।

इन्दौर में आगमोद्धारकश्री का जन्म महोत्सव सामुहिक रुप मनाया गया

इन्दौर- पूज्यपाद आगमोद्धारक श्री आनंदसागरसूरीजी महाराजा श्री सागरजी महाराज का 150 वां जन्म दिवस त्रिदिवसीय महोत्सव के साथ सामूहिक रुप से 150 वीं स्वर्ण महोत्सव समिति के तत्वावधान में मनाया गया। महोत्सव का पूज्यपाद आचार्यदेवश्री मुक्तिसागरसूरीजी, श्री कुलबोधि सूरीजी, श्री अंचलमुक्तिसागरसूरीजी तथा गणिवर्य श्री पद्मचंदसागरजी म.सा. आदि ठाणा के साथ नगर में विराजित समस्त साध्वीमंडल की उपस्थिति रही। दिनांक 2 अगस्त को शहर के सभी महिला मंडल के द्वारा सामुहिक रुप से चौबीसी गान का आयोजन हुआ। 3 अगस्त को इन्दौर के समस्त श्री संघों में गुणानुवाद सभा तथा आयंबिल का आयोजन हुआ। 4 अगस्त को पूज्यपाद श्री आगमोद्धारक श्रीजी की भव्य गुणानुवाद सभा में 150 लक्की ड्रा, 1500 दीपक से गुरुदेवश्री की आरती का आयोजन हुआ। इसमें इन्दौर के समस्त श्रीसंघों की उपस्थिति रही। सकल श्रीसंघ का स्वामी वात्सल्य हुआ। पूज्यपाद श्रीजैनाचार्य श्री मुक्ति सागर सूरीजी एवं आचार्य देव श्री अंचल मुक्ति सागर सूरीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास श्री अर्बुज गिरी जैन श्वेतांबर उपाश्रय इन्दौर में हो रहा है 9 से 11 अगस्त तक श्रीसीमंधरस्वामी जी के अट्ठम तप का आयोजन भी हुआ।✻ **इन्दौर-** 36 लाख नवकार महामंत्र लेखन का आयोजन इन्दौर में 28 जुलाई को किया गया। 3000 धर्मिष्ठों के द्वारा प्रतिदिन 12 नवकार लिखकर इस महानुष्ठान को 100 दिन में पूर्ण किया जायेगा।

वेसु सूरत में श्री सिद्धाचल तप के सामूहिक पच्चखाण दिये गये

सूरत- बंधु बेलड़ी पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री जिन-हेमचन्द्रसागर सूरीजी महाराज, आचार्य श्री राजहंस सूरीजी, आचार्य श्री निर्मलचंद्रसूरीजी आचार्य श्री विरागचंद्रसागरसूरीजी, उपाध्याय श्री पुंडरीक विजयजी, गणिश्री आनंदचंद्रसागरजी, गणि श्री कल्पचंद्रसागरजी म.सा.आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी भगवंत की निश्रा में सूरत के 8 से अधिक श्रीसंघों एक साथ श्री सिद्धाचल महातप के सामूहिक पच्चखाण के साथ तप आरंभ हुआ। स्मरण रहे श्री सिद्धाचल महातीर्थ पालीताना में दादा श्री आदिनाथ प्रभु की 400 वीं ध्वजा के पूर्व सिद्धाचल तप का शुभारंभ हुआ है।

श्रीआगमोद्धारकश्री की गुणानुवाद सभा हुई

उज्जैन- सागर समुदाय की वरिष्ठ साध्वीवर्या श्री शशिप्रभा श्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी श्री चारुधर्मा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में पूज्यपाद आगमोद्धारक श्री आनंद सागर सूरीजी महाराजा (पूज्यश्री सागरजी महाराजा) की 150 वीं जन्म जयंति पर यादगार गुरु गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया।श्री श्राध्दविधि ग्रंन्थ के साथ श्रीविक्रमा दित्य चरित्र पर प्रतिदिन प्रवचन हो रहे है।

आयंबिल तप आराधना हुई

पिपल्यामंडी-श्री विमलनाथ जैन श्वेतांबर मंदिर परिसर उपाश्रय में विराजित पूज्य साध्वीवर्याश्री डॉ.श्रुतपूर्णा श्रीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में पूज्य सागरजी महाराजा के 150 वें जन्म दिवस पर 150 आयंबिल, 150 सामायिक, 150 नवकार माला जाप का आयोजन हुआ। माँ से महात्मा तक का सफर विषय पर विशेष प्रवचन हुए।

श्री केशरियाधाम में उपधान तप आराधना होगी

गुलाबपुरा-श्री केशरिया धाम 24 जिनालय विजयनगर में आचार्यदेवश्री निपुणरत्नसूरीजी महाराज आदि ठाणा-6 की निश्रा में श्रावक से श्रमण बनने की उत्कृष्ट तपस्या उपधान तप का आयोजन होने जा रहा है। उपधान तप का शुभरंभ प्रथम मुर्हूत दिनांक 19 अक्टूबर से होगा, द्वितीय मुर्हूत 21 अक्टूबर को होगा। उपधान तप की मालारोपण विधि 6 दिसंबर को होगी।

रतलाम में प्रथम आगम आचारंग सूत्र पर व्याख्यान

रतलाम-पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री नयचंद्रसागर सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा का यादगार चार्तुमास रतलाम में चल रहा है। पूज्यश्री के सुशिष्य शतावधानी गणिवर्य श्री अजितचंद्रसागरजी और पूज्यश्री के द्वारा प्रथम आगम आचारंग सूत्र पर प्रवचन होने जा रहा है। पूज्य गण्विर्य श्री अजितचंद्रसागरजी म.सा. को 23 आगम के 27000 हजार श्लोक कंठस्थ है। प्रवचन में प्रतिदिन बड़ी संख्या में आ रहे है।

हमारे तीज-त्यौहार

1- भादवा सुदी-30 अमावस्या	मंगलवार	3-9-2024	कल्पधर-कल्पसूत्र वाचन
2- भादवा सुदी-1	बुधवार	4-9-2024	वीर जन्म वाचन स्वप्न दर्शन
3- भादवा सुदी-2	गुरुवार	5-9-2024	तेलाघर गणधर वाद
4- भादवा सुदी-4	शनिवार	7-9-2024	संवत्सरी महापर्व क्षमापना दिवस, बारसा सूत्र वाचन, महाप्रतिक्रमण
5- भादवा सुदी-11	शनिवार	14-9-2024	जगत गुरु हीरविजयसूरीजी म.सा. स्वर्गवास दिन विक्रम संवत् 1652
6- भादवा सुदी-15	बुधवार	18-9-2024	खण्डग्रास ग्रहण
7- आसोज वदी-6	सोमवार	23-9-2024	रोहिणी
8- आसोज वदी-14	मंगलवार	1-10-2024	पूज्यपाद गच्छाधिपति श्री दौलतसागर सूरीजी का 104 वां जन्म दिवस

पंचक :- **आरम्भः-**भादवा सुदी-13, सोमवार, दिनांक 16-9-2024, समय-05.45 बजे से
समाप्तः-आसोज वदी-3, शुक्रवार, दिनांक 20-9-2024, समय-05.15 बजे तक

पुष्प नक्षत्र :- **आरम्भः-**आसोज वदी-9 गुरुवार, दिनांक 26-9-2024, समय-23.15 बजे से
समाप्तः-आसोज वदी-10 शुक्रवार, दिनांक 27-9-2024, समय-25.21 बजे तक

हम आपके है और ''आगमोद्धारक मासिक'' आपकी पत्रिका है, आपकी सेवा में समर्पित है। पूज्य गुरुदेवों के वात्सल्य भाव परिपेक्ष्य में, हम सभी गुरु भगवंतों, साधु-साध्वी भगवंतों से एवं चतुर्विध श्रीसंघ से क्षमापर्व पर अपनी भूलों और अवहेलनाओं के लिये हृदय से क्षमाप्रार्थी है।

-आगमोद्धारक परिवार

सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है

जैन जगत की प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध मासिक पत्रिका आगमोद्धारक के सदस्यता अभियान के लिये सारे देश में प्रतिनिधियों की नियुक्ति की जा रही है। सक्रिय युवा भाई-बहन जो जिनशासन के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी सेवा देना चाहते है वे तुरन्त निम्न पते पर संपर्क करें।

प्रतिनिधि को कम से कम 25 सदस्य बनाना आवश्यक है। आपकी सहमति प्राप्त होने पर रसीद कट्टे एवं प्रचार-प्रसार सामग्री आपको भेजी जायेगी। सम्पादक से सम्पर्क करें।

आगमोद्धारक का विशेषांक
अक्टूबर 2024 का अंक
आसोज नवपद ओली एवं दीपावली विशेषांक का रहेगा, आपकी रचनाएं भेजिए।

सादर आमंत्रण

❊ पूज्य साधु-साध्वीजी से विनंती है कि आपके चार्तुमास एवं सभी धार्मिक कार्यक्रमों की जानकारी एवं धार्मिक महोत्सव की सूचना आगमोद्धारक तक पहुंचाने का कष्ट करें, ताकि अंक आपको लगातार भेजा जा सके तथा समाचार प्रकाशित किया जा सकें।

❊ आगमोद्धारक के लिये आपकी रचनाएं भी प्रकाशन के लिये निरंतर भेजते रहे। आपकी रचना से हम प्रोत्साहित होंगे।

❊ पत्रिका को और अच्छा बनाने के लिये आपके सुझाव, मार्गदर्शन भी भेजते रहे ताकि आगमोद्धारक की गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।

❊ अंक आपके तक नियमित रुप से नवीन स्वरुप के साथ 10 तारीख तक पहुंचे ऐसा हमारा प्रयास रहता है, अंक अप्राप्ति पर शीघ्र सूचित करें।

- सम्पादक